

सच, संघर्ष और सादगी
से भरी

उड़ान

एक परिंदे की.....



सोमिल जैन “सोमू”

बुक्स क्लिनिक

वेबसाइट:- www.booksclinic.com

This book has been published with all reasonable efforts taken to make the material error-free after the consent of the author.

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-93-88797-05-4

प्रकाशक: बुक्स क्लिनिक

पहला संस्करण 2019

मूल्य: 140 | \$7

कॉपीराइट: सोमिल जैन “सोमू”

उपन्यास

Print in India

पंडित टोडरमल स्मारक के लिए,
जिसने मुझे काबिल बनाया।
पंडित जिन कुमार जी शास्त्री के लिए,
जिन्होंने मेरी प्रतिभा को दिशा दी।
मेरे परम मित्र अनिकेत के लिए,
जिसने इस सफ़र में हमेशा मेरा साथ दिया।

परिंदे डरने लगें, अगर परवाज से।
फिर उन्हें कौन रूबरू कराएगा आज से।

“सोमू”

वो जो इस सफ़र में जरूरी हैं



ये महज एक किताब नहीं है। ये एक सपना था जो अब हकीकत बनकर सामने आया है। कई रातों से, कई रातों तक के सफ़र में, कई अनकही बातों से निकली ये कहानी, शायद मेरी उड़ान को उड़ान दे। शब्दों को किताब की शकल मिलना मतलब मेरे सपने का सच होना है।

सर्वप्रथम इस किताब को छपने से पहले ही सराहना देने वाले मेरे गुरु, बड़े भैया पीयूष शास्त्री को जिन्होंने मुझे नोवेल्स पढ़ने की रुचि लगाई और मुझे वाकिफ कराया कि मेरी रुचि साहित्य में है। हमारे बड़े सर गुप्ता जी का धन्यवाद जिन्होंने मुझे हिंदी का पहला चांटा लगाया था और कहानी कहने का और लिखने का अंदाज़ मैंने उन्हीं से सीखा था।

ब्रम्हानंद जी, जिनका साथ हमेशा मेरे साथ रहा।

मुझे हॉस्टल में रहते हुए दस साल हो गए हैं। इन दस सालों के सफ़र में हमेशा मेरे साथ रहे जितेंद्र जैन, नयन जैन, और हमारे चायमित्र शाश्वत जैन।

अमन जैन, सपन जैन, विनीत जैन, देवांश सेठ, पीयूष मंडावरा, पीयूष टंडा, प्रतीक विदिशा, अनुभव जैन, सन्मति जैन और पूरी आत्मन क्लास का दिल से शुक्रिया!

अभिषेक जैन, जिसकी बात की शुरुआत इसी किताब के जिक्र से होती थी।

धन्यवाद संजय जी बड़ामलहरा जिन्होंने अपना अमूल्य समय मुझे प्रदान किया।

संयम शाह, नितिन जैन, अंकुर जैन, एकांश जैन जिनकी मदद से नावेल लिखने का मैं अदना सा साहस कर पाया।

मैं शुक्रगुजार हूँ उन तमाम लोगों का जिन्होंने मेरे इस सफर में मेरा साथ दिया। जिनके बिना मेरी किताब डायरी में ही सिमट कर रह जाती।

ये किताब कोई फिलॉसफी नहीं है न कोई ज्ञान की बात। बस कुछ देर तक इंटरनेट से दूर रहने का बहाना है। इसे पढ़ते वक्त आप रेडियोधर्मी किरणों से शत प्रतिशत दूर रहेंगे। आस-पास के किस्सों से उठायी ये कहानी है जो शायद जानी पहचानी है। आपको जरूर पसंद आएगी।

इत्यलम्
"सोमू"



तेरे शहर में

5 फ़रवरी, 2020

मैं दुबई के लिए उड़ान भर चुका था। मुझे टेकऑफ़ करने के लिए मेरा पूरा परिवार एयरपोर्ट पर मौजूद था। अपनी आँखों से देखे हुए मेरे कुछ सपनों में से एक सपना पूरा हो रहा था। सपना सिंपल था। “विदेश सिर्फ़ घूमना है वहाँ रहना नहीं है”। मैं बहुत खुश था मगर थोड़ा नरवसया रहा था क्योंकि पहली बार ऐरोप्लेन में बैठा था। कभी जमीन को इतनी ऊँचाई से नहीं देखा था। मजा इसलिए आ रहा था क्योंकि विंडो वाली शीट मिली थी। हेडफ़ोन मेरे पास में पहले से थे। पहले मैं दुबई नहीं जा रहा था मगर लाइब्रेरी के काम से जाना पड़ रहा था और खुशकिस्मती ये रही कि मेरे मुँह बोले भैया-भाभी दुबई में सालों से अपना डेरा जमाये हैं। वे हमेशा मुझसे कहते थे “यहाँ सुकून है, शांति है, धर्म है, धन है ब्ला..ब्ला..ब्ला..”

मैंने भी वही किया जो टिपिकल इंडियंस करते हैं और आजकल का ट्रेंड भी है। “कुछ भी कर फेसबुक पर डाल” की नीति अपनाते हुए पॉकेट से अपना बेचलर जीवनसाथी निकाला और सेल्फी मोड में विभिन्न प्रकार के एंगल से फोटो क्लिक की। फिर उसके बाद भी वही किया जो सब करते हैं। फेसबुक अकाउंट पर अवनी को टेग करते हुए कैप्शन में “प्रथम हवाई जहाज यात्रा” टाइप करके पोस्ट कर दी।

सोमिल जैन “सोमू”।1

“Please switch off your phone sir” एयर होस्टेस ने पर्सनली मेरे पास आकर कहा। मैंने भी एक हल्की सी स्माइल पास करते हुए फ़ोन स्विच ऑफ़ किया। मैंने सुबह-सुबह ही जयपुर से दुबई के लिए उड़ान भरी थी। वीजा मिलना मुश्किल नहीं था। मेरे बगल में विराजमान फिरंगी टाइप आंटी से मैंने बात करनी चाही।

“Hello” मैंने शुरुआत की।

“Hello” उन्होंने मरी सी आवाज में कहा।

“I am rohit asati..... I am a writer” मैंने इम्प्रेसन जमाने के लिए इंग्लिश झाड़ी।

“Good”

“Where are you going?”

“Dubai”

“Why”

उन्होंने मुझे घूरकर देखा। “ज्यादा चेंपो मत” उनका क्लियर जबाब था। मैंने नज़रे झुका लीं। मैं इन तीन घंटों को बर्बाद नहीं करना चाहता था। इसलिए अपनी डायरी निकाली और लिखना शुरू किया।

तीन घंटे तक मेरे हाथ बस लिखे जा रहे थे। जो मेरे मन में आ रहा था बस लिखे जा रहा था। तभी अनाउंस हुआ। फ्लाइट दो मिनिट में दुबई लैंड करने वाली थी।

“कौनसी बुक लिखी है” फ्लाइट लैंड होने के बाद आंटी ने जाते-जाते मुझसे पूछा।

“लिख रहा हूँ अभी पब्लिश नहीं हुयी” मैंने कहा।

वो मुस्कराई। उन्होंने अपने हैंडबैग से एक बुक निकालकर मेरे हाँथ में थमा दी। मैं कुछ बोलता उससे पहले वो जा चुकी थी। “कमला दास झुनझुन वाला” यही नाम था उस किताब की

राइटर का। बुक के पीछे बनी उनकी तस्वीर देखकर मेरे मुंह से निकला “अबे ये तो इंडियन हैं”

मैं चाहता तो भैया-भाभी के घर भी रुक सकता था मगर जब फ्री फ़ोकट में दुबई की नामचीन होटल का न्योता मिला है तो काहे छोड़ा जाए। “मुफ्त का चन्दन घिस मेरे नंदन” वाली कहावत को याद करते हुए अपना लगेज लिए एयरपोर्ट से बाहर आ गया।

“Mr. rohit asati” मेरे नाम का प्लग कार्ड लिए एक महानुभाव को मैंने अपनी तरफ आते देखा।

मुझे अपने करीब आते देख उन महानुभाव ने अपनी जुबान खोली। “दुबई मा तमारो स्वागत छे”

“धन्यवाद” मैंने मुस्कुराकर कहा। महानुभाव टेक्सी ड्राइवर थे। उन्होंने मेरे लगेज को टेक्सी की डिग्गी में डाला और टेक्सी तेज रफ़्तार से अटलांटिस होटल को रवाना हुयी।



व्यस्त दिन व्यतीत हुआ। मैं भैया-भाभी से मिल चुका था। बहुत जरूरी मीटिंग्स भी अटेंड हो गईं थी। होटल के रूम में पहुँचते ही मेरे डेस्क पर कमलादास की बुक पड़ी थी। मैंने अपनी डायरी को हर जगह खोजा मगर डायरी कहीं नज़र नहीं आई।

मैंने मोबाइल का डेटा ऑन किया। फेसबुक के इनबॉक्स में अवनी के मेसेज पड़े थे। मुझे सिर्फ एक मेसेज सुकून दे रहा था। “तुम्हारी डायरी मेरे पास है”

“तुम्हारे पास कैसे आई मेरी डायरी” मैंने मेसेज टाइप किया।

“मिलकर बताउंगी”

सोमिल जैन “सोमू”।3

“कब”

“कल.....बोम्बे चोपाटी पर”

“ये कहाँ है”

“लोकेशन भेज रही हूँ मैं” अवनी ने मुझे लोकेशन सेंड की।
मुझे नींद आ रही थी। मैं ऑफलाइन हो गया। अवनी के
पास मेरी डायरी थी। पब्लिशर की बेटी है डायरी पढ़े बिना नहीं
रहेगी। इसी उधेड़बुन में मेरी नींद लग गई।



कैसी जिन्दगी... शायद, शायद और शायद....

11 दिसंबर, 2015

जाड़े का समय, कड़ाके की ठंड, लालिमायुक्त अनंत आकाश में सूर्यास्त के कुछ समय पहले की लालिमा शहर के चारों ओर बिखरी थी। लोग मेहनत मजदूरी करके अपने-अपने आसरे को पधार रहे थे। ट्रेफिक का घमासान शोर, जो ये अहसास दिला रहा था कि ये शहर है। किसी न किसी के इंतज़ार में कोई न कोई बेचैनी से अपनों की राह देख रहा था। रोडवेज की बसें अपनी रफ्तार पकड़ चुकी थी। शाम का वही सूरज जो सुबह आग की तरह जल रहा था अब अस्त हो चला था। सड़क के एक तरफ शादी के नगाड़े बज रहे थे तो दूसरी तरफ मातम छाया था। कहीं गाजे बाजे की आवाज इतनी तेज थी कि कान फटे जा रहे थे। तो कहीं माताओं बहनों के रोने से आकाश भी डरा हुआ था।

बात अजीब जरूर है मगर असम्भव नहीं, किसी की जिन्दगी में खुशी है तो किसी की जिन्दगी में गम की कमी नहीं। किसी की लाइफ मजे में कट रही है तो कोई जैसे-तैसे करके काट रहा है। किसी की लाइफ बनी पड़ी है तो किसी की लगी पड़ी है। किसी की लाइफ में वो सब है जिसके होने पर लोग अमीर कहलाते हैं। मगर कहीं किसी गरीब आदमी के आज शाम के

खाने के बाद पता नहीं, कल का सूरज उसके लिए उगेगा या नहीं मगर ताज्जुब की बात ये है कि ये सोचकर भी हमारे देश का सारा भिखारी मंडल रात में फुटपाथ पर चैन की नींद ले रहा है।

खैर, सूरज तो उगेगा.... मगर ये तो ऊपर वाला ही जानता है कि फुटपाथ पर पड़े लोगों का सूरज उगेगा या नहीं। सब अपनी अपनी लाइफ में फिट हैं, खुश हैं। इस बेबाक दुनिया के लाचारी भरे नाटक में अपना किरदार बखूबी निभा रहे हैं। जिसमें हर किसी के पास एक मंच है और हर कोई उस मंच का राजा.... हीरो..... शायद.....

बचपन में हम सरकारी स्कूल की दीवार पर एक बात पड़े थे। जो माट्साब ने हमें बेशरम की लाठी से कूटते-कूटते याद कराई थी वो बात हमको आज भी याद है और जिसे हजारों लोगों ने लाखों बार दुहराया है...

“सुख-दुख दुनिया की ऐसी चीजें हैं जो अनिवार्य रूप से व्यक्ति के साथ रहती हैं चाहे वह गरीब हो या अमीर?”

उस दिन, उनकी बात पर गुस्सा आया था मगर अब असलियत सामने है अब ऐसा लग रहा है कि जैसे उनकी कही हर एक बात सही हो रही हो। हम तो सुक्कन से पूछे थे कि तेरे पिताश्री ज्योतिषी थे क्या? जो हम जैसे अबोध बालकों को दूर से ही देखकर हमारा भविष्य बता देते थे। अब इस बात का मतलब भी पता है और मायने भी। और कहते भी हैं जिन्दगी के मायने जब आपको समझ में आने लगें, तब समझना आप बड़े हो गये हैं।

शिकायतें हमेशा हर किसी के पास होती हैं। उस वक्त हमें भी थी, अभी भी हैं। समस्याएं हर किसी के पास थोक में मिल जाएंगी। उनसे पीछा छुड़ाना नामुमकिन रहा। “ये नहीं हो रहा”,

“वो नहीं हो रहा”, “ऐसा होना चाहिए”, “वैसा नहीं हो रहा”
ब्लॉ ब्लॉ ब्लॉ ब्लॉ ब्लॉ.....

चिंता से याद आया चिंता के भी अनंत प्रकार हैं। अगर हमने फेसबुक या इंस्टाग्राम पर अपनी फोटू अपलोड की और उसमें हमें 10 या 15 लाइक्स मिले तो भी चिंता बढ़ती है हमारे अभिन्न मित्र, जिसने हमारे साथ ही फोटू अपलोड की थी उसकी फोटू पर अगर हमसे ज्यादा लाइक्स आये तो फिर और भी चिंता बढ़ती है। ये आजकल की चिंता है। इत्तेफाक से अगर किसी ने हमारी फोटू पर दिलवाला रियेक्ट कर दिया फिर तो बल्ले-बल्ले.... और तब तो और जब वो रियेक्ट किसी लड़की ने किया हो। इस तरह पागलपंती के अन्धाधुन गेम में हम LoL बन जाते हैं और हमें पता भी नहीं चलता.....

कल तो एक आदमी को कहते सुना कि “ये ताजमहल अगर लाल पत्थर का होता तो माँ कसम मजा आ जाता” बिल्कुल उसने हू-बहू बात कही। मैंने कुछ नहीं कहा। बस होंठ ऊपर किये और बत्तीसी दिखा दी।

हम तो बचपन से ही एक डायलॉग रट लिए थे कि जब तक हम न चाहें किसी के बाप की औकात नहीं है जो हमें दुखी कर सके। इस का मंतर आज भी हम दिन रात रटते रहते हैं।

27 की उम्र तक आते आते हमने दुनिया में दो कैटेगरी के लोगों को देखा है एक वो जो सच में दुखी हैं और दूसरे वो जो बेवजह वजहें ढूढ़ते हैं दुखी होने की...

पहली वाली कैटेगरी तो ठीक-ठाक है उनकी लाइफ की लगी पड़ी है तो दुखी हो रहे हैं इसमें कोई बड़ी बात नहीं। मगर दूसरी वाली कैटेगरी वाले बहुत बड़े वाले होते हैं और उसी से बिलोंग करते हैं मेरे परम मित्र छोटू भिया मिडिल क्लास में पला-बढ़ा छोटू अपने छोटे-छोटे सपनों को आंखों में सोमिल जैन “सोमू”। 7

सजाए उदासी भरा चेहरा लिए, खुद से ही बेखबर, अपनी सारे महीनों और सालों में किये कोर्सों के सर्टिफिकेट हाथ में लिए अपने घर की ओर जा रहा था। ठण्ड धीरे धीरे बढ़ रही थी लगी थी। घर नजदीक आ गया मगर छोटू के कदम डगमगा रहे थे। मन में कई सवाल भरे पड़े थे।

“क्या जवाब दूंगा घर जाकर?”

“आज फिर वापस आ गया”

“नहीं मिली नौकरी”

सवालों के जबाब में सबसे बड़ा सवाल ये था कि “क्या पैसा कमाना ही सब कुछ है?”

“अगर पैसे कमाना ही सब कुछ है तो कैसे कमाएं?” कैसे बने अपनी भी परफेक्ट लाइफ?” जो किसी की नहीं होती बस परफेक्ट होने का भ्रम होता है।

छोटू अपनी जिंदगी से थक गया था। उसके पास कोई ऑप्शन नहीं था कोशिश करने के अलावा। वही हाल था छोटू का जो एक मिडिल क्लास फैमिली के लड़के का होता है जिसके पास एक ही ऑप्शन होता है कि

“बस स्टार्टअप करना है”

“कुछ बड़ा सा करना है”

इस उम्र तक तजुर्बातों का पहाड़ लिए हमने दुनिया में दोही तरह से काम होते देखे हैं। एक तो इंटरेस्ट से काम किये जाओ या फिर दूसरा झकमार के काम करना पड़ेगा।

जो इंटरेस्ट से करते हैं उन्हें काम में मजा आता है क्योंकि झकमार के काम करने में किसको मजा आता है। बदकिस्मती से जो पहला ऑप्शन नहीं चुनते उनको दूसरा ऑप्शन चुनना ही पड़ता है। लाइफ के इस खेल में क्विट नाम का कोई ऑप्शन ही नहीं होता।

“क्या है उसके पास, “क्या करे वो, “बस एक जिम्मेदारियों का बोझ है... उसके पास तो वो भी नहीं है जो हर किसी की लाइफ में सबसे जरूरी होते हैं।

हताश-निराश छोटू अपने से ही परेशान यहाँ-वहाँ नौकरी की तलाश में दिन-रात भटकता रहता। उदासी भरी जिंदगी की हद हो गई थी। कभी सोचता “मैं किसके लिए जी रहा हूँ?” “क्या रखा है इस जिंदगी में?”

“हालात वह चीज है जो किसी भी इंसान को तहस-नहस करके रख देती है फिर इंसान वो बन जाता है जो वो खुद को सपने में भी देखना पसंद नहीं करता। कुछ यही चल रहा था मेरे परम मित्र की लाइफ में.....”

ठण्ड बढ़ रही थी। कोहरा उसकी आँखों को धुंधला कर रहा था। उसे हर तरफ सिर्फ अंधकार ही अंधकार नज़र आ रहा था...

सिर्फ अंधकार अंधकार.....

यही तो हमारी लाइफ होती है कभी-कभी हम मंजिल के बहुत करीब होते हैं मगर सामने कोहरा आ जाता है और हम पीछे हट जाते हैं..... शायद हममें हिम्मत ही नहीं होती आगे बढ़ने की... फिर बाद में पछताते हुए कहते हैं कि बस एक कदम और बढ़ा लेने की उस वक्त हिम्मत की होती। मगर उस वक्त शायद हम डर रहे होते हैं कि अगर कोहरे के आगे खाई निकली तो..... शायद.....



सब धुंआ धुंआ

सबकी जिन्दगी न जाने कितने सियप्पों से भरी है अगर उन सियप्पों का कलेक्शन करें तो एक मूवी की स्क्रिप्ट लिखी जा सकती है।

“ऐसा हमेशा मेरे साथ ही क्यों होता है” ये हादसा शायद हर किसी के साथ होता है और यह बात शायद हर कोई कहता है।

इसी हादसे का शिकार मेरा यार छोटू था। किस-किस ने नहीं समझाया उसे, हर किसी के ताने-बाने तो सुने थे। कोई भी, कहीं भी, कभी भी उससे मिलता तो बोले बिना नहीं चूकता चाहे वो रिश्तेदार हो या पड़ोसी.....

“देखो ऐसा होता है बिन मां बाप का लड़का” “कितनी बुरी लाइफ है इसकी” हर कोई अपनी तरफ से पूरी सहानुभूति दिखाता मगर जब सहयोग की बात आती तो सबकी चुप्पी सध जाती पता नहीं सहयोग के वक्त लोगों की सहानुभूति कहाँ मर जाती है। सहानुभूति तो हर कोई रखता है मगर उन्हें पता नहीं है कि गूंगा व्यक्ति सलाह या सहानुभूति नहीं मांगता.... वो सहयोग चाहता है क्योंकि सलाह तो न मांगने पर भी मिल जाती है “नहीं तुम्हें ऐसा करना चाहिए” “तुम ये ट्राई क्यों नहीं करते” मगर जब सहयोग की बात आती तो दूर-दूर तक लोग दिखाई नहीं देते।

छोटू सलाह नहीं सहयोग चाहता था। आज तक उसे किसी ने यह नहीं कहा कि “आओ मैं तुम्हें नौकरी दिलाता हूँ” इससे

व्यक्ति जले पर नमक तो नहीं छिड़कता मगर उसका इंटेंसन भी समझ नहीं आता।

मगर मैं अपने दोस्त को अच्छे से जानता था। उसकी खुदारी उसे सबसे अच्छी लगती थी। क्योंकि उसे माँगने से अच्छा कमाना पसंद है वो जिम्मेदार है और मजबूत भी..... और कहते हैं “जो जिम्मेदार होते हैं कंधे उन ही के मजबूत होते हैं”।

छोटू की हर मांग को, हर जरूरत को उसकी आवश्यकताओं को पता नहीं क्यों परेशानी बना लिया जाता। राह चलते लोग कहते मिल जाते “जितनी चादर हो उतने पैर पसारो तुम कहीं के लाड साहब नहीं हो” “ज्यादा रंगदारी मत बताओ तुम कहीं के रंगदार नहीं हो”

जाने अनजाने में क्या-क्या बातें वो अपने बारे में सुनता रहता और अंत में वो शांत होकर सीमित रह जाता।

ये किसी एक दिन की बात नहीं थी लोगों के ताने दिनो-दिन बढ़ते जा रहे थे। “तुम कुछ नहीं कर सकते” “तुम जी क्यों रहे हो” लोगों की बातें उसे काटने दौड़ती थीं। वो चाहता था कि ये दुनिया छोड़ कर कहीं और चला जाये। एक पल उसे ख्याल आता कि वो खुद को खत्म करले मगर वो वही गलती दुबारा नहीं दुहराना चाहता था जो उसके सबसे करीबी लोगों ने की थी।

वो मेरा सबसे अच्छा दोस्त था क्योंकि हम लंगोटिया यार थे। हम बचपन से ही एक दूसरे को समझते थे। और मुझे मालूम था कि उसने ऐसा गलत कदम आज तक क्यों नहीं उठाया। असल बात ये थी कि वो अपने दादा दादी और बहन से बहुत प्यार करता था। उनकी आखिरी उम्मीद था मेरा भाई!

जब कोई आदमी लोगों के ताने सुनसुन के थक गया हो तो उसे लोगों का समझाना भी ताना लगने लगा था। उसके अंदर सोमिल जैन “सोमू”। 11

गुस्सा भर गया था। बात-बात पर गुस्सा हो जाता मगर उसके हालात, जज्बात और मजबूरियां सिर्फ मैं समझता था। “वो ऐसा क्यों है” “उसकी बेरुखी का क्या कारण है” सिर्फ मैं जानता था।

छोटू जरा-जरा सी बात पर जल्दी हैरान परेशान हो जाता। शायद इसलिए भी क्योंकि उस के पास जिम्मेदारियां बहुत थीं मगर उन्हें संभालने की हिम्मत नहीं थी। कोई उसे हौसला देने वाला भी नहीं था। बस इन्हीं जिम्मेदारियों के बोझ तले दबा छोटू अपनी बहन के सपनों को पूरा करने और बूढ़े दादा-दादी की बुढ़ापे की लाठी किं कर्तव्य विमूढ़ होकर बैठा नहीं रहना चाहता था।

“क्या मुंह लेकर दादी के सामने जाऊं”

“फिर बिना नौकरी के वापिस आ गया” ऐसे पता नहीं कितने उलटे-सीधे विचार उसने अपने जहन में पाल रखे थे। उसकी आँखों में आंसू थे मगर वो उन आंसुओं को अपनी आँखों में ही समेटकर रखना चाहता था। खुद को बेनकाब होने से डरता था।

उसने घर में घुसते ही जूते उतारे और किसी से बिना कुछ कहे अटारी पर पड़े पलंग पर गिर गया। उसके परिवार की उम्मीद फिर से टूट गई। घड़ी की टिक-टिक करती आवाज भी उसे ऐसी लग रही थी जैसे वो भी उसकी बदकिस्मती पर ठहाके लगा कर हंस रही हो।



सुबह का सूरज अपने नए पड़ाव पर था। सूर्य की किरणें चारों ओर फैली थीं। हर जगह चमक-धमक सुस्त यार ही थी। सड़क के अगल-बगल की नालियां भरी पड़ी थी।

“अम्मा जी दूधवाला” दूधवाले ने छोटू के घर की घंटी बजाकर कहा।

“भैया जी कल से दूध आधा लीटर ही चाहिए” छोटू की दादी ने दरवाजे खोलकर पतीली आगे की।

“क्यों माई बाप कुछ गलती हो गयी का हमसे” दूधवाले ने दूध देते हुए कहा।

“नहीं बस ऐसे ही” दादी ने उससे नज़रे बचाई।

“ठीक है अम्मा जी” दूधवाला दूध देकर वहाँ से चल दिया।

दादी दूध लेकर किचिन में गई। थोड़ी देर बाद दादी चाय का गिलास लिए ऊपर अटारी में पहुँची।

“उठो बेटा” दादी बोली। “नोकरी के लिए नहीं जाना क्या” दादी पलंग पर बैठ गई।

“दादी मां नौकरी हो तो जाएं” छोटू नींद में ही बोला। “आप किस नौकरी की बात कर रही हैं यहां जिसके पास पैसा होता है उसी को नोकरी मिलती है ये जमाना भी उसी का है” इन बातों से लग नहीं रहा था कि वो नींद में है मानो पूरे होश में ये बातें बोल रहा हो।

छोटू ने अपनी सारी भड़ास निकाल दी। “मुझे तो विरासत में दुआएं ही मिली हैं जिससे एक चड्डी भी खरीदी नहीं जा सकती”

“कोशिश तो करनी चाहिए” दादी मां ने उसको समझाते हुए कहा।

“कोशिश, कोशिश, कोशिश जब से कोशिश ही तो कर रहा हूँ” छोटू का गुस्सा बढ़ रहा था।

दादी ने हालात को समझते हुए बात बदली। “लो चाय पियो”

“हमें अपनी तरफ से पूरी कोशिश करना चाहिए। उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिए। सबका समय आता है अपना भी आएगा” दादी मुस्कुराई।

“ठीक है दादी” छोटू ने अनमने ढंग से कहा।

ये एक ऐसा सच था जो उस दिन उसकी दादी ने छोटू को बताया था। मगर वो बेखबर था इस बात से कि ये सच कुछ सालों बाद सच में सच साबित होगा और साबित भी हुआ।



उससे मुलाकात

नहा धोकर खाली पेट छोटू फिर नौकरी की तलाश में भटकता शहर के बीचों-बीच पहुँच गया।

उसके हाथ में बैग और न्यूज पेपर के क्लासिफाइड वाले दो पेज थे। कंपनी के सामने खड़ा होकर सोचने लगा “यही कंपनी है, शायद यहां काम बन जाए” आजमाकर देखते हैं।

इंतजार करते-करते चार घंटे बीत गए। घड़ी में दोपहर के दो बज रहे थे। इंतजार खत्म हुआ। अगला नंबर उसका था मगर उसी समय उसके मोबाइल की स्क्रीन पर एक मैसेज का नोटिफिकेशन चमका। “भैया सरकारी हॉस्पिटल आ जाओ दादा की तबीयत बिगड़ रही है”

“तुम वहीं रुको हम आते हैं” छोटू ने रिप्लाई किया। छोटू फौरन वहां से कट लिया। टेक्सी पकड़ी और हॉस्पिटल के लिए रवाना हो गया।



टेक्सी से उतरकर बिना ट्रेफिक देखे रोड क्रॉस करने लगा तभी एक लाल रंग की कार ने उसे टक्कर मार के चित्त कर दिया। छोटू सर्कल के पास बेहोश हो गया। ये एक हादसा था मगर इसी हादसे से उसकी कहानी पलटने वाली थी। कहते हैं कुछ हादसे जिन्दगी लेते ही नहीं, जिन्दगी बना भी देते हैं। उसकी मुलाकात

एक ऐसे इंसान से होने वाली थी जो कभी उसे अपना सब कुछ मानती थी। उस एक्सीडेंट के बाद क्या हुआ उसे कुछ याद नहीं।

जब छोटू को होश आया तो उसने देखा कि वह हॉस्पिटल के बेड पर लेटा है। उसका सिर दर्द से फटा जा रहा था। वो बारबार सिर में लगी पट्टी को खींच रहा था। रात के करीब डेढ़ बज रहे थे। छोटू की नींद खुली। “क्या हो गया यार, कहां फस गये हम” पलंग पर लेटे-लेटे उसने सोचा। कुछ देर बाद हल्के से रूम का गेट खुलने की आवाज आई।

“नर्स मैं घर जा रही हूँ” ये परी की आवाज थी। “कल सुबह जल्दी आ जाऊंगी” परी जाने लगी।

“मेडम इतनी रात को आप घर जा रही हैं और फिर सुबह से जल्दी भी आ जाएंगी” नर्स बोली। “दिल के करीब है क्या ये पेसेंट”

“नहीं ऐसी कोई बात नहीं है रूही जी” परी मुस्कुराई।

“तो”

“कहते हैं कुछ लोग हमें बिना बताए छोड़कर चले जाते हैं मगर हम भी उनके साथ वही करें जो उसने किया तो फिर हममें और उनमें क्या फर्क रहेगा” परी को आँखे चमक रहीं थी।

“समझ गई मैं..... क्या रिश्ता है आपका इनसे” नर्स गौर से परी को देख रही थी।

“समझ से परे है ये रिश्ता”

“इस रिश्ते का नाम तो होगा कुछ”

“पता नहीं....और रूही मेडम कुछ रिश्तों के नाम न हो तो अच्छा रहता है.... वेवजह, बेनाम से रिश्ते”

“मुझे समझ नहीं आया”

“कोई बड़ी बात नहीं मैंने पहले कहा ही था समझ से परे है ये रिश्ता.... मुझे भी आजतक समझ नहीं आया” कहते हुए परी रूम से बाहर चली गई।

नर्स ने भी कमरे की लाइट बंद की और गेट को जोर से लगाकर चली गई। छोटू जाग रहा था। उसने सब कुछ सुन लिया था।

उनके दरमियाँ अभी भी कुछ अधूरा सा था। कुछ बाकी था। जो आज परी के मुँह से जाने-अनजाने में निकल गया। ये बात और है कि नर्स न समझी हो मगर जिस को समझना था वो समझ गया। कुछ बातें जो हमें अभी समझ नहीं आयीं वो बातें ये समझ के समझ लेनी चाहिए कि ये बहुत बड़ी बातें थी। बातें याद रखें मतलब बाद में समझ आ ही जाता है।



छोटू की आँखें खुल गईं। उसके चेहरे पर सुबह के सूरज की तेज किरणें पड़ रही थीं। चकाचौंध को चीरते हुए उसकी आँखों ने सबसे पहला चेहरा परी का देखा। वो खिड़की से पर्दा हटा रही थी। छोटू उठकर बैठ गया। परी अभी भी काम में लगी थी। उसने छोटू को नज़र अंदाज़ किया।

“तुम.....” छोटू ने बात शुरू की।

“हाँ मैं”

“यहाँ कैसे”

“क्यों ताज्जुब हुआ.... भूल गए मुझे या मैं याद नहीं” परी खतरनाक तरीके से मुस्कराई। “अब तबीयत कैसी है”

“पहले से बेहतर” छोटू बोला।

“फिर पलंग खाली करो और भी मरीज हैं जिनके दुःख दर्द हमसे ज्यादा हैं वो भी इंतज़ार में बैठे हैं” परी ने अपना डॉक्टर वाला एटीट्यूड दिखाया।

“तुम्हें अभी तक याद हूँ मैं... भूली नहीं मुझे”

“कोशिश बहुत की भूलने की मगर फिर जिन्दगी से ये हिदायत मिली कि धोखे भूले थोड़ी जाते हैं वो मिलते ही हैं याद रखने के लिए”

“अभी तक नाराज हो मुझसे” छोटू बोला। “उस बात को कई साल गुजर गये”

“घाव कितने भी पुराने हों निशान तो रह ही जाते हैं” परी रुक गई। “खैर छोड़ो इस बात को”

“माफ़ कर सकती हो मुझे”

“माफ़ तो उसी दिन कर दिया था जिस दिन तुम मुझे छोड़ कर गये थे अब तो मैं तुम्हें जानती तक नहीं” “परी ने अनजान बनने का नाटक किया।” “बेड खली करो और भी पेसेंट हैं जिनका ट्रीटमेंट बाकी है”

छोटू चुप रहा। धीरे-धीरे पलंग से उठा और जाने लगा। “तुम्हारे पास मेरे लिए बिल्कुल भी टाइम नहीं है क्या”

“बिल्कुल नहीं” परी अपने मोबाइल में बिजी हो गई। “जिनके पास मेरे लिए टाइम नहीं था उनके लिए मेरे पास टाइम नहीं, जैसे को तैसा, और वैसे भी मुझे बहुत काम है बेरोजगार नहीं हूँ मैं”

छोटू रूम से बाहर चला गया। “नर्स ये फाइल डॉक्टर अरोड़ा को दे देना और कहना इसे अच्छे से देख लें कोई कमी हो तो जरूर बताएं” परी ने देखकर भी छोटू को अनदेखा कर दिया। छोटू नीचे वाले फ्लोर पर आया मगर वहां उसके दादा

दादी नहीं थे। वो दौड़कर काउंटर पर खड़ी नर्स से पूछता है “यहां पर बूढ़े दादा-दादी बैठे थे आप को पता है वो कहाँ गए”

“जी सर उनका ट्रीटमेंट तो कल ही हो चुका है” नर्स बोली।
“उनका ट्रीटमेंट आयरा मैम ने किया था मुझे लगा जैसे वो लोग उनके कोई रिलेटिव हों”

“बिल”

“बिल पहले ही पे हो चुका है”

“किसने किया”

“शायद मैम ने.... उन्हीं के नाम से बिल बना है” नर्स ने कंप्यूटर में चेक किया।

छोटू जाने लगा। तभी वो नर्स बोली “आप मेडम के रिलेटिव हो क्या”

“नहीं..... क्यों” छोटू ने कुछ सोचा।

“कल मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैम का कोई अपना हो क्योंकि वो इतनी टेंसन में थीं”

छोटू मन ही मन मुस्कराया। “उसके दिल में मेरे लिए अभी भी कुछ बाकी है..... वो अभी भी मुझे चाहती है” छोटू ने मन ही मन सोचा। “मुझे सब सच बताना होगा उसे.... आखिर उस दिन हुआ क्या था.....”

कहते हैं नाराजगी वाला प्यार, सच्चा प्यार करने वाले ही समझ पाते हैं। जिसमें एक दूसरे की केयर तो होती है मगर बात नहीं होती। जुबान कुछ कहती है और नज़रे कुछ कहती हैं। दिल कुछ कहता है दिमाग कुछ। शायद वही प्यार परी के दिल में अभी भी जिन्दा था।



छोटू ने घर के अंदर पैर ही रखा था कि सवाल्लों के तूफान ने उसे घेर लिया। “किससे पिटकर आये हो” दादी ने पूछा।

सोमिल जैन “सोमू” | 19

“कुछ नहीं छोटा सा एक्सीडेंट हो गया था बस” छोटू बेंच पर बैठ गया।

“तू भी..... कभी सुधर नहीं सकता एक न एक सियप्पा खड़ा करता रहता है” दादी ने पानी का गिलास छोटू की तरफ बढ़ाया। “अच्छा सुन कल परी मिली थी अब तो बड़ी डॉक्टर बन गयी है बिटिया”

“कौन”

“तेरे कॉलेज की दोस्त”

“हाँ मिली होगी” छोटू का रिएक्शन ऐसा था जैसे वो कुछ जानता ही न हो। उसके मन में कुछ तो पक रहा था। एक्सीडेंट की वजह से ही सही कम से कम बिछड़े दोस्त से मुलाकात तो हुई।

“सही नाम क्या था उसका”

“डॉक्टर आयरा” छोटू कहकर अटारी पर जाने लगा। “अब दादा की तबियत कैसी है”

“पहले से अच्छी है कल परी दीदी ने ही दादा का ट्रीटमेंट किया था” संस्कृति ने बताया।

“अभी भी उसकी हमदर्दी मुझसे और मेरे परिवार से जुड़ी हैं” छोटू ने एक पल के लिए सोचा और अटारी चढ़ गया।

“उससे बात करूँ या नहीं” छोटू पलंग पर लेटा सोचने लगा। “शायद वो मेरी मजबूरी समझ जाए, शायद वो समझ जाए कि मैं उसे छोड़कर नहीं आया था इस शहर में, शायद वो मेरे हालात समझ जाए, शायद..... शायद..... सोचते सोचते छोटू की कब नींद लग गई उसे पता भी नहीं चला।

गजब की मजबूरी है ये मजबूरी। आदमी को कितना मजबूर बना देती है ये मजबूरी। एक मजबूरी न समझने से कितनी गलतफहमी खड़ी कर देती है ये मजबूरी।

छोटू कई सालों से किराए के घर में रहता था। पूरा घर दादा की पेंशन से चलता था। जिससे सिर्फ जरूरत के सामान ही आ पाते थे। सब लोग बस इसी उम्मीद के सहारे बैठे थे कि छोटू की नौकरी लग जाये, मगर पता नहीं कब लगेगी छोटू की नौकरी?

ऐसा नहीं था कि छोटू के कुछ सपने नहीं थे। उसने सपने तो बहुत बड़े-बड़े देखे थे मगर उन्हें पूरा करने की उसमें हिम्मत नहीं थी। बहुत कुछ सोच रखा था उसने।

दिन बीतते हैं, बीतते गए। शामें ढलती हैं, ढलती गई। रातें गुजरती हैं, गुजरती गई। धीरे-धीरे जिन्दगी की उम्र बढ़ती गई। अभी तक छोटू की लाइफ में ऐसा अवसर नहीं आया था जिससे वह अपनी काबिलियत सिद्ध कर सके।

अपनी काबिलियत सिद्ध करने के लिए दिनभर छोटू भटकता रहता था। इधर-उधर, ना जाने किधर-किधर खानाबदोश की तरह घूमता रहता।

खैर, छोटू का एक और मुश्किल दिन कट गया। दिन तो कट जाते भटकते-भटकते मगर रात की बेचैनी उसे साँप की तरह डसती थी। उसे एक बात समझ में नहीं आती थी कि असादी इतना खुश क्यों रहता है। मेरा ही क्लासमेट है। उसे भी मिडिल क्लास फेमिली का टेग लगा था। नौकरी का भी अता-पता नहीं। मगर फिर भी हमेशा बिजी रहता है और स्माइल वाले इमोजी की तरह हमेशा बेफिक्र खुश मिजाज रहता है। उसकी तो खुश रहने की वजह भी समझ नहीं आती पता नहीं क्यों.....?



बांके टपरी

शाम के करीब 7:00 बज रहे थे।

छोटू अपने घर से निकल पड़ा। कहां जा रहा था इसका पता उसे भी पता नहीं था क्योंकि आज वो उस गली से गुजर रहा था जो आज तक उसकी रह गुजर भी नहीं रही थी।

पता नहीं आज उसे क्या हुआ। गली को चीरता हुआ मंदिर के सामने खड़ा हो गया। अपने जूते खोले और मंदिर के अंदर चला गया।

कुछ देर बाद वो मंदिर से बाहर आया और थोड़ी दूर पर बनी चाय की टपरी जिसका नाम “बांके टपरी” था वहाँ बैठ गया।

“चचा एक कटिंग बना दो..... बहुत जोर से तलब आयी है चाय की”

“अभी लो बेटा”

चाय का एक घूँट ही उसके गले से उतरा था कि उसकी नज़र मंदिर के सामने रुकी कार पर पड़ी। उसे धुंधला-धुंधला सा कुछ याद आने लगा।

“लाल रंग की गाड़ी” ये तो वही कार है जिससे मेरा एक्सीडेंट हुआ था। छोटूने अपने चारों तरफ नजर घुमाई। हाथ में कटिंग चाय का गिलास लिए छोटू कार के पास पहुँचा।

“अच्छा तो ये वो कार है जिसने मुझे ऊपर पहुँचाने का पूरा पिरोग्राम फिक्स किया था”

छोटू ने एक जोर की लात कार के टायर में दे मारी।
“अरे क्या कर रहे हो, कार ने क्या बिगाड़ा है तुम्हारा” छोटू पीछे मुड़ा तो उसे एक जाना पहचाना चेहरा दिखा।

“तुम”

“हाँ मैं” ये परी थी।

“अच्छा तो वो जनाब तुम हो जो मुझे ऊपर पहचाना चाहती थी” छोटू ने चाय का गिलास कार के बोनट पर रख दिया।

“तुम क्या कह रहे हो मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा..... मुंह में जो भी आएगा वो बकते जाओगे क्या” परी का गुस्सा जायज था।

“क्यों....”

“मैं भी किस के मुँह लग रही हूँ” परी ने कार का गेट खोला।

“अरे ऐसे कैसे जा रही हो... तुम्हारी जानकारी के लिए बता दूँ कि मैं तुम पर केस भी कर सकता हूँ परी” छोटू कार के सामने खड़ा हो गया।

“तुम्हारे मन में जो आये वो करो मगर मुझे जाने दो” परी ने कार स्टार्ट की और तेज़ी से निकल गई।

छोटू हाथ में चाय का गिलास पकड़े वहीं खड़ा रहा। उसने जाते-जाते उसकी कार को देखा जिस के पीछे रेड कलर में प्लस का निशान बना था।

“एक सच्चाई है जो उसे बताना बहुत जरूरी है” छोटू टपरी पर बैठा सोचने लगा। “उसे बताना चाहता हूँ उस रात की बात.....”

छोटू की बात को अनसुना कर परी वहां से चली गई मगर छोटू के मन में एक हलचल सी होने लगी थी। मुझे नाराजगी का सोमिल जैन “सोमू”।23

कारण तो समझ आता है मगर बात नहीं करेगी तो बात कैसे बनेगी, नाराजगी कैसे दूर होगी?

वो अब क्या करेगा उसे नहीं पता। बस यही सोचकर “कि उसकी दिल्ली अभी दूर है” अपने घर को जाने लगा।

“अपने बारे में किसी की सोच को कैसा बदला जाए” छोटू ने टपरी वाले चाचा से जाते-जाते पूछा

“ज्वलंत मुद्दा है भैया ये दूसरों की सोच बदलने के चक्कर में कई घनचक्कर हो गए” चाचा ने ज्ञान दिया।

“तुम इतना हिंदी मत झाड़ो चचा”

“ज्ञान दे रहे हैं बेटा रख लो”

“पंडित न बनो तुम मौका मिला नहीं कि ज्ञान देने लगे”

“मत लो ज्ञान”

“मोदी जी की वजह से इज्जत करते हैं तुम्हारी क्या पता कब तुम प्रधानमंत्री बन जाओ”

“और सुनो ये ज्ञान घर जा के चाची को देना का पता उनकी सोच बदल जाए आपके बारे में” कहकर छोटू ने गर्दन घुमाई। वो उस गली में गुम हो गया जहाँ उसका आना जाना कम था। एक सवाल के साथ गली के अँधेरे ने उसे कैद कर लिया। सवाल था कि चांस बनाना है या फिर चांस का इंतजार करना है?



बस चलना है

छोटू ये सोचने में लगा था कि उसे विरासत में कुछ नहीं मिला दूसरे के सुखों देखकर उसे दुख होने लगा था। “उनके पास सब कुछ है मेरे पास कुछ भी नहीं” छोटू के मन में कई दिनों से यही चल रहा था।

ऐसे मौके पर सिर्फ एक ही था जो उसके साथ था। उसका पक्का दोस्त “रोहित” मतलब “मैं” मतलब “असाटी”

चलते-चलते मेरे के घर के सामने पहुंचकर छोटू ने जोर से आवाज लगाई। “अबे ओ असाटी कहाँ हो बे”

मेरे घर से कोई आवाज नहीं आई। थोड़ी और चिल्लाने के बाद

“भैया घर पर नहीं है” रक्षा ने खिड़की खोलते हुए कहा।

“दुकान पर होगा” छोटू को समझने में देर नहीं लगी। ये असाटी भी बड़ी आफत है छोटू अपने घर की तरफ मुड़ गया।



“भैया मेरा रिजल्ट आ गया” छोटू के घर में घुसते ही संस्कृति ने अपनी रिजल्टशीट उसे थमा दी।” एम. ए. टॉप किया है भैया और शिक्षामंत्री के द्वारा गोल्ड मैडल भी मिलना है”

“सच्ची”

“मुच्ची”

छोटू खुशी के मारे पागल हो गया। बार-बार उस मार्कशीट को निहार रहा था। उसने मिनिटों में घंटों का काम ये किया ये बात पूरे मोहल्ले भर में आग की तरह फैला दी। बड़े दिनों बाद छोटू इतना खुश हुआ था।

“चाचा दो डब्बे मिठाई के दे दो..... और हां आज उधार नहीं..... ये लो पैसे” छोटू दौड़ते-दौड़ते आसिफ चाचा के पास पहुंचा।

कहते हैं खुशी सबको एक जैसी होती है बस उसे जाहिर करने का तरीका अपनी अपनी औकात देखकर होता है। आसिफ चाचा जो छोटू के परिवार के बहुत करीब थे। चाचा वो शख्स थे जो छोटू के परिवार के साथ ही शहर में रहने को आए थे। उसके दादा के अच्छे दोस्त थे। यहां शहर में आकर उन्होंने मिठाई की दुकान करली। उनका गुजारा इसी दुकान की देख रेख में होने लगा। वो आसिफ कम गुलज़ार ज्यादा थे। हर एक बात पर दो लतीफें चेंप देते। मगर हर बुरे वक्त में छोटू के परिवार का हमेशा साथ दिया और अभी तक दे रहे हैं।

“क्यों भाया आज ऐसा क्या हो गया बड़ी उछल-कूद कर रहे हो” आसिफ चाचा बोले।

“अरे उछल-कूद क्यों न करूँ चाचा.. अपनी छोटी ने एम.ए. टॉप किया है गोल्ड मैडल भी मिलना है” छोटू बोला।

“अच्छा.... जे बड़ी खुशी की बात है.... अपनी गुड़िया ने तो कमाल कर दिया.... मैडल ले आयी..... ये चार डब्बे लेकर जाओ और सारे मोहल्ले को जे बात पता चलनी चाहिए” अब्दुल चाचा ने आदेश और चार मिठाई के डब्बे छोटू के हाथ में थमा दिए।

अक्सर हमारे साथ भी यही होता है जब हम कोई चीज पाना चाहते हैं लेकिन चाहकर भी उसे हम हाँसिल नहीं कर पाते

लेकिन जब वही चीज कोई अपना बड़े शौक से पा लेता है तो हमे भी बहुत खुशी होती है। छोटू का वर्षो पुराना सपना जो हमने साथ में देखा था आज उसकी बहन पूरा कर लायी।

छोटू मिठाई के डब्बे लेकर घर वापिस आ गया। पूरे मोहल्ले को उसने मिठाई खिलाई। चाची को, चाचा को, लाला को, ताई को उनके पति परमेश्वर को..... ब्ला ब्ला ब्ला.....

सबका यही कोमन सा सवाल था “पढ़ाई तो हो गई है अब बहन की शादी का सोचे हो कुछ...”

आखिर में घर पहुंच कर छोटू ने संस्कृति को गले लगा लिया। अपने भाई को बहुत दिनों के बाद इतना खुश देखा था संस्कृति ने....

“सारे मोहल्ले भर को तूने मिठाई खिला दी और हम को पूछा तक नहीं क्यों बे छोटू” मैंने घर में घुसते ही कहा।

“नहीं यार तुझे कैसे भूल सकता हूँ असाठी” छोटू ने मेरे मुंह में मिठाई ठूँस दी।

“तू मेरे घर आया था रक्षा ने बताया “

“हां आया था..... तुझसे कुछ बात करनी थी”

“बोल.... क्या बात है” मैंने मिठाई खाते हुए कहा।

“बैठकर बात करें” वो बोला।

“अभी नहीं मेरे पास बिल्कुल टाइम नहीं है बाद में बात करूंगा तुझे तो पता है दुकान नहीं पहुंचा तो पापा दुनिया भर की सुनायेंगे” मैं दुकान चला गया।



“सुन बेटा छोटे लाल प्रॉब्लम्स तेरी लाइफ में भी हैं मेरी लाइफ में भी हैं। प्रॉब्लम्स की कमी तेरी लाइफ में भी नहीं कमी मेरी सोमिल जैन “सोमू” | 27

लाइफ में भी नहीं” मैं रास्ते में चलते-चलते छोटू को पंडितों वाला ज्ञान दे रहा था। “बस उनको देखने का हम दोनों का नजरिया बिल्कुल अलग है..... तू डर डर के मुश्किलों को देखता है उनसे डरता है और मैं उनका खुलकर सामना करता हूँ”

“मतलब”

“मतलब” ये कि राई को पहाड़ बना लेने की तुम्हारी पुरानी आदत है। तुम्हारे सामने खड़े महान आदमी ने मतलब मैंने एक महान काम करने के बाद एक महान बात कही थी “मुश्किलों से डर कर भागोगे तो कायर कहेगी दुनिया, और उनका डट कर सामना करोगे तो शेर कहलाओगे” मैंने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

“बात तो समझ आयी तेरी मगर....”

“मगर क्या मेरे ढोकले”

“डर लगता है यार..... ये दिन जन्मों की तरह गुजर रहे हैं साला अभी तक मैं कुछ नहीं कर पाया.... दर-दर की ठोकरें खाते फिर रहा हूँ। समझ नहीं आ रहा कि अब मैं क्या करूँ.....? मेरे साथ वाले कितने आगे निकल गए और मैं वहीं खड़ा हूँ.... बेबस लाचार बनकर.....”

“छोटू तुझे पता है तू खुद में ही बहुत बड़ी प्रोब्लम है”। “ये नहीं कर पाया” “वो नहीं कर पाया” “मेरी लाइफ झंड हो गई है” और पता नहीं क्या क्या सोचता रहता है।

“तो क्या करूँ मैं.... सोचना तो पड़ेगा न यार”

“घंटा सोचना पड़ेगा... दूसरों से अपना कंपेरिजन करना छोड़ क्योंकि जोतू है वो सिर्फ तू है.... जो तू कर सकता है वो सिर्फ तू ही कर सकता है और कोई नहीं..... कब तक खुद को कोसते रहोगे”

छोटू चुप था। उसके पास बोलने के लिए कुछ नहीं था। रोहित ने समंदर की तरफ देखा।

“सब के मन में ख्वाहिशें लबालब भरी हैं उन ख्वाहिशों का किनारा किसी को नहीं पता मगर कितनी ख्वाहिशें कितनी फीसदी लोगों के मुकम्मल होती हैं ये भी किसी को नहीं पता..... छोटे बच्चे से लेकर अधेड़ आदमी तक सब सपने देखते हैं मगर दोनों के सपनों में फर्क है भाई.... किसी चीज के बारे में सोचना और चिंता करना दोनों में बहुत फर्क है होता है”

छोटू शांति से एक समझदार बालक की तरह एकचित हो सब सुन रहा था। इससे पहले छोटू कुछ कहे मैंने पंच मारा। “चेत लेकिन चिंता मत कर”

“इतना सब कहाँ से सीखे हो तुम असाठी”

“ब्रम्हज्ञान है ये याद कर लो बेटा”

“तू क्या करना चाहता है अपनी लाइफ में” छोटू ने समझदारी भरा सवाल दाग दिया।

“मुझे किसी से भी खुद को कम्पेरिजन करने की जरूरत नहीं है। मैं कभी भी किसी भी रेस का हिस्सा नहीं बना चाहे वो जिंदगी की हो या किसी भी चीज को पाने की.... मुझे नहीं भागना यार किसी रेस में..... अपना खुद अकेले कुछ करना है और जिस दिन मुझे लगने लगेगा कि मैं किसी दौड़ का हिस्सा हूँ..... मैं वो रेस छोड़ दूंगा...”

“मतलब..... गिवअप कर देगा”

“फर्क है गिवअप करने और भागने से इंकार करने में”

“क्या”

“भाई चलने और दौड़ने में फर्क होता है”

“समझाओगे असाठी”

“दोस्त गिवअप नहीं करूँगा मगर दौड़ना भी नहीं है आराम से चलना है मुझे.... दौड़ने में वो सब छूट जाता है जिसे हम छूट जाने के बाद याद करते हैं..... ज़िंदगी के सफर में आराम से चलना है”

“आराम से चलने पर भी बीती चीजों की याद तो आती ही हैं न”

“याद आती है मगर याद आने पर हम यही कहते हैं कि काश उस पल खुलकर जी लिए होते तो आज कोई अफ़सोस न रहता..... सच बताऊँ तो आराम से चलने में बीते लम्हों का अफ़सोस नहीं रहता”

“फिलॉस्फर बन गया तू तो असाठी..... गुड मेन जैसी बात कर रहा है बे”

“यहीं तो हम lol बन जाते हैं छोटू..... हमेशा हर चीज ग्रेट लोगों से ही नहीं सीखी जाती..... उनका कहा थ्योरी है और थ्योरी चाटने से कुछ नहीं होता..... तुम सीखने को आसिफ चाचा से भी सीख सकते हो, तुम अपने दादा-दादी से भी सीख सकते हो”

“और तुमसे असाठी..... दोस्ती करना.....”

“शायद”

“मगर इतना पक्का है कि ज़माने में चलना है तो ज़माने के साथ चलना होगा”

“चलेंगे न ज़माने के साथ”

“विवादों और फसादों का हिस्सा रहा असाठी आज शांति और संतोष की बात कर रहा है” छोटू मेरे मजे लेने लगा।

“फिर भी तू करना क्या चाहता है?”

“दौड़ना नहीं चाहता बस चलते रहना चाहता हूँ..... जिससे पैरों में जंग भी न लगे और गिरू भी नहीं..”

“क्या थिंकिंग है गुरु तुम्हारी” छोटू मुस्कुराया।

“राइटर बनना है” रोहित ने छोटू से नज़रें मिलाई।

“राइटर”

“हाँ”

“क्या लिखेगा फिर.....”

“तेरी लाइफ पर..... क्योंकि तेरी लाइफ ही सबसे बड़ा सियप्पा है” उस दिन मैंने ये बात कह तो दी थी मगर सच साबित होगी ये मुझे भी नहीं पता था।

“सही है भाई” छोटू मुस्कुराया। “वैसे हम जा कहाँ रहे हैं”

“ये बात तू अब पूछ रहा है थोड़ी देर चल खुद पता चल जाएगा”

“सरप्राइस”

“नहीं”

“तो”

“सामने देख”

छोटू ने नज़रें घुमाई। “अपना कैफे” कैफे का नाम था। कैफे एक दम नया था। उस के सामने पहुँच कर रोहित अपने हाथ में बँधी घड़ी देखने लगा। उसकी नज़रें कहीं दूर देख रही थी।

“चलो”

“कहाँ”

“कैफे”

“ट्रीट दे रहा है क्या असाटी”

“सवाल बहुत पूछता है तू”

दोनों कैफे में गए। कुछ देर बाद छोटू के कंधे पर पर किसी ने हाथ रखा।

“अनिकेत.... तुम यहाँ....”

“क्यों.... मेरे कैफे में मैं ही नहीं रहूँगा क्या”

“अबे..... ये तेरा कैफे है बड़े चुरकट निकले यार तुम”
“नहीं बे ये “अपना कैफे” है”
“कैसे हो भाई लोग” ये हमारे अभिन्न मित्र सत्तूमराज उर्फ सत्यांश मिश्रा थे।

“तुम कब आये सत्तू”
“सारा रोहित का प्लान था”
“अभी एक और बाकी है” मैंने कहा।
“सुनील” छोटू बोला।
“नेताजी आपने तो कैफे खोल लिया.... नेतागिरी छोड़ दी का”

“मल्टीटेलेण्डेड लोग हैं दुनिया में” मैं बोला।
“मतलब”
“मतलब जे है सत्तूमराज..... नेतागिरी और कैफे दोनों साथ-साथ सुलटाएँगे”
“एक और मित्र पधार चुके हैं” मैंने अपनी आवाज तेज़ की।

“जुहार.. नमस्ते मिस्टर परफेक्ट” छोटू बोला।
सुनील चेयर पर अपनी तसरीफ रख चुके थे। “भैया परफेक्ट तो कोई नहीं है दुनिया में”

“हमको मालूम है साहब मगर बहुत पहले ग़ालिब फरमाए थे-

हमको मालूम है जन्नत की हकीकत लेकिन।
दिल को खुश रखने के लिए ग़ालिब ये खयाल अच्छा है”-
मैंने कहा।

“इन्ही बातों के कारण हम इन्हें मिस्टर परफेक्ट कहते हैं सारे सवालियों के जबाब मौजूद हैं इनके पास” छोटू बोला।

“भाई लोग क्या लोगे चाय या कॉफी”

“चाय” छोटू बोला।

“कॉफी” सुनील का एकलौता हाथ उठा।

पुराने यार मिले थे। बहुत बातें हुई। एक घंटा कब निकल गया पता ही नहीं चला।

“कुछ कहिए नेता जी” सत्तूमराज ने मजाक करने का अपना प्रसिद्ध पुराना पैतरा अपनाया।

“क्या सुनाएं मिश्रा जी”

“वही जो आजकल आप व्हाट्सएप स्टेटस पर डालते हैं” सत्तूमराज खिसियाए।

“क्या” हमारी नज़र अनिकेत पर थी।

“ऐसा का डालते हो बे”

“नेताजी आजकल शायर भी बन गए हैं” सत्तूमराज तपाक से बोले।

“अच्छा”

“तो अपने चंद नगमे हमारी खिदमत में भी पेश कर दीजिए” सुनील ने शायरों की स्टाइल अपनाई।

“हाँ भाई” सबने साथ दिया।

“सुना दे भाई..... अब तो कैफे भी तेरा, सरकार भी तेरी.... अब काहे का डर” छोटू ने कहा।

“अच्छा ठीक है” अनिकेत ने कुर्सी घुमाई। “तो अर्ज किया है.....”

“इर्शाद” सबने साथ दिया।

“अर्ज किया है कि....”

“सबको जो आती है.....”

“क्या कहने...”

“सबको जो आती है हमें वो चीज नहीं आती..”

“सबको जो आती है हमें वो चीज नहीं आती”

“बहुत सोचा” “मगर कमबख्त, हमें तमीज नहीं आती”।
 “क्या बात है तमीज नहीं आती..... बहुत बदतमीज हो
 यार.....” सत्तूमराज ने पॉइंट पकड़ा।
 “कोई बात नहीं भाई..... तमीज अभी से आ गई तो बुढ़ापे
 तक क्या आएगी” सुनील ने निष्कर्ष निकाला।
 सब ठहाके लगाकर हँसने लगे।
 “चलता हूँ दोस्तों” मैं चेयर से उठ गया। “दुकान जाना है”
 “हाँ.... हमको भी.... दुकान नहीं घर जाना है” मिश्रा जी
 चल दिये। “जाते-जाते हम भी कुछ सुना दें”
 “जरूर मिश्रा जी” छोटू बोला।
 “कहते हैं” “राह तुम चुनना सही, भीड़ में खोना नहीं...”
 “क्या बात..... क्या बात”
 “राह तुम चुनना सही, भीड़ में खोना नहीं।
 जिंदगी तो झंड है, हार कर रोना नहीं।
 “अब्रुत” मेरी हिंदी बाहर आई।
 “अब मेरी बारी” “छोटू बोला।” तो अर्ज किया है कि
 “सुना है मोहोबबत में लोग शायर हो जाते हैं”
 “सही सुना है”
 “आगे तो सुन”
 “सुना है मोहोबबत में लोग शायर हो जाते हैं।
 मोहोबबत अगर टाइम पास हो तो लोग लायर हो जाते हैं”
 “सही बात है”
 “लायर मतलब”
 “मतलब झूठे..... बेईमान”
 “अच्छा है”
 बातें खत्म हुईं। “सबके सब शायर बन गए हैं” उस
 मुलाकात की अंतिम लाइन थी।



19 दिसंबर 2015

आज छोटू की सुबह जल्दी हो गई। उसके मन में खुशी की लहर दौड़ रही थी। उसे अपने दोस्तों की वो सारी बातें याद आ रहीं थी जो कल चाय की चुस्की लेते हुए कैफे में हुई थी।

छोटू और रोहित समंदर के किनारे खड़े दूर से ही उसकी गहराई का अंदाज़ा लगा रहे थे। छोटू बेवजह मुस्कुरा रहा था।

“क्यों आज बड़ा लहरा रहे हो” मैंने छोटू को देखकर कहा।

“हाँ” छोटू बोला। “कल की बातें याद आ रही हैं”

अचानक मेरा मोबाइल बज उठा। “जी सर.... ओके..... तैयार रहूँगा.....” मैंने मोबाइल पर कहा।

“कल सुबह नौ बजे तैयार रहना” मैं जाने लगा।

“क्यों”

“सवाल बहुत करते हो तुम कह दिए तैयार रहना बस” मैं वहाँ से चला गया। छोटू “सरप्राइज” की उम्मीद में वहीं खड़ा रहा।



शाम के करीब सात बज रहे थे। छोटू बीच पर टहल रहा था। उसने सोचा कॉफी पी जाये। छोटू के कदम बीच पर बने कैफ़ेटेरिया की तरफ बढ़ने लगे। कैफ़े पहुँचा ही था कि सामने से एक कार आई छोटू के सामने आकर रुक गई। इत्तेफाक कहो या किस्मत.. ये परी थी।

कार का गेट खुला। मेडम जी बाहर आई और छोटू पर बरस पड़ी। “क्या आज भी मरने का इरादा है”

“मरने के लिए मेरी ही गाड़ी मिलती है हमेशा तुम्हें”

“सॉरी” छोटू के मुँह से ये शब्द सुनकर परी को अजीब सा लगा।

“ओ.... मेडम यहाँ कहाँ नो पार्किंग में घुसी जा रही हो” वहाँ खड़े गार्ड ने परी की अच्छी खबर ली।

“नये आये हो क्या मैं यही पार्क करती हूँ कार”

“अरे नहीं गार्ड जी” छोटू बोला। “मैं ही गलत जगह पर खड़ा हूँ और गाड़ी के सामने भी जान बूझकर आया हूँ गलती मेरी है” हर आदमी की तरह छोटू ने निष्कर्ष स्वरूप अपनी गलती मान ली।

“सो सॉरी” परी ने गाड़ी बैक की।

कैफे में आयरा रिजर्व जगह पर जा कर बैठ गयी। छोटू हँसने लगा। “ये तो पहले से ही बुक है”

परी ने उसे घूर कर देखा जैसे उससे बड़ा वेबकूफ इस पूरी दुनिया में न हो। “यह मेरे लिए ही बुक है” परी का जबाब था। “मैं हर संडे को यहां आती हूँ”

छोटू भी सामने की चेयर पर आकर बैठ गया। छोटू अपनी वेबकूफी पर चुप था।

“तुम मेरा पीछा क्यों कर रहे हो” परी ने फिर सवाल किया।

“कुछ समझाना है”

“क्या”

“उस दिन रियल में क्या हुआ था”

“मुझे नहीं जानना”

“इतनी नाराजगी भी अच्छी नहीं मजबूरी भी समझो”

“बातें मत बनाओ” परी ने उसे घूर कर देखा। “अब तुम ये मत कहना कि इस के पीछे भी एक कहानी है”

“हाँ.... है मगर....” छोटू चुप हो गया।

“मगर क्या..... तुम समझोगी नहीं यही न” परी का गुस्सा बढ़ता जा रहा था।

“चलो चेंज दी टॉपिक” छोटू ने बात बदली। “मम्मी पापा कैसे हैं तुम्हारे”

परी चुप रही। उसके मुँह में ताला लग गया। दोनों के बीच एक सन्नाटा छा गया। खामोशी का एक नया रंग दोनों के बीच देखने को मिला। बस समंदर का पानी किनारों से टकरा रहा था। लहरों की आवाज़ तेज़ थी। छोटू से रहा नहीं गया। उसने चुप्पी तोड़ते हुए कहा “चुप क्यों हो गई कुछ तो बोलो”

“कुछ नहीं”

“कुछ तो.....” छोटू ने फिर पूछा। “क्या हुआ.... कुछ तो बताओ.... मुझ पर विश्वास कर सकती हो”

“विश्वास.... किसी का भी हो चाहे बड़े से बड़े आदमी का हो या फिर टुच्चे से टुच्चे आदमी का..... बड़ी मुश्किल से मिलता है।

“एक चांस दे सकती हो”

परी हँसी। “जो मुझे उस समय छोड़कर जा सकता है जिस समय मुझे उस की सबसे ज्यादा जरूरत थी उस पर विश्वास कैसे करूँ”

“मुझे माफ़ कर दो यार.... मैं मजबूर था”

“कल तुम मजबूर थे आज मैं मजबूर हूँ” परी ने नज़रे फेर ली। “उस दिन तुम तो चले गए थे मगर जब मुझे होश आया तो देखा मेरी लाइफ बिल्कुल बदल गई थी। भाई मामा के यहाँ चला

गया। मेरी बेस्टफ्रेंड आयशा के पापा का ट्रांसफर दूसरे शहर में हो गया। मैं बिल्कुल अकेली हो गई”

“मैम आपकी कॉफी” वेटर कॉफी लेकर आया। “सर आप क्या लेंगे”

“सर कुछ नहीं लेंगे परी बोली।” “एक्चुली सर सात बजे के बाद पानी के अलावा कुछ नहीं लेते” परी मुस्कुराई।

“सर कैफे के बाहर वाटरकूलर लगा है वहाँ से आप पानी पी सकते हैं” वेटर ने बड़ी शांतिपूर्वक कहा। परी जोर-जोर से हँसने लगी।

“थैंक्यू मेम” छोटी सी स्माइल देकर वेटर वहाँ से चला गया।

“तुम्हें गुस्सा नहीं आया”

“बिल्कुल नहीं..... कम से कम तुम हँसी तो” आयरा ने कॉफी खत्म की ही थी उसका फ़ोन बज उठा। “जी..... बस घर आने वाली हूँ” परी उठकर बाहर चली गई।

“कहाँ जा रही हो”

“कहीं भी जाऊं तुम्हें मेरी कब से परवाह होने लगी”

“परवाह नहीं होती तो सॉरी क्यों बोलता”

“मुझे अभी जाना पड़ेगा” परी तेज़ी से चली गई।

छोटू भी कैफे से निकल कर सड़क पर आ गया। जब में हाथ डाले गाना गाते हुआ घर जाने लगा। गलियों से कुत्तों के भौकने की आवाजें उसे डरा रहीं थी। फिर भी चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कान लिए छोटू धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। वो सिर्फ अपने घर की तरफ नहीं बढ़ रहा था बल्कि अपनी मंजिल की ओर कदम बढ़ा रहा था। उस मंजिल की ओर जिसका न तो निशान दिख रहा था न ही कोई रोशनी की किरण बस दूर-दूर

तक अंधेरा ही नज़र आ रहा था सिर्फ अंधेरा.....
एक गहरा काला अंधेरा..... सिर्फ अंधेरा



सक्सेस का गाजर

20 दिसंबर 2015

सुबह का सूरज अपनी मंजिल की ओर बढ़ रहा था। उसकी किरणें पर्दे चीरती हुई छोटू के चेहरे पर पड़ रही थीं। प्रातः काल की वेला अपूर्व लावण्य को बिखेरे दुनिया के कोने-कोने में प्रस्थान कर रही थी। चिड़ियों की चहचहाहट भी सुबह होने का आगाज कर रही थी। छोटे बिस्तर पर पड़ा-पड़ा कल शाम को परी से हुई बातों के बारे में सोच रहा था।

छोटू पलंग से उठा और सामने के परदे खोल दिए। उसके चेहरे पर एक अजीब सी मुस्कान थी जैसे अब से सब कुछ सही होने वाला है। बाथरूम में बैठे-बैठे फिर से कहीं किसी की यादों में खो गया था। यही वो जगह है जहां खुले विचार आते हैं क्योंकि उस समय आदमी भी खुला रहता है वहां कोई दूसरा ऑप्शन भी नहीं रहता। वहां से बाहर जा भी नहीं सकते और वहां कोई आ भी नहीं सकता इसलिए तो उसका नाम संडास रखा है सुख शांति का वास..... उसे कहा संडास.....

खैर,

.....बहुत देर हो गई छोटू अभी तक बाथरूम से बाहर नहीं निकला। दादी का सबर टूट गया।

“नींद लग गई क्या?” दादी की नीचे से आवाज आई।

“नहीं दादी बस दो मिनिट”

छोटू दस मिनट में तैयार हो गया। एकदम जेंटल मैन बनकर नीचे आया और जूते पहनने लगा। भैया को बैठा देख संस्कृति चाय बनाने चली गई। दादा अखबार पढ़ रहे थे उनका ध्यान छोटू पर नहीं गया बस इतना पूछा “कहीं जा रहे हो क्या?”

“आज थोड़ा काम है रोहित के साथ जा रहा हूँ”

“अच्छा सुनो....” दादा ने अपने जेब से कुछ पैसे निकाले।
“लौटते समय घर का राशन ले आना”

“जी” छोटू ने पैसे लिए और घर के बाहर चला गया। मैं सामने से ही आ रहा था।

“जल्दी चल हम लेट हो रहे हैं” मैंने बाइक रोकी।

“कहाँ जा रहे हो” दादी की आवाज आई।

“मुझे जाना है दादी आकर बताऊंगा” मैंने बाइक तेज़ी से आगे बढ़ा ली।

“कहाँ गए भैया?” संस्कृति चाय लेकर आई।

“वो तो चला गया रोहित के साथ” दादी बोली।

“आपने बताया नहीं आज मुझे गोल्ड मेडल मिलना है” उसने कहा।

“बताती मगर सुनता तब न... जल्दी जाने की पड़ी थी” दादी अपने काम में लग गई।

संस्कृति ने चाय वहीं रखी और छत पर कपड़े सुखाने चली गई।



“आज कुछ खास बात है क्या” छोटू ने पूछा।

“क्यों?”

“आज तेरे बाप ने तुझे बाइक दे दी इसलिए पूछा”

“नहीं यार, ये तो मम्मी की कृपा है पापा तो बुआ को लेने गए हैं उनके शहर” मैं मुस्कराया।

कुछ देर बाद हम दोनों एक बड़े से ऑडिटोरियम में पहुँचे। वहाँ लोगो की बड़ी सी भीड़ किसी का इंतज़ार कर रही थी।

कुछ मिनट गुजरे। स्टेज की लाइट जल उठी। ऑडिटोरियम में जोरों से हूटिंग होने लगी। कोई सीटी बजा रहा था तो कोई तालियाँ....

छोटू ने नज़रें घुमाई तो देखा एक सूट-बूट पहने आदमी उसी भीड़ से निकल कर सामने आया और भीड़ को संबोधित करने लगा।

“अब आपके सामने आ रहे हैं

“मोटिवेशनल स्पीकर एंड आंत्रप्रेन्योर मिस्टर जीत सक्सेना” जोरों से अनाउंसमेंट हुई।

“ये सुनने के लिए तू मुझे यहां लाया है” छोटू ने टोन कसी।

“हाँ”

“बकवास”

“क्यों”

“रटी-रटाई चीजें बोलते हैं”

“तेरे हिसाब से लोगों को क्या इन्स्पायर करता है”

“जो दिल से निकले.... अंदर से निकले.... दिल से निकली बातें ही लोगों को इन्स्पायर करती हैं और वो तभी निकलेगी जब उस चीज का अनुभव होगा”

मैंने उसे घूर कर देखा। “ये हुई न ज्ञानियों वाली बात”

“हमें सक्सेस फुल बनना है.... हमें सक्सेस फुल बनना है.... हमें सक्सेस फुल बनना है.... हमें सक्सेस फुल बनना है....” स्टेज से ये बातें बार-बार दोहराई जा रहीं थीं।

“सक्सेस का गाजर दिखा-दिखा के इन लोगों ने आम जनता को गधा बना दिया है”

“तुम क्या मानते हो सक्सेस को” रोहित ने पूछ लिया।

“बोला न..... बकवास”

बैठे-बैठे 40 मिनट ही गुजरे थे। रोहित का मोबाइल बज उठा।

“हाँ..... रक्षा बोलो”

“आपके साथ छोटू भैया हैं क्या”

“हाँ”

“संस्कृति को बात करनी है उनसे”

“एक मिनट रुको”

मैंने छोटू को मोबाइल दिया।

“हाँ भैया..... मैंने आपसे कहा था आज आपको मेरे साथ कॉलेज चलना है मुझे गोल्ड मेडल मिलना है लेकिन आप बिना बताए चले गए” संस्कृति ने डांट लगाई।

“Ohh shit मैं तो भूल ही गया”

“अब तो याद आ गया न”

“हाँ... तू कॉलेज पहुँच मैं आता हूँ” छोटू ने मोबाइल रोहित को वापिस दे दिया।

“अरे सुनो भैया” संस्कृति कुछ बोलने वाली थी मगर कॉल डिस्कनेक्ट हो गया।

“सुन असाटी चलेगा मेरे साथ” छोटू बोला।

“कहाँ”

“कहीं भी तू बस बता चलेगा या नहीं”

“देख पैसे लगाकर यहाँ आये हैं पैसे वसूल हो जाने दे फिर चलते हैं”

“तू यहाँ पैसे वसूल कर मैं चला” छोटू भीड़ को चीरते हुए ऑडिटोरियम से बाहर निकला।

बस स्टॉप पर बस का इंतजार करते-करते बहुत देर हो गई। तभी सामने से एक बाइक आकर रुकी।

“चल बैठ” ये मैं था।

छोटू मुस्कराया। “आ गया बे असाटी पहले इतना फुटेज क्यों खा रहा था तू”

“कहते है अर्जेंट और इम्पोर्टेंट चीजों में से अर्जेंट चुनना चाहिए” मैं फुसफुसाया।

“मतलब मैं अर्जेंट हूँ असाटी” हम दोनों हँस पड़े।

उस दिन मैं उसे नहीं बता पाया था कि जब वो मेरे साथ बिना सोचे बिना समझे कहीं भी साथ चल सकता है तो मैं उसके लिये इतना भी नहीं कर सकता।

उस दिन जब हम लोग पहुँचे तब पूरा कार्यक्रम खत्म होने की कगार पर था। हम दोनों पीछे ही कुर्सियों पर बैठ गए।

“अब अंतिम अध्यक्षीय भाषण के लिए आदरणीय शिक्षा मंत्री जी से निवेदन करता हूँ कि वो आएँ और हमें मार्गदर्शित करें” सभा के एंकर ने ये घोषणा की।

“सम्माननीय मंच और प्यारे बच्चों समय बहुत हो चुका है मैं ज्यादा नहीं बोलूंगा.....

पहले तो उन बच्चों को बधाई जिन्हें आज गोल्ड मेडल प्राप्त हुआ। आप लोग हमारे देश का भविष्य हैं। आप हमारे देश की आन-बान और शान हैं अगर आप पढ़ेंगे तभी तो देश बढ़ेगा”

छोटू को नींद आने लगी। “दो मिनिट कहकर दो घंटे लेंगे ये”

“वही घिसा पिटा भाषण” मैंने उसका साथ दिया।

“मैं इस थोड़े से समय में छोटी सी कहानी सुनाना चाहता हूँ जो वास्तविकता पर आधारित है। एक बार मैं ट्रेन में सफ़र कर रहा था। एक सज्जन व्यक्ति सूट-बूट पहन कर बैठे थे। एक बच्चा चाय लेकर आया और इत्तेफाक से उन भाई साहब से टकरा गया चाय से उन सज्जन के कपड़े खराब हो गये। वो भाईसाब आग बबूला हो उठे और फिर उस बच्चे को जोर से लात मार दी।

सारी सभा टकटकी लगाकर कर शिक्षा मंत्री महोदय को देख रहे थे।

“तुम्हें पता है कितना कीमती सूट है” वो चिल्लाये। उस बच्चे के मुंह से खून आ गया। मेरे पास में बैठे एक सज्जन व्यक्ति सब देख रहे थे। उनके साथ उनका बच्चा भी था करीब 12 साल का। उन्होंने उस बच्चे को उठाया। कुछ पैसे दिए और जाने के लिए कहा। उस समय उन सज्जन व्यक्ति ने एक बात कहीं थी वो मैं आपको बताना चाहता हूँ।

उन्होंने कहा था कि अगर शिक्षित लोग ऐसे होते हैं तो इससे भले हम अनपढ़ ही सही.... सोचा था अपने बेटे को पढ़ाऊंगा मगर अब तो उसका अनपढ़ होना ही अच्छा लग रहा है। इसके बाद वो अगले स्टेशन पर उतर गए।

दोस्तों!! साथियों!! उस दिन मेरे मन में ये विचार आया था कि हम कितने शिक्षित है अगर हमारी शिक्षा उन सूट बूट पहने सज्जन की तरह है तो ये शिक्षा किस काम की.....आप अपनी जिंदगी के उस मुकाम पर हैं जहाँ आप ही निर्णय करेंगे कि आप को क्या करना है..... आप भविष्य हो देश का..... सभा ने तालियों से उनका स्वागत किया।

सभा समाप्त हुई। दो मिनिट ही लिए थे सभा के अध्यक्ष ने। सबको घर जाने की जल्दी पड़ रही थी। छोटू ने देखा सामने से सोमिल जैन “सोमू”।45

संस्कृति आ रही थी। उसकी आँखों में गुस्सा था। मगर छोटू की नज़र उसके साथ आ रही आयरा पर थी। मुझे कोई आश्चर्य नहीं था।

“भैया आप लेट क्यों हो गए थे” संस्कृति ने गुस्सा निकाला।

“कोई मजबूरी होगी” आयरा बोली।

“हाँ..... नहीं... नहीं” छोटू के बचने के प्रयास व्यर्थ थे क्योंकि अब संस्कृति का साथ देने के लिए उसकी होने वाली भाभी जो साथ थी।



सब सफ़र में हैं

भयानक रात का तीसरा पहर, दादा के खर्राटों से छोटू सो नहीं पा रहा था। गली में कुत्तों के भौंकने की असहनीय आवाजें उसे गुस्सा दिला रही थी। वो कर भी क्या सकता था। कुत्ते के सामने हम भी तो भौंकना शुरू नहीं कर सकते न। रात हुई है तो सुबह भी होगी ये सोच कर छोटू अपने कानों पर हाथ रखकर सोने की कोशिश करने लगा।

धीरे-धीरे रात, रात को अपने में ओढ़ते सुबह की ओर बढ़ने लगी.....



21 दिसम्बर, 2015

सुबह का सुंदर नजारा, उत्साहित सूरज बादलों को चीर कर अपना तेज दुनिया के कोने कोने में फैलाने के लिए बेताब था। समंदर का मिजाज आज खुशमिजाज था। तेज लहरों के कारण समंदर का पानी अपने किनारों से टकराकर फिर उसी में समा जाता। हवाएं सन्न-सन्न करके छोटू के कानों के पास से गुजर रही थीं। मंद-मंद हवा के झोके वहां बैठे कई जोड़ों को राहत दे रहे थे। काफी हरियाली वहां नज़र आ रही थी।

छोटू मन ही मन कुछ बातों को दबाए तेजी से रास्ते में आसिफ चाचा को सलाम ठोकते हुए एक आलीशान मकान के बाहर खड़ा हो गया।

“कहाँ घुसे जा रहे हो भाया” एक मोटा सा हष्ट-पुष्ट पहलवान टाइप सिक्योरिटी गार्ड ने ब्रेक लगाकर पूछा।

छोटू ने नज़रें घुमाई। “शेखर अंकल से मिलना हैं” छोटू ने बड़ी विनम्रता से पूछा।

“बच्चे तुमने आने में देर कर दी” गार्ड ने बोला।

“क्यों लुढ़क गये क्या” गार्ड छोटू के पास आकर उसे घूरने लगा।

“क्या बोले तुम” छोटू की कालर गार्ड के हाथों में थी।

“क्या बोला...तुमने आने में देर कर दी ये आप किसी से भी बोलोगे तो कोई भी यही समझेगा की कुछ बुरा हुआ

“देर कर दी मतलब विदेश गये हैं वो फैमिली के साथ”

“पिछली बार भी गये थे विदेश”

“जानते हो विदेश क्या कहलाता है”

“क्या कहलाता है”

“जहाँ देश नहीं है वो विदेश कहलाता है समझे बुढ़बक”

“समझे”

“बेटा अब जो है निकल लो यहाँ से नहीं तो घुमा के ऐसा गाल पर खीचेंगे कि अतरंगी मूतोगे”

“अच्छा” छोटू चुपचाप वहाँ से जाने लगा।

शेखर साब उसके पापा के दोस्त थे। उसके पापा ने अपने दोस्त के साथ कंपनी खड़ी की थी। दोनों ने आधा-आधा पैसा भी लगाया था। मगर उसके पापा के जाने के बाद शेखर अंकल ने भी छोटू और उसके परिवार से किनारा कर लिया। छोटू तो

इसी विश्वास के साथ वहाँ गया था कि उनसे कुछ मदद मिल जाएगी मगर हुआ उल्टा.....

छोटू के कदम डगमगाने लगे। चलते चलते वो बहुत दूर निकल आया था। रास्ते में उसे एक कब्रिस्तान दिखा। वहाँ कब्रिस्तान के बाहर छोटू बैठ गया। कब्रिस्तान के बाहर बड़े अक्षरों में एक ज्ञान की बात लिखी थी।

“आप किसी के सहारे मत रहो, जिसके जाने के बाद आप बेसहारा हो जाओ”

“का देख रहे हो बेटा” एक अंकल उसके पास आकर बैठ गये।

“आप कौन”

“भगवान का दोस्त” उन अंकल ने जबाब दिया।

“मतलब”

“मेरे लोगों की लाशों को यहाँ कब्रिस्तान में खाक करता हूँ” उन अंकल के चहरे पर एक स्माइल थी।

“अच्छा मजाक है” छोटू बोला।

“मजाक नहीं काम है”

छोटू वहाँ से जाने लगा। “कहां जा रहे हो” अंकल ने टोका।

“आपसे मतलब”

“मतलब तो नहीं है मुझसे लेकिन मंजिल यही है सबकी”

“बात उपर से गई मेरे”

“मतलब ये जो लोग देख रहे हो ये सब सफ़र में हैं और इनकी मंजिल पर मैं और तुम बैठे हैं”

“कैसे”

“ये सब आयेंगे मर के इस कब्रिस्तान में खाक होने” अंकल के चेहरे पर एक बूढ़ी हंसी थी।

सोमिल जैन “सोमू” | 49

आंखों में आंसुओं का समंदर लिए भटकता-भटकता फिर उसी समंदर की तरफ छोटू मुड़ गया।

रविवार का दिन, किनारे पर लोगों का जमावड़ा धीरे-धीरे बढ़ रहा था।

“शायद आज उससे मुलाकात हो जाये” छोटू ने मन ही मन सोचा।

समंदर के किनारे बैठा छोटू कई घंटों से किसी का इंतजार कर रहा था। शाम का समय, ठंड के कारण उसकी नाक जम गई थी। उसकी आंखें बड़ी बेसब्री से दूर-दूर किसी को देखने की कोशिश में लगी थीं।

इंतजार खत्म हुआ। सामने से एक कार आकर रुकी। कार का गेट खुला। डॉक्टर आयरा बाहर निकली। जब वो कैफे के अंदर पहुँची तो उसने देखा छोटू उसके रिजर्व स्थान पर बैठा था। वेंटर ने उसे बताया कि बार-बार मना करने पर भी छोटू वहां से नहीं उठा।

“तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई यहाँ मुझसे बिना पूछे बैठने की” परी ने अपना हैंड बेग टेबिल पर पटकवा।

“तुमसे मिलना था इसलिए बैठा हूँ एक घंटे से” छोटू ने बड़ी मासूमियत से कहा।

“किसने इजाजत दी तुम्हें”

“सॉरी..... मेरी गलती है तुम फेमस डॉक्टर बन गई हो तो मुझे तुमसे पहले अपॉइंटमेंट लेना चाहिए था”

“हाँ”

दोनों चुप हो गए। “एक बात कहूँ बुरा तो नहीं मानोगी” छोटू बोला।

“बोलो”

“रहने दो बुरा मान जाओगी”

“नहीं मानूंगी..... अब बोलो भी”
“रहने दो फिर कभी बता दूँगा” छोटू ने बत्तीसी दिखाई।
“बताना हो तो बताओ नहीं तो भाड़ में जाओ” गुस्से से परी की आँखे बड़ी दिखने लगी।

“चलो बता देता हूँ” छोटू फिर बोला।
“मुझे नहीं सुनना.....” परी ने फिर कहा।
“मैं बता रहा हूँ न अब..... तो सुनो..... अगर तुम.....”

“अगर मैं.....”
“अगर तुम ऐसे एक्सप्रेशन मरीजों को भी देती होगी तो मरीज बिना इलाज के ही मर जाते होंगे” छोटू हँस पड़ा।
“व्हाट..... मैं एक डॉक्टर हूँ और मुझे पता है किससे कैसे बात करनी है..... अंडरस्टैंड...”

“बुरा मत मानना” छोटू बोला।
“मैं क्यों बुरा मानूँ”
“अच्छा एक और बात सुनोगी....” छोटू ने फिर बात छोड़ी।

“बिल्कुल भी नहीं” परी ने दाँत निपोरे। “अगर तुम्हारी बकवास हो गई हो तो कॉफी आर्डर करूँ”

“जी जनाब”
परी ने उसे घूरकर देखा। “आवारापन छोड़ो ओर कुछ काम धाम करो” परी कॉफी खत्म करके जाने लगी।

“मैं आवारा नहीं हूँ..... माना नौकरी नहीं है मेरे पास मगर मुझे विश्वास है कि मुझे नौकरी जरूर मिलेगी”

परी को जिसका इंतज़ार था वही हुआ। “हाँ बस आने वाली हूँ घर” परी ने फोन कट किया और तेज़ी से कैफ़े से बाहर चली गई।

छोटू फिर उसे ये नहीं बता पाया उस रात क्या हुआ था। फिर छोटू की हालत समुद्री जहाज के ऊपर बैठे कौए की तरह हो गई थी कोई पता बता दे हमें कहां जाना है..... कितनी भी दूर चला जाये वापिस उसे उसी जहाज पर आना है।

उसने भी अपने कदम बढ़ाए। कैफे से बाहर निकला और घर के लिए चल पड़ा। बेपरवाह..... बेगानी सड़क पर आवारा लोगों की तरह वो भी आवारा बन गया।



जिन्दगी में “स्ट्रगल”

31 दिसंबर, 2015

“स्ट्रगल बिना जिंदगी, जिंदगी नहीं... और किसी की नहीं.....

“सच हम नहीं सच तुम नहीं सच है सतत संघर्ष ही”

कुछ सालों पहले ये पंक्तियां पढ़ी थीं क्योंकि वो हमारे नवमी क्लास के कोर्स में थीं। उस वक्त ये कविता बस पड़ डाली थी मगर उसका मतलब अब समझ आ रहा है। शायद कवि ने इन पंक्तियों में अपने पूरे जीवन का सार भर दिया है। आज का सच भी यही है।

हर आदमी अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में कहीं न कहीं संघर्ष करता है चाहे वो अमीर हो या गरीब सब अपनी स्टाइल से स्ट्रगल करते हैं। अमीर, अमीर बने रहने के लिए स्ट्रगल करता है और गरीब अमीर बनने के लिए स्ट्रगल करता है। मेरे दोस्त की जिंदगी भी इन्हीं संघर्षों से होकर गुजर रही थी। जज्बातों से भरा उसका मन, चेहरे पर रूखापन, खुद से खफा अपनी मंजिल से बेखबर खुली आंखों से उड़ान भरने के सपने देख रहा था।

छोटू की नींद खुली। उदासी भरा चेहरा लिए लापता सा, पता नहीं वो किस तरफ अपने कदम बढ़ा रहा था। भागता जा रहा था बस भागता..... भागता...

वो उन सपनों में खो गया जो उसने खुली आँखों से देखे थे। बन्दरों की आवाज से अचानक उसकी नींद टूट गयी। सपना सपना ही रहा..... हकीकत सामने थी।

कुछ देर बाद छोटू बाथरूम से बाहर निकला। मोबाइल पर रोहित के कई सारे मिसड कॉल पड़े थे। छोटू ने उन कॉल्स पर ध्यान न देते हुए फटाफट तैयार हो गया।

“अभी मुझे काम से बाहर जाना है थोड़ी देर बाद वापिस आकर नाश्ता करूँगा” छोटू ने सूज पहनते-पहनते दादी को आवाज लगाई।

घर से बाहर निकलते ही छोटू ने रोहित को कॉल करने के लिए अपना जेब टटोला मगर उसमें मोबाइल नहीं था।

“मोबाइल तो ऊपर अटारी पर ही छूट गया” ये सोचकर छोटू आगे बढ़ गया। छोटू, मेरे घर के सामने खड़ा था और गौर से मेरे घर के दरवाजे पर लगे ताले को देखने लगा।

छोटू ने तेज़ दौड़ लगाई और भागता भागता अपने घर पहुंचा। अटारी पर पहुंचते ही मोबाइल उठाया और देखा..... 16 मिसड कॉल..... shit.....

छोटू ने कॉल बेक किया। उसे चिंता होने लगी। पहले कभी मैंने उसे इतने कॉल्स नहीं किये थे।

“कब से तुझे कॉल कर रहा हूँ तू जबाब ही नहीं दे रहा” मैं अभी रो रहा था।

“सॉरी यार..... मैंने मोबाइल देखा नहीं था..... अच्छा बता क्यों कॉल किया”

“कॉल क्यों किया था ये तुझे मिलने पर बताऊंगा.....”

“तेरे घर गया था वहाँ ताला लटका है”

“यही बताने के लिए कॉल किया था..... तू बस हॉस्पिटल आजा अभी.... मैं भी यहीं हूँ हॉस्पिटल में”

“क्यों..... कुछ सीरियस है”

“हाँ यार.... इधर आएगा तो खुद समझ जाएगा” मैंने कॉल डिस्कनेक्ट किया।

छोटू तेजी से हॉस्पिटल की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए दूसरी मंजिल पर पहुँचा। छोटू ने आस-पास अपनी नज़र दौड़ाई। कुछ दूरी पर बहुत से लोग खड़े थे। उसे मेरी की बुआ दिखी। फिर मैं नज़र आया। छोटू दौड़ते दौड़ते मेरे पास पहुँचा। मेरा सारा परिवार वहाँ मौजूद था।

पास आते ही मैं छोटू के गले लग गया। मेरी आँखें आज भरी थीं। आज मैं रो रहा था। छोटू को लगा कुछ तो गड़बड़ है मगर अनुमान यकीन में तब बदला जब उसने मुझसे बात की।

हम दोनों बेंच पर बैठ गए। हमारे सामने आईसीयू रूम का दरवाजा था।

“पापा कहां हैं तेरे... यहाँ इतने सारे लोग क्यों इकट्ठा हुए हैं” छोटू का पहला सवाल था।

“सामने..... आईसीयू रूम में” मैंने आँसू पोछे।

“क्या हुआ उन्हें”

“पापा का एक्सीडेंट हो गया यार”

“अंकल का एक्सीडेंट ही तो हुआ है... इतनी सी बात पर तू इतना रो रहा है”

“ये इतनी सी बात है” मैंने उसे घूर कर देखा”

“हाँ यार..... एक्सीडेंट ही तो हुआ है मेरे तो नहीं”

“तू कहना क्या चाहता है... तब रोऊँ जब वो मर जाते”

“नहीं यार..... मजाक का रहा हूँ”

“तुझे अभी भी मजाक सूझ रहा है” मैंने छोटू को गुस्से से देखा। “मेरे पापा आईसीयू में हैं और तुझे मजाक सूझ रहा है”

“इतना सीरियस क्यों हो रहा है तू”

“तो क्या करूँ..... हँसू, नाचूँ, कॉमेडी सीरियल देखूँ”

“वो बात नहीं है रोहित” छोटू ने मेरे कंधे पर हाथ रखा।
पहले तू ही तो कहता था मेरा बाप ऐसा है मेरा बाप वैसा हैं....मर जाए तो अच्छा है...साला खड़ूस....और पता नहीं क्या क्या....”

“तो..... वो बात अलग थी छोटू”

“तो अब तुझे उनसे मुक्ति मिल जाएगी फिर रो क्यों रहा है”

“ऐसी बात नहीं है छोटू” मैंने एक दफा छोटू के मासूम से चहरे को देखा।

“तो फिर क्या बात है रोहित..... बताओ मुझे... तेरी भाषा क्यों बदल गई..... कल तक अपने बाप को बाप कहने वाला आज पापा बोल रहा है”

“मैं उन्हें कुछ भी बोलूँ मगर हैं तो वो मेरे पापा है” मैं चुप हो गया। मुझे छोटू की इन बातों पर बहुत गुस्सा आ रही थी। “गजब यार..... इस वक्त तेरे दोस्त को तेरी सख्त जरूरत है और तू ऐसी बातें कर रहा है। मैं मानता हूँ कि उनको मैंने बहुत बुरा कहा। वो मुझे डांटते हैं मारते हैं बस इसलिए क्योंकि वो मेरा बुरा नहीं चाहते। आज मैं इतना काबिल बन पाया हूँ तो बस उनकी वजह से.....” मैं फिर से चुप हो गया। दूर दूर तक कोई आदमी दिखाई नहीं दे रहा था।

“वो भी मुझसे प्यार करते हैं मेरी परवाह करते हैं” रोहित ने फिर बोलना शुरू किया। “बस कुछ लोग होठों से बता देते हैं और कुछ नहीं बता पाते। तुमने उनको मुझे डांटते हुए ही देखा है उनका बागबान रूप नहीं देखा। बाहर से कठोर दिख रहे आदमी को देख कर हम ये नहीं बता सकते कि वो कितना अच्छा है या कितना बुरा है। कुछ मजबूरियाँ, कुछ जिम्मेदारियाँ आदमी को कठोर बना देती हैं मगर वो कमजोर नहीं होता। गुस्सेल दिखता है

मगर मजबूत रहता है अपने वादों पर.....” मैं आगे कुछ बोल नहीं पाया मेरा गला रुंध गया।

छोटू ने उसके मेरे कंधे पर हाथ रखा मगर मैंने उसका हाथ अपने कंधे से हटा दिया।

“मैं भी किस पागल को समझा रहा हूँ जिसे बाप का प्यार ही नहीं मिला”

छोटू की नजरें झुक गईं। आँसू तो उसकी आँखों में भी आ गए।

“एक काम कर” मैंने गुस्से में कहा। “बेहतर होगा कि तू यहां से चला जा”

“सॉरी यार....”

“जाओ यहां से छोटू”

“एक बात कहूँ फिर मैं चला जाऊंगा” छोटू बेंच से उठ गया।” तेरे पापा का एक्सीडेंट हो गया और तू इतना रो रहा है फिर मेरी तो पूरी दुनिया उस आधी उम्र में उजड़ गई थी तो मुझे कितना रोना चाहिए” छोटू जाने लगा।

“चलता हूँ दोस्त..... Take Care.....”

छोटू दूसरी मंजिल से नीचे आ रहा था तभी उसे परी मिली।

“परी..... सुनो.....”

“बोलो.....”



समंदर का नज़ारा, पानी पर चमकती धूप, किनारे पर लोगों का जमावड़ा, लड़के-लड़कियों के जोड़े वहाँ की सुंदरता बता रहे थे। छोटू भी वहीं किनारे रेत पर बैठा था। किनारे का पानी बार-बार आकर उसके पैरों को गीला कर रहा था।

वहाँ की गीली रेत में उसने बैठे-बैठे लकीरों का ढेर खड़ा कर दिया। धूप बढ़ती जा रही थी। सुबह से उसने कुछ नहीं खाया था। भूख भी लग रही थी।

यहाँ समंदर के किनारे बैठा छोटू आस-पास पड़े छोटे-छोटे पत्थरों को पानी में फेंक रहा था। तभी अचानक पीछे से किसी का हाथ उसके कंधे पर पड़ा। उसने पीछे मुड़कर देखा तो एक लंबे बालों वाला बुजुर्ग, सफेद दाढ़ी, पुरानी सी टोपी, मेला कुचेला कोट पहनें उसके सामने खड़ा था। हालत देखकर पता चला रहा था जैसे कई दिनों से नहाया न हो और खाने को कुछ मिला न हो। आंखें बिल्कुल छोटी सी, चेहरे पर झुर्रियां ही झुर्रियां, जो ये बता रही थीं कि समय की मार से यह भी अछूते नहीं रहे हैं।

“आप कौन” छोटू ने उन्हें इग्नोर करते हुए पूछा।

“पत्थर क्यों फेंक रहे हो समुद्र में उसे भी दर्द होता है”

“अच्छा.... मुझे तो पता ही नहीं था” छोटू को हंसी आ गई। “मैंने सोचा लोगों को दूसरों के दुख से ज्यादा खुशी मिलती है तो हम भी समंदर में पत्थर फेक कर खुश हो रहे हैं”

“अच्छा... ऐसा भी होता है क्या...” कहते हुए वो अंकल उसके पास बैठ गए और छोटे छोटे पत्थरों को पानी में फेंकने लगे। ये वही अंकल थे जो उस दिन कब्रिस्तान के बाहर मिले थे।

“आप हैं कौन हमदर्द बनने का ज्यादा शौक है क्या”

“नहीं” उन अंकल का सीधा जबाब आया।

छोटू ने उनसे नज़रें घुमाई और फिर से समंदर निहारने लगा। धूप बढ़ रही थी इसलिए उसने घर जाने की सोची। “मैं वही हूँ बेटा जिसकी कीमत इस उम्र तक आते-आते जीरो हो जाती है” अंकल बोले।

“मतलब”

“भगवन का हेल्पर” अंकल थोड़ा मुस्कराए।
 छोटू चुप रहा। उसके पास बोलने के लिए कुछ नहीं था।
 “तुम्हारा नाम क्या है” अंकल ने पूछा।
 “कुछ नहीं.....” छोटू जाने लगा।
 “कुछ नहीं..... ये कैसा नाम है, नाम तो हमारे जमाने में
 हुआ करते थे..... राजा दीनदयाल.....”
 “लगतता है इसी बकबक से आप अकेले रह गये” छोटू
 बीच में ही बोल पड़ा।
 अंकल कुछ नहीं बोले। उन्हें बुरा लगा। चुपचाप नज़रें फेर
 लीं। छोटू समझ गया उन्हें हर्ट हुआ है। वो उन्हीं के पास बैठ
 गया।
 “सॉरी.....” छोटू बोला।
 “कोई बात नहीं.....आदत है इसकी” अंकल मुस्करा दिए।
 “क्या करते हो तुम”
 “कुछ नहीं”
 “कुछ नहीं मतलब.....बेकार हो”
 “बेकार मतलब”
 “हमारी भाषा मे बेकार मतलब बेरोजगार... निठल्ला”
 अंकल ने बेकार शब्द की विस्तृत व्याख्या की।
 “आपको कैसे पता चला”
 “सिंपल है यहाँ दो ही लोग बैठते हैं पहले वो जिन्हें कुछ
 काम नहीं ऐसे तुम और जिन्हें काम से आराम नहीं, काम में मजा
 नहीं वो यहाँ आराम करते हैं”
 “काफी अच्छा ज्ञान रखते हैं आप”
 “हाँ वो तो है आखिर कंपनी के सीईओ रहा हूँ”
 “मतलब”
 “मतलब... मजाक कर रहा हूँ....”

“अच्छा मजाक है” दोनों हँसने लगे।

“सुनो.... चाय पिलाओगे” अंकल ने बेसब्री भरी आंखों से छोटू को देखा।

“पिला देता अंकल जी मगर क्या करें इधर बने कैफे में एक चाय के 85 रुपये लगते हैं और आप समझ सकते हैं एक बेरोजगार आदमी की हालत....”

“समझ सकता हूँ तभी तो चाय यहाँ नहीं पास में टपरी है वहाँ 5 रुपये में कटिंग चाय मिलती है” अंकल के चेहरे पर एक अजीब मुस्कान थी।

“ठीक है फिर.....चलो” छोटू खड़ा हो गया और उनके साथ हो लिया।



शाम के 7 बज रहे थे। मैं और मेरा पूरा परिवार आईसीयू रूम में बैठा था। डॉक्टर आयरा रूम के अन्दर आई।

“अब कैसी तबियत है अंकल जी”

“ठीक है बेटा...”पापा ने बैठना चाहा मगर कोशिश बेकार रही।

“आप आराम करिये.....इसकी जरूरत है आपको” आयरा ने मुस्करा कर कहा। आयरा जाने लगी।” रोहित कुछ फॉर्मेलिटीज बाकी हैं तुम मेरे केविन में आ जाओ वहाँ बात करते हैं” कहकर वो चली गई।

मैं भी उससे बात करना चाहता था। उसे थैंक्यू कहना चाहता था क्योंकि उसने जो हेल्प की है वो कोई अपना ही कर सकता है। कुछ देर बाद मैंने आयरा के केविन के पास पहुंचकर दरवाजे को नोक किया।

“Yes.... come in” अंदर से आवाज आई। आयरा ने मुझे देखा।

“आओ रोहित.....बैठो” आयरा ने चेयर की तरफ इशारा करके कहा।

“Thank you very much pari”

“Welcome”

“वैसे परी बोलूं या डॉक्टर आयरा”

“परी बोलो.... इसमें अपनापन लगता है और अच्छा भी” परी मुस्कुराई।

“मतलब अपनेपन में अच्छा लगता है”

“वाह..... nice punch”

“धन्यवाद”

“हाँ... क्योंकि मुझे भी ओड लगता है जब अपना क्लासमेट मुझे परी की वजाय आयरा बुलाता है” हम दोनो हँसने लगे।

“और कैसा क्या चल रहा है”

“सब मजे में है” परी ने फ़ाइल उठाते हुए कहा। ऐसी क्या मजबूरी थी जो कॉलेज छोड़कर भाग गए थे”

“कहानी छोटी है मगर.....” मैं बात पूरी नहीं कर पाया।

“मगर क्या रोहित”

“एग्जाम के कुछ दिन पहले हम दोनों बात कर रहे थे। मेरे पापा उस दिन शहर में बनी दादा की दुकान पर जिस पर 3 साल से केस चल रहा था उसका निर्णय हमारे पक्ष में हुआ था। वो बहुत खुश थे। और उनने ये जगह छोड़कर शहर जाने की तैयारी भी शुरू कर दी। वहीं दुकान का काम चलेगा ये सब मैंने छोटू को बताया।

फ्लेश बेक

21 मार्च, 2011

“मतलब तू यहाँ से जा रहा है” उसने कहा।

“जाना तो पड़ेगा यार”

“तो जा न” छोटू ने अनमने ठंग में कहा।

“बुरा मत मान यार....”

“मैं बुरा क्यों मानूँगा.....” उसकी आवाज में चिड़चिड़ापन था।

“तो मैं जाऊँ”

“हाँ.....निकल और तुम लोग भूल मत जाना हमें” उस दिन छोटू ने कह तो दिया कि चला जा मगर क्यों मुझे लग रहा था कि उसे मेरी जरूरत है क्योंकि उस वक्त जिस दौर से वो गुजर रहा था उसके पास मेरे अलावा कोई नहीं था।

31 दिसंबर 2015

रोहित चुप हो गया। “फिर क्या हुआ तुम छोड़ आये उसे” परी बोली।

“हां”

“लेकिन.....फिर वो शहर कैसे आया”

“यही तो बात है हमारी दोस्ती की” रोहित को अब सारी बातें याद आ रही थीं। “अपने घर पहुँचते ही छोटू ने दादा दादी से कहा कि हम शहर चलते हैं वहाँ दादा का अच्छे से इलाज हो जाएगा। शहर में जो बुआ का घर खाली पड़ा है वहाँ रह लेंगे। बुआ फूफाजी विदेश में रहने लगे थे इसलिए उनका शहर वाला घर खाली पड़ा था। उसके दादा दादी तुरंत नहीं माने मगर जिस

रात दादा की तबियत बहुत ज्यादा खराब हो चली थी तो छोटू ने शहर आने का डिजीजन खुद लिया और सबको विश्वास दिलाया कि वो वहाँ पर अच्छी जॉब ढूँढ लेगा तो सबने हाँ कर दी। यहाँ आकर उसने कुछ बिजिनेस के कोर्स कर लिए”

“फिर”

“फिर क्या...वो कहाँ मेरा साथ छोड़ने वाला था आ गए हम साथ इस शहर में” मैं मुस्करा रहा था।

“मुझे बताना जरा भी जरूरी नहीं समझा तुम लोगों ने” परी ने सहमे हुए कहा।

“खैर छोड़ो, मगर अब फिर तुमने उसका साथ छोड़ दिया”

“मैंने.... मैंने कहाँ छोड़ा उसका साथ “

“पता है रोहित तुम कॉलेज से ही राइटर बनना चाहते थे। तुमने मुझे अपनी एक शोर्ट स्टोरी पढ़ाई थी याद है तुम्हें”

“हाँ”

“उस स्टोरी की वो लाइनें तुम्हें याद हैं”

“कौन सी”

“उस आदमी का साथ कभी मत छोड़ो जिसने तुम्हारा साथ तब दिया जब तुम्हारे साथ कोई नहीं था” आयरा चुप हो गई।

“याद है मगर.... उसने मेरा साथ कहाँ दिया..... अभी जब जरूरत थी तब अकेला छोड़कर चला गया।

“रोहित..... तुम्हारे पापा को ब्लड डोनेट उसी ने किया है.... छोड़कर वो नहीं उस दिन तुम जा रहे थे..... आज तुमने उसकी फीलिंग्स समझे बिना ही उसको जाने के लिए कह दिया...तुमसे अपनी फीलिंग्स नहीं कहेगा तो किससे कहेगा”

मैं चुप था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि अब मैं क्या करूँ। बस लग रहा था मैंने कुछ गलत किया है। “Shit.... यार” मेरे मुँह से निकला।

सोमिल जैन “सोमू”।63

“अभी देर नहीं हुई है” परी ने इशारा किया।

“शायद”

“मैं उसकी तरफदारी नहीं कर रही हूँ बस एक दोस्त के नाते कह रही हूँ। गलतफहमी मत पालो क्योंकि मैं उसका अंजाम देख चुकी हूँ”

“अभी कहाँ होगा वो”

“कॉल करके पूछ लो”

“हाँ”

“तुमसे मिलने के बाद छोटू मुझसे मिला था उसका और तुम्हारे पापा का ब्लडग्रुप सेम था इसलिए उसको मैंने ही ब्लड डोनेट करने को बोला था”

“मुझे उसके पास जाना होगा” रोहित बोला।

“तो जाओ फिर देर मत करो” परी ने आवाज ऊंची की।
“मैं उसे पसंद करती हूँ इसलिए तुमसे कह रहा हूँ उसे तुम्हारे जैसे दोस्त की जरूरत है उसे मना लेना”

आज पहली बार मेरी आँखों में छोटू के लिए आँसू थे। मुझे वही बात याद आ रही थी जो परी ने मुझे याद दिलाई थी। मैं इतना सेल्फिश कैसा हो गया।



मैं अपने पापा के पास बैठा था। मेरे आँखों में आँसू थे। पापा की आंख खुलीं।

“क्यों रो रहा है नालायक”

“कहाँ रो रहा हूँ ऐसे ही आँसू निकल आये”

“ऐसे ही आँसू निकल आये.....वेवकूफ अपने बच्चे को बनाना अपने बाप को नहीं”

“बहुत दिन से आपकी डाँट नहीं खाई उसे मिस कर रहा था”

“अच्छा...मुझे हॉस्पिटल से डिस्चार्ज होने दे फिर बताता हूँ”

उस दिन मैं और पापा बहुत हँसे। उस दिन मुझे पापा के मुँह से निकला नालायक शब्द भी अच्छा लगा था।



विद्या की कसम

1 जनवरी, 2016

न्यू ईयर का दिन। सबको अच्छी लाइफ की शुभकामनाएं देने का दिन। अखबारों और सोशल मीडिया पर नये वर्ष की बधाइयों वाला दिन। व्हाट्सएप रोगियों को “आपको और आपके परिवार को नये वर्ष की हार्दिक बधाइयाँ.....” वाला मेसेज फॉरवर्ड करने का दिन। पिछले दिन हुयी पार्टीज की खबर से अखबारों को सजाने का दिन।

खैर, सुबह के करीब 12 बज रहे थे। कई इंटरव्यूज में से ये पहला इंटरव्यू था जो देर तक चला। छोटू चौराहे से मुड़ा और गली में घुसते ही गली क्रिकेट का नज़ारा उसे नज़र आया। बीच में रास्ता रोककर बच्चे क्रिकेट का आनन्द ले रहे थे। छोटू भी बच्चों के खेल को देखने लगा।

“अबे यार्कर मार सीधी” विकेट कीपरिंग करने वाला बच्चा चिल्लाया।

“तू कहीं भी फेंक साले, जे बॉल तो रम्मू अंकल के घर में गिरेगी” मैनस्ट्राइक लिए मोटू ने भरोसा के साथ कहा।

“आने दे गेंद मेरे घर में तेरे बाप को लेने आना पड़ेगा” ये आवाज रम्मू अंकल की थी। जो अपने घर की बालकनी में खड़े इंतजार कर रहे थे कि कब बॉल उनके घर में गिरे और कब वो अपना चुंगा चालू करें।

छोटू क्रिकेट देखने में मगन था। मैंने पीछे से आकर उसके कंधे पर हाथ रखा। मैं उसके गले लग गया और बैकग्राउंड में राहुल जैन की आवाज में गाना शुरू हो गया। “ये दोस्ती हम नहीं तोड़ेंगे.....”

“सॉरी भाई माफ़ कर दे खामखाँ तुझे बुरा-भला कह दिया”

“भला कहाँ कहा बे बुरा-बुरा ही तो कहा असाटी”

“माफ़ी हुकुम”

“मुझे भी माफ़ करना” छोटू के चेहरे पर एक चमक दिखी।
“अच्छा ये सब छोड़ ये बता पापा कैसे हैं तेरे”

“अब ठीक हैं परी कह रही थी एक हफ़ता लग सकता है
हॉस्पिटल से डिस्चार्ज होने में”

“अच्छी बात है”

“फिर वापिस क्यों नहीं आया था”

“इंटरव्यू की तैयारी करनी थी”

“थैंक्स”

“किसलिए”

“तेरी वजह से आज मेरे पापा जिंदा हैं”

“थोड़ी दोस्ती हम भी दिखा सकते हैं असाटी”

“पार्टी हो जाये आज”

“कैफ़े चलें”

“पार्टी वहीं होगी “अपना कैफ़े” में मगर ट्रीट मेरी तरफ़ से”

“ट्रीट तो हम ही देंगे”

“तुम्हें विद्या की कसम है अगर तुमने पार्टी दी विद्या चली
जायेगी”

“क्या....विद्या की कसम”

“हाँ... यार याद है तुझे स्कूल में तूने जब.... मेरी हंसी रुक
नहीं रही थी।

सोमिल जैन “सोमू”।67

“याद है.... मगर उस दिन मेरी गलती नहीं थी मुझे क्या पता कि उस लड़के की मम्मी का विद्या नाम है मैंने तो विद्या कसम खाई थी मगर उसने.....”

“मगर उसने तुम्हारी निरमा से अच्छी खासी धुलाई कर दी... “क्या बोल रहा था वो “मेरी मम्मी को खायेगा.....मर गई तो” रोहित हँसने लगा।

“हां यार..... बहुत मारा था साले ने”

“चलें फिर अपना कैफे”

“कसम तो मैं मानता नहीं हूँ लेकिन अपनी बात मनवाने का ये अच्छा तरीका है उस दिन के बाद से कसम खाना छोड़ दिया”

“कितना मजा आता था गली में क्रिकेट खेलने का” छोटू ने चलते-चलते धीरे से कहा।

“हां यार” मैं बोला।

“गली में बनी नालियां जिनमें कीचड़ लबालब भरा रहता था। फिर उसमें बॉल जाने का डर, वो दाऊ की दुकान जिसमें दुकान का सामान, दुकान ही में नहीं बनता था। एक दो हमें घूरने वाले अंकल ऑन्टी जिन्हें डर रहता था कि उन्हें बोल न लग जाये फिर गलती से राह चलते आदमी को बोल लग गई तो फिर उन अंकल आंटी का लाउडस्पीकर चालू “मर जा ठठरी के बंधे, यहीं खेलने को मिलता है तुम ढोंगों को, लूघर के लगे” ऐसी मीठी बातों से हमारा स्वागत होता था”

“हाँ और वो तेरे घर के सामने वाली आंटी नज़रे गड़ाएं बैठी रहती थीं कि कब गेंद उनके घर में घुसे और कब वो बात का बतंगड़ बनायें”

गजब का खेल है ये क्रिकेट भी..... तेरी मेरी दोस्ती बताता है। जब हम जीत जाते तो तू कहता छोटू तूने मैच जिता

दिया..... और जब हार जाते तो तू कहता था “यार आज किस्मत ही खराब थी” कहते-कहते छोटू रुक गया।

“कोशिश बहुतकी लोगों ने हमारा खेल बंद करने की मगर हमारा खेलना जारी रहा”

“कोशिश ही कर सकते थे वो..... हम तो सरकारी जगह पर खेलते थे और सरकारी जगह किसी के बाप की तो होती नहीं है”

“यही तो उस वक्त अपना डायलॉग था”

“हाँ.... हमे बन्द करने की फिराक में कई बन्द हो गए”

“मगर अब तो हम बड़े हो गए है मेच्योर भी” मैंने M पर जोर देते हुए कहा।

“शायद.....और समझदार भी....”

हम दोनो के चहरे खिल आये। लगता था जैसे पुराने दोस्त बड़े दिनों बाद मिले हों। पुराने दोस्त तो नहीं मगर बीता बचपन जरूर बहुत दिनों बाद मिल रहा था। बहुत दिनों बाद हम बचपन से बाते कर रहे थे।

“एक बार की बात याद है तुझे”

“क्या” मैं आज कुछ भी याद करने को तैयार था।

“जब हम तुझे खेलने के लिए बुलाने आये थे तो तेरे पापा क्या बोले थे “सब्जी लाने क्या तेरा बाप जायेगा” उसने याद दिलाया।“

“हाँ” मैंने हामी भरी।

“और तूने क्या जबाब दिया”

“तो चले जाओ न बाप हो हमारे इतना भी नहीं कर सकते क्या” वो हंसने लगा।

“फिर”

“फिर क्या..... उसके बाद अच्छी धुनाई हुयी थी तुम्हारी असाटी जो-जो हाथ में आ रहा था सबसे स्वागत हुआ था”

“एक बात बोलूँ” रोहित बोला।

“बोल”

“बुरा मत मानना”

“अच्छी बात कहेगा तो बुरा क्यों मानूँगा”

“तुझे याद है जब हम पाँच पाँच रुपये की डीवीडी लेकर फ़िल्म देखते थे”

“हाँ.... बिल्कुल याद है”

“उन्हीं फ़िल्म में एक डायलाग सुना था”

“क्या”

“यही की हीरो बोलता है मेरी रगों में मेरे असली बाप का खून दौड़ रहा है”

“बोलते थे तो”

“तो आज से मैं ये कहूँगा कि मेरे बाप की रगों में तेरा खून दौड़ रहा है” कहकर मैंने उसके हंसने का इंतजार किया।

छोटू ने मुझे गौर से देखा। “परी ने बता दिया तुझे”

“हाँ” मैं चुप हो गया।

मेरा घर आ गया। कई अरसे बाद हम दोनों के चहरे चमक रहे थे। “खून का कर्ज चुकाने के लिए एक घंटे बाद चलेंगे कैफ़े” मैंने डायलोग मारा।

“ठीक है असाटी”

“सत्तू को कॉल कर लेना मैं अनी को बोल दूँगा” मैं चिल्लाया।

“Ok done..... bye....”



बिजली विभाग

2 जनवरी, 2016

छोटु आज ज्यादा देर तक सोता रहा क्योंकि कल रात घर वापिस आने में देर हो गई थी। आँखें धोकर छत पर धूप लेने पहुंचा तो उसने आसमान में पतंगों का बाजार लगा देखा। सक्रांति आने वाली थी। कल उसकी सारे दोस्तों से मुलाकात भी हो गई थी। वो छत की मुंडेरों से दूर-दूर तक उन पतंगों को देख रहा था।

“चाय लाओ” छोटु ने छत से तेज आवाज लगाई।

थोड़ी देर में संस्कृति छत पर आई। “ये लो और फटाफट नीचे आ जाओ”

“ये क्या है” छोटु बोला। “मैंने चाय मांगी थी, मंजन ब्रश नहीं”

“ज्यादा सवाल नहीं चाय पीना है तो ब्रश करना पड़ेगा” आर्डर देकर संस्कृति नीचे चली गई।

“हमेशा जब देखो जब ऑर्डर चलाती है मम्मी बनती है मेरी” छोटु ने कहा।

छोटु छत से नीचे आया। ब्रश मुंह में दबाये जब उसने मोबाईल देखा तो दश-बारह छूटी कॉल डली थी। कोई नया नंबर था। छोटु ने दुबारा कॉल करने के लिए मोबाइल का लॉक खोला ही था की नीचे से आवाज आई।

“लाट साहब नहा लिए” ये उसकी दादी थी।

“जी... बस नहा रहा हूँ”

छोटु ने मोबाइल पलंग पर पटक़ा और टावल लेकर नहाने चला गया मोबाइल फिर से रिंग करने लगा मगर किसी को पता नहीं। नहा-धोकर वो घर से निकला और मंदिर चला गया। उसके हाथ में बिजली का बिल भी था जो जाते-जाते दादा ने उसे पकड़ा दिया था। सर्किल पार ही किया था कि उसका फोन फिर रिंग करने लगा। नये नम्बर से कॉल था। “कौन इतना याद कर रहा है यार”

“कहाँ जा रहे हो तुम” उस तरफ से आवाज़ आई।

“कौन” छोटु बोला। “कौन बोल रहा है”

“पहले तो बोल नहीं रहा है बोल रही हूँ, अब तुम ये बताओ कहाँ जा रहे हो”

“प्रथम में प्रथम आप ये बताने का कष्ट करेंगी कि आप कौन बोल रही हैं” छोटु समझ तो गया था मगर मजा भी तो लेना था।

“परी” थोड़ी देर बाद आवाज़ आयी।

“आज हम जैसे लोगों की याद कैसे आ गई” कहकर छोटु ने अपना एटीट्यूड दिखाया।

“क्या करें डॉक्टर्स को मरीजों की याद नहीं आएगी तो किसकी याद आएगी”

“अच्छा ऐसा क्या” छोटु अपनी बात पूरी नहीं कर पाया कि पीछे से तेज रफ़्तार में एक कार आकर रुकी। कार का शीशा खुला। परी ने कार में बैठने का इशारा किया। छोटु ने गेट खोला और बिना सवाल जबाब किये चुपचाप बैठ गया।

थोड़ी दूर चलने के बाद परी ने कार साइड में रोकी। “कहाँ चलना है”

“यहीं बिजली विभाग तक” छोटु हकलाते हुए बोला।

परी ने गाड़ी स्टार्ट की और बिजली बिभाग की तरफ मोड़ी।
“आजकल सारे काम ऑनलाइन होते हैं” परी बोली।

“हाँ मगर दादू को कौन समझाए”

“ये तो कॉमन सेंस की बात है” ऐसे लगा जैसे छोटू की बेइज्जती हो गई हो।

छोटु को परी का दाँत निकालना अच्छा नहीं लगा। वह बोला “कॉमन सेंस मुझ मे तुमसे ज्यादा है”

“हाँ हाँ.....वो तो दिख ही रहा है” परी ने व्यंग्य बाण छोड़ा।

छोटु के पास बोलने के लिए शब्द नहीं थे। “इससे सवाल जबाब करना मेरे बस की बात नहीं है इसके पास बहस का मेला लगा रहता है शांत रहने मे भलाई है खडूस....” छोटु ने मन ही मन सोचा। उसने अपना ध्यान समंदर की ओर कर लिया। वो कार का शीशा खोलकर बहती हवा का आनंद लेने लगा।

परी बोली। “सर जी”

“मुझे तुमसे अब कोई बहस नहीं करनी” छोटु ने परी की बात काट दी।

“मैंने कब कहा कि मुझसे बहस करो, मुझे पता है जीतना मुझे ही है मैं तो कह रही थी कि हम बिजली बिभाग के बाहर खड़े है”

“ओ..... मुझे पता है तुम्हे बताने की जरूरत नहीं” छोटु ने गेट खोले और कार से बाहर निकला।

“कब तक आओगे” परी ने पूँछा।

“टाइम लग जाएगा” छोटु बोला।

“क्यों”

“बाहर निकलो” छोटु बोला। “अब सामने देखो”

सामने एक बड़ी लाइन लगी थी। दोनों का अनुमान यही कह रहा था कि टाइम ज्यादा लग सकता है।

“एक बार मैं देखकर आता हूँ” छोटू दौड़कर भीड़ में चला गया।

छोटू पंद्रह मिनिट बाद बाहर आया। उसने देखा कार तो वही खड़ी लेकिन परी नहीं आयी। चारों तरफ नज़र डाली तो सड़क के उस पार वो कॉफी शॉप के बाहर खड़ी थी। कॉफी शॉप के बगल से एक बस्ती लगी थी।

“कार पार्क कर दो” परी ने सड़क के उस पार से चिल्लाकर कहा।

“नौकर हूँ तुम्हारा जो तुम्हारी गाड़ी पार्क करूँ” छोटू ने एक पल के लिए मन में सोचा।” कर देता हूँ नहीं तो बहस होने लगेगी की तुम्हें गाड़ी चलानी ही नहीं आती”

छोटू ने शांति से गाड़ी पार्क करदी और चाबी परी के हाथ में थमाई। “कॉफी हो जाये” परी मुस्कुराई।

छोटू ने बिना सोचे हाँ कर दी। उसके पास कोई दूसरा ऑप्शन नहीं था।

“आजकल ज्यादा भाव दे रही हो”

“सॉरी..... आखिरी बार” परी ने कॉफी पीते हुए कहा।

“किस बात के लिए”

“मैंने रोहित को सब बता दिया उस दिन ब्लड तुमने डोनेट किया था”

“कोई बात नहीं Its ok....”

“नाराज नहीं हुए तुम”

“नहीं”

“मतलब नाराज हो”

“इसमें नाराज होने वाली क्या बात है”

“मैंने ये भी बोला कि वो बेरोजगार है”

“कोई बात नहीं” छोटू ने कॉफी की चुस्की लेते हुए।

“कोई बात नहीं” दुनिया का ब्रम्हज्ञान है। बहस, बदतमीजी से बचने का तरीका है। सुख शांति का सर्वोत्तम उपाय है ये कह देना “कोई बात नहीं”

छोटू को बुरा लगा मगर अपनी इस बेइज्जती को कॉफी का आखिरी घुट समझकर पी गया।

“मेरे बेरोजगार होने से तुम्हे क्या प्रॉब्लम है”

“कुछ नहीं”

“सच बताना”

“सच्ची”

“तो ठीक है”

“क्यों तुमने क्या सोचा”

“कुछ नहीं”

“कुछ तो”

“यही कि तुम्हारा शादी का मूड तो नहीं है”

परी चुप रही। “हां” परी ने मन में सोचा। आज उसे छोटू बहुत समझदार लग रहा था।

“कहाँ खो गई”

“शादी के ख्यालों में” परी ने फिर मन में सोचा। “कहीं नहीं” परी ने भी अपनी कॉफी की लास्ट सिप ली।

“जेब में पैसे नहीं हैं आ जाते हैं चाय पीने” कैफे का मालिक किसी बूढ़े आदमी पर भड़क रहा था। परी की नज़र वहाँ गई। वो उठकर उनके पास पहुंची।

“क्यों इतना चिल्ला रहे हो आप इन पर” परी कैफे के मालिक पर भड़की।

“मेडम ये एक दिन की बात नहीं है रोजाना मुंह उठाकर चला आता है” कैफे के मालिक ने सफाई दी।

“आप में किसी से बात करने की तमीज़ नहीं है” परी का गुस्सा बढ़ता जा रहा था।

छोटू ने मामला सम्हाला। उसने दोनों को शांत किया। छोटू ने अंकल को देखा ये वहीं अंकल थे जो उसे समंदर के किनारे मिले थे। और कब्रिस्तान के पास भी मिले थे।

छोटू ने चाय के पैसे दिए और एक चाय ली। छोटू का मोबाइल रिंग करने लगा।

“अभी आता हूँ” छोटू ने मोबाइल पर कहा।

“कहाँ” परी में पूछा।

“मुझे अभी जाना होगा.... बाद में मिलके बताऊंगा”

“ठीक है”

“Thanks for nice coffee” छोटू बाय करते हुए कॉफी शॉप से बाहर चला गया।



12 जनवरी, 2016

छोटू अंकल के साथ बांके टपरी पर बैठा चाय की चुस्की ले रहा था।

“चाय खत्म” अंकल ने इशारा किया एक और चाय का।

छोटू अभी भी हाथ में चाय का गिलास लिए उसकी गर्माहट को महसूस कर रहा था। ठण्ड अपने फ्लो में थी। छोटू और अंकल की अब रोजाना मुलाकात होने लगी थी। छोटू को

उनका साथ अच्छा लगने लगा था। उसने उनका नाम भी सोच लिया था। “एंजल अंकल”

“और कुछ जान सकता हूँ आपके बारे में”

अंकल का कोई जबाब नहीं आया। वो चाय में मगन थे।
“कुछ तो बताइए अपने बारे में”

छोटू के बार-बार पूछने पर अंकल बोले “तुम्हें क्यों जानना है कि मैं कौन हूँ मैं क्या करता हूँ”

“ऐसे ही” छोटू ने गिलास नीचे रखा। “एक दोस्त समझकर पूछ लिया”

अंकल की चाय खत्म हुई।

“Thanks dear son” अंकल जाने लगे।

छोटू कुछ नहीं बोला। उसने चाय के पैसे दिए और अपने घर चल दिया। घर जाना उसे मुनासिब लगा।



तुम्हारे सपने होंगे

9 मार्च, 2016

बाहर हल्की-हल्की बारिश हो रही थी। आंधी भी थमने का नाम नहीं ले रही थी। बिजली के चमकने से सारी खिड़कियाँ चमक उठती थी। डर भी लग रहा था। सड़क पर बिछे गहरे सन्नाटे में बारिश की बूंदें ज़ोरों से टप-टप कर रही थी।

“या तो बरस जा या फिर रुक जा फ्री फोकट परेशान कर रही हो तुम” दादी की गोद में अपना सिर रखे छोटू बोला।

“किससे बोल रहे हो बेटा” दादी ने उसके सर पर हाथ फेरा। बारिश से छोटू कह कर खामोश हो गया।

“आप हमेशा मेरे साथ रहोगी न दादी” उसकी आवाज़ में दर्द था।

“मुझे नहीं पता मगर तुम तो रहोगे, तुम्हारे सपने होंगे, हम सब की दुआएं होंगी”

“ऐसे सपनों का क्या करूँगा मैं जिसमें अपने ही शामिल न हों। बेटा हम कब तक तेरे साथ रहेंगे कभी न कभी तो सभी को जाना है बस इतना याद रखना सपनों को पूरा करने की चाहत में अपनों को मत खो देना, जो तुमसे प्यार करते हैं तुम्हारा भला चाहते हैं उनका साथ कभी मत छोड़ना क्योंकि याद रखना उनसे तुम्हारा साथ तब दिया है जब तुम्हारे साथ कोई नहीं था” दादी मुस्करायी।

“हाँ” छोटू बोला। “मेरे सपने मेरी आँखों के सामने खड़े हैं जिन्हें मैं रोज जीता हूँ कभी गम में तो कभी खुशी में, कभी सुकून में तो कभी संघर्ष में.....”

“हाँ बेटा” दादी की आँखे चमकने लगी।

“दादी.... पता नहीं कभी कभी मुझे लगता है जैसे मैं अब थक गया हूँ..... भागना चाहता हूँ कहीं दूर... बहुत दूर... यहां की दमघोंटू हवा में सांस लेना भी मुश्किल हो गया है बस यहां रहना नहीं चाहता.... मगर मैं भगोड़ा नहीं हूँ”

हर इंसान कभी न कभी अपनी जिन्दगी से थक जाता है। जब वो दौड़ना तो दूर चलने से भी मना कर देता है। उसका दिल ऐसे जहाँ में बसने का होता है जहाँ भागदौड़ न हो, भीड़-भाड़ न हो बस ताउम्र सुकून हो। स्ट्रगल तो इस जिंदगी का अनिवार्य चेप्टर है जिसे स्किप नहीं कर सकते। कोई इससे डर जाता है और कोई इस डर को हराकर कुछ कर जाता है।

“छोटू तुम भाग नहीं सकते धीरे धीरे चल सकते हो” दादी बोलीं। “फैसला तुम्हारे हाथ में है तुम्हें क्या करना है डटकर सामना करना है या फिर मैदान छोड़कर भागना है”

छोटू कुछ नहीं बोला। बारिश और तेज़ हो गयी। आसमान बिजली से भरा लग रहा था। चाँद, बादलों में आज नज़र नहीं आ रहा था। क्या पता वो बारिश को अपनी मजबूरी बता रहा हो। दादी ने लाइट बन्द कर दी। “अब सो जाओ छोटू, कल तुम्हारा इंटरव्यू है”

“हाँ” छोटू की धुंधली सी आवाज आई।



बिलगेट्स हो क्या?

13 मार्च, 2016

“बैडमिंटन प्लेयर..... स्टेट लेविल चैम्पियन” आवाज बच्चन साब की तरह भारी था।

“यश सर” छोटू का आत्मविश्वास से भरा जबाब आया।

“कंपनी को क्या दे सकते हो” सामने बैठे अधिकारी कम कर्मचारी लग रहे महानुभाव ने पूछा।

छोटू ने रुमाल से अपने चेहरे का पसीना पोंछा। “सर मैं आपकी कम्पनी को अपना टाइम और अपनी मेहनत देसकता हूँ मतलब मैं..... मुझे एक चांस देकर देखिये सर मैं अपनी जान लगा दूंगा इस कंपनी को आगे बढ़ाने के लिए.....” छोटू के होंठ कपकपा रहे थे। वो हकला रहा था। जो पंचवाक्य उसने रटा था बोल दिया।

“तुम तो कॉलेज ड्राप आउट हो फिर ये काम कहाँ से सीखा” मोटे अंकल बोले जिनकी चांद निकली थी उन्होंने अपनी खोपड़ी खुजाते हुए पूछा।

“सर कोर्स किया था..... कोचिंग भी”

“कॉलेज ड्रॉपआउट करना तो खेल समझ लिया है तुम लोगों ने” मोटे अंकल झल्लाए। “बिलगेट्स बनना चाहते हैं सब..... आज के चपडगंजू माइक्रोसॉफ्ट खड़ा करेंगे “

“सर मौका देकर देखिये.....दुनिया में नहीं मगर अपने देश में तो हमारी कंपनी शायनिंग मार सकती है” छोटू की बात में दम था। आखिर माइक्रोसॉफ्ट भी पहले अपने देश में नंबर वन हुयी होगी फिर उसने दुनिया पर राज किया।

“और कुछ”

“यस सर मैं मानता हूं कि मैं कॉलेज ड्राप आउट हूँ मगर आपकी कंपनी के लिए जो क्वालिफिकेशन चाहिए वो सारी मुझमें हैं और मुझे खुद पर पूरा विश्वास है कि मैं इस कंपनी को उड़ान दे सकता हूँ क्योंकि मुझे ये काम करने में मज़ा आता है” छोटू की वही बातें जो कई इंटरव्यूज उसने दुहराई हैं यहाँ भी कह डाली।

“तुम शराब पीते हो” बडी तोंदवाला व्यक्ति बोला।

“जी..... नहीं... मैंने आज तक शराब छुई तक नहीं” छोटू घबराया। उसे याद आया जब मैंने उसे थप्पड़ लगाया था तब जब छोटू ने शराब पीने की बात कही थी।

“ओके..... आप जा सकते हैं सिलेक्शन की जानकारी आपको ईमेल से मिल जाएगी” छोटू कुर्सी से उठा। “सर मुझे यह काम किसी भी हालत में चाहिए” छोटू मुस्कुरा कर चला गया।

“बाहर कितने लोग बैठे हैं” अंदर से आवाज आई।

“साब, इनको मिलाकर तीन हैं” चपरासी ने कहा ।

“नेक्स्ट” अंदर से भारी आवाज आयी ।

छोटू कंपनी से बाहर निकल आया। बाहर लगे बोर्ड पर उसने पढ़ा “सक्सेस का कोई शॉर्टकट नहीं होता” पढ़कर छोटू मुस्कुराया फिर उसने फ़ोन घुमाया और मेरे मोबाइल पर उसका नाम चमकने लगा।



असल तरक्की

29 मार्च, 2016

महीना गुजरने वाला था। रविवार का दिन था। सुबह के सात बज रहे थे। ठंड अब छू हो गई थी। इन दिनों लोगों का जमावड़ा चाय की टपरियों से कम हो गया। छोटू भी जूते पहने, कान में ईयरप्लग घुसेड़े, दौड़ता हुआ पार्क से वापिस आ रहा था। नजारा, नज़र को बेहद सुहावना लग रहा था। कालोनी में बने पार्क से बच्चों की आवाज मौसम को मुस्कुराने की वजह दे रही थी। कई अधेड़ महिला पुरुष भी वहाँ भरे पड़े थे।

“क्यों भाई इतनी सुबह सुबह कहाँ घूम आये” मेरे घर के बाहर खड़े छोटू से मैंने पूछा।

“क्या बोलते हैं उसे हिंदी में..... भ्रमण को गए थे सुबह-सुबह” छोटू ने कान से ईयरप्लग निकाले।

“क्यों भाई इतना भ्रमण जो तुम रोज रोज करते हो वो कम है क्या” मैंने टोन कसी।

“मतलब..... तू कहना क्या चाहता है असाटी”

“मजाक कर रहा हूँ” मैं हँस दिया। “वैसे रोज दौड़ना चाहिए शरीर स्वस्थ रहता है”

“हाँ... अब ज्ञान मत दे” उसने कहा।

“चल.... मिलते हैं शाम को आज वसूली का दिन है, पैसे उगाने जा रहा हूँ” रोहित ने मोज़े चढ़ाये।

“आज संडे है कम से कम आज तो अपने जन्मदाता से मुक्ति ले ले” उसने मुझे आंखे दिखायीं।

“हाँ..... फिर कभी” मैं मुस्कुराया। “अच्छा सुन चाय पीयेगा”

“जरूर असाटी ये सौभाग्य बहुत कम लोगों को मिलता है” छोटू ने न्यूज पेपर उठाया और पढ़ने लगा। “आठ महीने की बच्ची के साथ दुष्कर्म” छोटू ने न्यूज पेपर की हैडिंग पढ़ी।

“क्या करें..... अपना देश इसी में तरक्की कर रहा है” मैंने कहा।

“घंटा तरक्की कर रहा है” छोटू ने न्यूजपेपर साइड में रखा। “एक बात पुछू तुमसे असाटी”

“बेशक”

“तू कहता है न पूरी दुनिया को उस ऊपरवाले ने बनाया है”

“हाँ.....तो”

“तो इन बलात्कारियों को भी उसी ऊपरवाले ने बनाया है क्योंकि ये बलात्कारी भी इसी दुनिया में बसते है इसी देश में बसते हैं” उसके सवाल में एक मासूमियत थी उसकी आँखों में भोलापन था।

“ऐसा नहीं है”

“जब जब धर्म की हानि होगी तब तब में अवतार लूँगा यही लिखा है न”

“हाँ”

“अब तो अपनी इज्जत पे आई है” उसके चेहरा पर गुस्सा साफ नज़र आ रहा था। “हमारे देश में हर दिन रैप के 90 केसेस आते हैं हर 22 मिनट में एक लड़की का रैप होता है और 10 केसेस में एक केस की रिपोर्ट होती है इतना काफी नहीं है

अवतार लेने के लिए” छोटू चुप हो गया। इससे पहले कि उसका गुस्सा और बढ़ता रक्षा चाय लेकर आ गई।

“जबाब आया क्या इंटरव्यू का” मैंने सिचुएशन कण्ट्रोल की।

“अभी तक तो नहीं आया कह रहे थे ईमेल कर देंगे”

“आ जायेगा जवाब तु चाय पी” मैंने कंधे उचकाए। हम दोनों ने सुकून से चाय का घूंट भरा।

“जवाब आये तो मुझे जरूर बताना” मैंने जाते हुए छोटू से बोला।

“सबसे पहले बताऊंगा” एक बनावटी मुस्कान के साथ छोटू ने मुझे बाय कहा।



मजा या मज़बूरी

1 अप्रैल, 2016

बेल बजी। एक उम्रदराज महिला ने गेट खोले। उम्र के लिहाज से उनके कुछ बाल सफेद हो चले थे। चेहरे पर झुर्रिया साफ दिखाई दे रही थी।

“नमस्ते आंटी” छोटू ने आंटी के पैर छुए।

“अरे..... तुम छोटू.....” आंटी ने याद करते हुए कहा।

“जी मै”

“कितने बदल गए हो तुम..... आज यहाँ कैसे.....”

आंटी की खुशी उनके चेहरे से टपक रही थी।

“बस आपकी याद आयी और चले आये”

“इतने दिनों में आज याद आयी तुम्हें” आंटी समझ गई। याद तो बहाना है बात कुछ और है।

“अंदर आओ..... चाय या कॉफी..... क्या लोगे तुम” छोटू अन्दर आ गया। घर में कोई नज़र नहीं आ रहा था। छोटू की नज़रे किसी और को देख रहीं थीं।

“परी से मिलने आये हो” आंटी ने किचिन से कहा।

“नहीं” छोटू ने झूठ कहा। वो सोफे पर बैठ गया। दीवार पर कई पेंटिंग सजी थीं। उन पेंटिंग्स के नीचे बड़े अक्षर में A लिखा था।

“ये लो कॉफी” आंटी ने कॉफी कप छोटू को पकड़ाया।
“तुम यहीं बैठो मैं परी को बुलाकर लाती हूँ” मेरे दिल का कहा
आंटी अच्छे से सुन रही थी।

“पेंटिंग अब्बुत हैं”

“पेंटिंग या पेंटिंग बनाने वाली” आंटी की बात में पॉइंट
था।

“दोनों” छोटू के मुहँ से निकलने ही वाला था मगर वो
मुस्करा दिया। छोटू ने कॉफी की एक सिप ली।

“महारानी ऊपर अपने कमरे में हैं” कहकर आंटी ने परी को
आवाज लगाई।

“खैर अब अंकल की तबियत कैसी है” छोटू ने कॉफी कप
नीचे रखा।” रोहित ने मुझे सब बता दिया था।

“वैसी ही बनी है जैसी पहले थी” आंटी ने सहमे मन से
कहा।

“कोई सुधार नहीं हुआ” छोटू ने पूछा।

“नहीं अभी तक तो कुछ नहीं” आंटी की आंखे भर आयी।
“छोड़ो इस बात को...मैं घर के काम करती हूँ तब तक तुम परी
से मिल आओ”

आंटी रसोई मै चली गयी। छोटू भी खड़ा हो गया। सीढ़ियों
से धीरे-धीरे ऊपर जाने लगा। कुछ जानी पहचानी तस्वीरे उसके
सामने सजी थीं। उसने देखा परी बालकनी में खड़ी थी।

“हाय” छोटू ने नजदीक आकर कहा। “क्या देख रही हो”

“हाय.....तुम कब आये” परी ने जानबूझकर अनजान
बनने का नाटक किया।

“अनजान मत बनो मैंने नीचे से देख लिया था”

“क्या”

“जब तुम मुझे बालकनी से देख रहीं थीं” परी कुछ नहीं बोली।

“तुम्हारा बगीचा कितना सुंदर है” छोटू बोला।

“हाँ” परी ने हामी भरी।” यही सोच रही थी मैं.....कुछ साल पहले हमारा साथ भी इसी बगीचे की तरह महक रहा था मगर एक तूफान ने सारे बाग को बेज़ार कर दिया।

“मजबूरी थी” सहमे हुए छोटू की आवाज आई।

“हाँ” परी बोली। “मजे को मज़बूरी नाम नहीं देना चाहिए”

“कोई मजे नहीं किये मैंने” छोटू उदास हो गया। “जबसे यहाँ आया हूँ तबसे भटक ही तो रहा हूँ कभी यहाँ तो कभी वहाँ पता नहीं कहाँ कहाँ.....”

“Sorry”

“Its ok”

“So आज यहाँ का रास्ता कैसे भूल गए”

“नहीं आज संडे था तो सोचा तुम्हारे साथ टाइम स्पेंड कर लूँ”

“तुम्हारे लिए कौनसा संडे” परी ने टोन कसी। “तुमने ये सोच कैसे लिया कि मैं तुम्हारे साथ टाइम स्पेंड करूँगी”

“क्यों मुझमें क्या खराबी है”

“खराबी तुम में नहीं मुझ में है” आयरा ने गुस्से से देखा। “और वैसे भी चाचा-चाची हॉलिडे पर गए हैं इसलिए मुझे बहुत काम है”

“तुम चल रही हो या नहीं” छोटू जाने लगा।

“नहीं” परी ने साफ-साफ मना कर दिया।

“मैं नीचे तुम्हारा इंतज़ार कर रहा हूँ तुम रेडी होकर आ जाओ” छोटू बोला।

दस मिनिट गुजर गए। परी नीचे आयी तो देखा छोटू जा
चुका था। कॉफी कप के नीचे छोटू एक मैसेज छोड़ गया।
“नाइस कॉफी आंटी” परी मुस्कुराई।



दिल में सही, करना वही!

2 अप्रैल, 2016

गली में चमचमाती कार आकर छोटू के घर के सामने रुकी। कई घरों की बालकनी से कई चहरे मुंह में ब्रश दबाये कार को ताक रहे थे। कार का हॉर्न तब तक बजता रहा जब तक छोटू ने खिड़की से नहीं झाँका। छोटू दौड़कर नीचे आया।

“परी” कार का शीशा खुला। “दस मिनिट बाद मिलते हैं कॉफी शॉप में” कार के अंदर से आवाज आयी।

“नहीं” छोटू का जबाब था।

“मतलब”

“मतलब “अपना कैफे” चलते हैं” छोटू ने विनती की।

“दस मिनिट में पहुंच जाना” कहकर गाड़ी तेज रफ्तार से दौड़ गई। छोटू तब तक उस कार को देखता रहा जब तक वो कार उसकी आँखों से ओझल नहीं हो गई। घर पर कोई नहीं था। सब मंदिर गए थे। छोटू भी घर के अंदर चला गया।



“दस मिनिट लेट” परी ने उसे फटकारा।” तुम्हारी ये आदत कब से बन गयी”

“कौनसी”

“लेट आने की”

“सॉरी” छोटू ने मासूमियत से कहा।

“मेरी तरफ से भी सॉरी कल के लिए”

“तुम क्यों सॉरी बोल रही हो ये डिपार्टमेंट तो वर्षों से हमारा है”

“कौनसा”

“सॉरी वाला.....चाहे गलती हो या नहीं हो”

“ऐसा कुछ नहीं है”

“कोई बात नहीं”

छोटू ने कुर्सी खिसकाई और बैठ गया। छोटू की बेसब्र आंखें चमक रही थीं। उसे अपने सारे सपने परी की आँखों में साफ़ दिख रहे थे।

“एनीवे... आज का दिन याद है तुम्हें” परी के अंदाज़ में लचीलापन था।

“हां आज मंडे है” छोटू ने दिन याद दिलाया। वेटर दो कॉफी कप टेबिल पर रखकर चला गया। छोटू कॉफी के कपों को घूरे जा रहा था और परी उसको।

“आज कुछ स्पेशल है” परी ने फिर उसी बात को दुहराया।

“नहीं” छोटू अपनी तरफ से पूरा स्योर था।

“अरे पागल जब कोई लड़की इतनी घूम फिरा के बात कहे तब क्या समझना चाहिए बुद्धू” परी ने हिंट दी। “तुम्हें कुछ याद नहीं”

“नहीं तो” छोटू बेफिकर होके बोला।

लड़कियों को ऐसी बातें बहुत चुभती हैं खासकर तब जब उनका जन्मदिन होता है। परी क्या चाहती थी छोटू जनाब इससे बेखबर थे।

परी ने भौहें सिकोड़ी। वो कुर्सी से उठी और जाने लगी।
छोटू ने कॉफी की एक बड़ी सिप ली।

“तुम्हें सच मे नहीं पता”

“नहीं बाबा”

“रियली”

“विद्या कसम”

परी जाने लगी। उसने अपना हैंड बैग उठाया। “अच्छा मैं
चलती हूँ”

“जन्मदिन मुबारक हो” सामने से आते अनिकेत ने कहा।
परी का चेहरा खिल उठा। इतनी देर से वो यही तो सुनना चाहती
थी।

“तुम्हें पता था” उसने अनिकेत से पूछा।

“छोटू भैया बताये थे जन्मदिन है तुम्हारा” अनिकेत सूट
बूट पहने दोनों के पास आया।

“अब कोई इतना सोचने पर मजबूर करेगा तो जन्मदिन के
अलावा क्या हो सकता था” अब मेरी एंट्री हुयी।

“थैंक्स” परी ने चेयर खिसकाई। उसके चेहरे का ग्लो
एकदम फ्लो में था। मुझे काम था इसलिए मैं उनको बाय कहकर
चला गया।

“तो फिर क्या है मेरा बर्थडे गिफ्ट” परी बोली।

छोटू की नज़रें झुक गईं। शॉपिंग मॉल, मूवी का प्लान या
फिर कहीं फाइव स्टार होटल में खाना।

“मैं तो मजाक कर रही थी” परी ने समझदारी दिखाई।

“कोई बात नहीं ... मजाक में ही सही अपनी औकात तो
पता चली” छोटू ने कॉफी खत्म की।

“अच्छा छोड़ो.....कोई और बात करें” परी ने बात
बदली।

सोमिल जैन “सोमू” | 91

छोटू अपनी नज़रे उससे मिला नहीं पा रहा था। उसे अंदर ही अंदर बुरा लग रहा था।

“अच्छा लिसिन” परी ने उसका ध्यान बटाया। “कल मैं स्कूल का एल्बम देख रही थी उसमें तुम्हारी भी फ़ोटो थी”

“अच्छा” परी छोटू का ध्यान खींचने में सफल हुई।

“हाँ वो वाली जिसमें तुम्हें बेस्ट स्टूडेंट का अवार्ड मिला था”

“अच्छा फस्टईयर वाली”

“हाँ वही”

“मुझे दिखाना” छोटू की उदासी फुर हो गयी।

“आना कभी घर पर”

“कल तो आया था” छोटू ने घूरकर उसे देखा। “जब आया था तो कदर नहीं की अब सामने से इन्वार्इट कर रही हो”

“उसके लिए मैंने माफी मांगी न”

“कब मांगी”

“सबसे पहले ही मांगी थी..... तुम भूल रहे हो”

“नहीं माँगी” मुझे अच्छे से याद है”

“अच्छा...सारी यार” परी ने हाथ जोड़े। “और कुछ”

“कुछ नहीं” छोटू हँस दिया।

दो मिनिट कोई कुछ नहीं बोला। कैफे में भीड़ बड़ गई थी। “वो भी क्या दिन थे” परी ख्यालों से बाहर आयी। “जब दिन कुछ लंबे, खूबसूरत होते थे जब हम दुनियादारी के कामों से अनजान थे.....पढ़ना लिखना एक तरफ बस खाना और खेलना”

“हाँ.....कोई टेंसन ही नहीं थी उस वक्त” छोटू ने हामी भरी।

“सपना मेम से मिले हो तुम” परी ने छोटू की तरफ देखा।

“नहीं..... जब वो स्कूल छोड़कर गई थी उस दिन के बाद मैंने उन्हें कभी नहीं देखा”

“वो इसी शहर में हैं..... सालों से” परी की आंखों में एक खुशी दिखी।

“उस दिन गलती मेरी थी” छोटू बोला। कुछ पल के लिए दोनों के बीच खामोशी छा गई। एक पल के लिए कॉफी शॉप एक दम शांत था। वक्त अपनी जगह पर ठहर गया। आस पास लोगों के चहरे मुस्कराहट से भरे थे सिर्फ उस टेबिल को छोड़कर जहाँ परी और छोटू बैठे थे।

“मिलने चलें उनसे एक दिन”

“कल ही चलो” छोटू बोला।

“एक बात पूछें हम तुमसे”

“पूछो”

“तुम्हारा आगे क्या प्लान है” परी का सीधा सवाल था। परी का पूछना जायज था। आज कैरियर नहीं चुना तो बाद में कैरियर हमें चुन लेता है।

छोटू खामोश रहा। परी बेसब्री से उसके आंसर के इंतजार में थी।

“कुछ नहीं” परी को छोटू से ऐसी उम्मीद नहीं थी।

“मतलब” परी ने उसे घूरकर देखा। “कोई सपना तो होगा तुम्हारी जिंदगी का”

“अभी तक तो नहीं” छोटू ने सहजता से कहा। “इस बारे में मैंने अभी तक नहीं सोचा.... बस इतना है कि मैं कुछ बनने की बजाय कुछ करने पर ज्यादा विश्वास रखता हूँ। मुझे ये पता है कि मुझे क्या करना है...फिर जब करूँगा तो बन तो अपने आप जाऊँगा”

“फिर भी कुछ तो होगा तुम्हारे दिमाग में”

सोमिल जैन “सोमू”।93

छोटू ने नजरें घुमाई। “मैं उड़ान भरना चाहता हूँ परी”

“कैसी उड़ान”

“एक लंबी, ऊँची उड़ान..... मेरे सपनों की, नेम फेम सब कुछ मिले। जिसमें दौलत हो, शोहरत हो, इज्जत हो। अपने भी नाम का सिक्का चले जमाने में..... इतना काबिल बनना चाहता हूँ जिससे किसी का नोकर न बनूँ। उस मुकाम को पाने के लिए मुझे कुछ भी काम करना पड़े मैं इसके लिए तैयार हूँ.....”

“अगर उस उड़ान में तुम्हारे अपने नहीं हों तो”

“क्यों नहीं होंगे..... जरूर होंगे” छोटू ने बड़े आत्मविश्वास से कहा।

“तो कब भरोगे ये उड़ान”

“पता नहीं”

परी ने अपना हाथ छोटू के हाथ पर रख दिया। उसने छोटू का हाथ कसके पकड़ लिया। शायद वो ये कहना चाहती थी कि “मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ”।

“चले”

“ओके” परी ने उसका हाथ छोड़ा। दोनों अपने अपने रास्ते निकल गये। दो मिनिट बाद छोटू के मोबाइल पर एक मेसेज आया। ये परी का मेसेज था-

“डरना नहीं है, फिसलना नहीं है।

दिल में सही है, करना वही है।

“तुम्हारी उड़ान का इंतजार रहेगा” छोटू ने मेसेज पढ़ा। धीरे-धीरे “अपना कैफे” आँखों से ओझल हो गया। “तुम्हारी दाढ़ी बढ़ गई है उसे क्लीन कर लेना ऐसे लगते हो जैसे हिमालय

से तपस्या करके आये हो” छोटू को परी की बातें याद आ रहीं थीं। छोटू ने अपने चेहरे पर हाथ फेरा और मुस्कुरा दिया।



दुबई

6 फरवरी, 2020

प्रेजेंट डे

“नाइस बुक रोहित” अवनी ने आंखों से चश्मा उतारकर टेबिल पर रख दिया। डायरी में पेन्सिल फसाकर बैड पर लेट गई। “तुम पहले भी ऐसा ही लिखते थे” अवनी ने एक झपकी ली। “फायदा तुमने मेरा नहीं उठाया..... गलती मैंने कर दी” एक हल्की सी आवाज आई।

मेरी इजाजत के बिना मेरी लिखी डायरी उसने पढ़ ली। एक अच्छे पाठक की तरह पढ़ने में कोई कसर भी नहीं छोड़ी थी।

रात के एक बज रहे थे। दुबई का मौसम, ठंडी का जोर, सड़के सुनसान, दूर-दूर तक कोई आवाज नहीं। ऐसे लग रहा था जैसे ये सड़के सालों से सुनसान पड़ी हों। यही तो खासियत है इस अतरंगी देश की।

“एंजला डार्लिंग” अवनी ने जोर से आवाज लगाई।

“जी मेडम.....आती हूँ” किचिन से आवाज आई।

“लो मेडम जी आपकी एक और स्पेशल कॉफी” एक उम्रदराज महिला जो हमवतन थी। उसने अवनी के रूम में दस्तक दी।

“थैंक्यू एंजला” अवनी की आंखे नींद से भरी थीं। “मेरा काम हुआ”

“कल तक हो जाएगा “महिला ने विश्वास दिलाया।” अभी मेडम आप सो जाईये आपकी आंखें बता रही हैं कि आपको नींद की शक्ति जरूरत है”

“हाँ.... डार्लिंग..... बस थोड़ी देर और...”

“जल्दी सो जाना... बड़े साब गुस्सा करते हैं... ओर ये आपका कॉफी का सातवां कप है”

एंजला ने उसे घूरकर देखा।

“थोड़ी देर.....प्लीज”

“ऐसा भी क्या पड़ रही हो तुम” उन्होंने पूछा।

“तुम न समझोगी”

“मुझे समझना भी नहीं है” एंजला ने एटीट्यूड दिखाया।
“जल्दी सो जाओ अब”

“अच्छा बताती हूँ” अवनी बोली। “मैं एक डायरी पढ़ रही हूँ अपने दोस्त की.....”

“कोई कहानी है”

“हाँ....वो भी रियल वाली”

“व्हाट एवर” एंजला ने इंग्लिश झाड़ी। “गुड नाईट” एंजला रूम से बाहर चली गई।

अवनी ने एक सिप कॉफी का लिया। उसने फिर वो डायरी खोली और आगे पढ़ने लगी.....]



23 जुलाई 2016

बरसात का समय। जगह-जगह कीचड़ की भरमार। छोटू और परी मंदिर से बाहर निकले।

सोमिल जैन “सोमू”।97

“आज मन हल्का हो गया” छोटू रुक गया।

“क्यों” परी ने पूछा।

“आज सपना मेम से बहुत दिनों बाद मुलाकात हुई थी न”

“हाँ... उन्हें भी अच्छा लगा था”

हर टीचर को अच्छा लगता है जब उनका कोई भूला बिसरा स्टूडेंट उनसे मिलने आता है। स्टूडेंट भले ही अपने समय में ढपोरचन्द्र रहा हो मगर खुशी तो होती है।

छोटू चलते-चलते रुक गया। “क्या हुआ” परी ने फिर पूछा।

“गली को छोड़कर हम मेन रोड से चलें” छोटू की आंखों में डर दिखा।

“क्यों” परी तेवर में बोली। “यहाँ से जल्दी पहुंच सकते हैं”

“नहीं..... मेरा मतलब है थोड़ी और बात हो जाएगी”

परी मुस्कुराई। मेनरोड पर दोनों एक साथ हो गए। “सच बताना उस गली से क्यों नहीं गए”

“तुम्हें पता है मुझे कुत्तों से डर लगता है और उस गली में इस टाइम कुत्तों का प्रकोप ज्यादा रहता है” छोटू ने मजबूरी भरा जबाब दिया।

“फट्टू हो तुम..... कुत्तों से डरते हो” परी ने छोटू का हाथ थम लिया।

“हाँ मेडम फट्टू ही तो हूँ कभी आप तजुर्बा लेके देखो इसका” छोटू ने मासूम सा चेहरा बनाया।

परी हंसने लगी। “मासूम हो मगर डरपोक भी”

छोटू के चहरे पर भी हल्की से मुस्कान थी। छोटू का घर नजदीक आ गया। जहां परी की कार पार्क थी।

“साथ दोगी मेरा”

“हाँ”

“बिना कंडीसन जाने”

“अगर तुम सही हो तो हमेशा तुम्हारा साथ दूंगी और अगर तुम गलत हो तो तुम्हारी गलती सुधारकर, तुझे सही बनाकर फिर साथ दूंगी”

“मतलब साथ नहीं छोड़ोगी”

“न” परी बोली। “ओके चलती हूँ”

“बाय” दोनों ने एक साथ कहा।



अगले दिन

पूरी सड़क वाहनों से खचाखच भरी पड़ी थी। दूर दूर तक कार, बाइक, रोडवेज की बसों के अलावा कुछ नज़र नहीं आ रहा था। छोटू बैग कंधे पर टांगे जिसमें उसके सारे डाक्यूमेंट्स थे; लेकर पैदल ही घर की तरफ बढ़ रहा था। वो रॉड क्रॉस करने ही वाला था कि तभी उसका फ़ोन बजा।

“कैसा रहा इंटरव्यू” उस तरफ से लड़की की आवाज आयी।

“ठीक ठाक रहा” छोटू सड़क के बगल में खड़ा हो गया।

“आज तुम्हारा मूड ठीक-ठाक हो तो मिलें कैफे में” परी बोली। “या फिर समंदर के पास वाले कैफे में”

“नहीं” छोटू ने उबासी ली।

“क्यों”

“आज मूड नहीं है थक गया हूँ बहुत”

“बस एक इंटरव्यू में सीधा-सीधा बोलो भाव खा रहे हो”

“ये 44 नंबर का इंटरव्यू था” छोटू थोड़ा रुका। “रही बात भाव खाने की तो सीधे सीधे बोल रहा हूँ मैं भाव खा रहा हूँ और भाव किसके, कब बढ़ जाएं कुछ कह नहीं सकते”

“अपना कैफे”

“शाम को” छोटू पिघल गया। “वैसे तुम्हें कैसे पता चला कि आज मेरा इंटरव्यू था”

“पता चल गया बस..... तुम्हारी दादी आर्यीं थी आज हॉस्पिटल चेकअप के लिए उन्हीं से पता चला”

“अच्छा घर पहुँचकर बात करता हूँ” छोटू ने फोन जेब में डाला।। रोड क्रॉस करके छोटू अपनी गली में पहुँच गया। उसका मोबाइल बाईब्रेट हुआ। परी के नाम से मैसेज आया।

परी, कभी गिवअप मत करना छोटू, मैदान में डटे रहना, हार मत मानना, आखिर तुम्हें अपनी उड़ान भरनी है

“थैंक्स परी” छोटू मुस्कुराया फिर उसने रिप्लाई किया।

हमें अपनी जिंदगी में मिली छोटी से छोटी सक्सेस में कई हाथ ऐसे होते हैं जो होते तो हैं मगर हमें दिखते नहीं हैं। वो कहीं न कहीं से हमें सपोर्ट कर रहे होते हैं। हमारे कामयाब होने की दुआएं करते हैं ऐसा ही कुछ परी और छोटू के बीच चल रहा था। कभी-कभी पराया भी खुशी का कारण बन जाता है और कभी-कभी आँखों का काजल भी हमारे आँसुओं का कारण बन जाता है।



शरत चौरसिया

घड़ी में सुबह के सात बज रहे थे। छोटू बहुत देर से समंदर के किनारे खड़ा ऐंजल अंकल का इंतज़ार कर रहा था। सोचा साथ में चाय का मज़ा लेंगे। छोटू वहीं बैठ गया। समंदर का पानी उसके पैरों को छूकर वापिस समंदर में समा रहा था। कुछ देर बाद एक हाथ छोटू के कंधे पर आया। वो पचपन साठ साल का बूढ़ा आदमी था।

“जी” छोटू की नज़रों ने उन्हें देखा।

“तुम ही छोटू हो” आदमी ने हाँफते हुए पूछा।

“हाँ” छोटू ने उठकर कहा। “मगर आप कौन हो”

“इसका जबाब रास्ते में चलते-चलते देता हूँ” अंकल जल्दी में थे। “अभी तुम मेरे साथ चलो....जल्दी”

“मगर कहाँ मैं आपको जानता तक नहीं तो कैसे चलूँ आपके साथ”

“शरत चौरसिया को जानते हो जो यहाँ तुमसे मिलने आते थे”

“हाँ” छोटू कंप्यूज था। “कहाँ जाना है”

“मेरे साथ चलो” छोटू उन अंकल के साथ हो लिया। चलते-चलते दोनों के पैर समंदर से बहुत दूर निकल आए।

“तुम्हारे दोस्त जिन्हें तुम ऐंजल अंकल बुलाते हो बहुत बीमार हैं” उन्होंने बताया। “शायद अब वो.....”

“क्या वो.....उन्हें हुआ क्या”

“बिजली के खम्मे पर चढ़े थे। एक शोर्टसर्किट ने उनकी हालत खराब कर दी”

“शिट”

“मैं उनकी कंपनी का एमडी था” अंकल बोले। उनकी हालत कई दिनों से बहुत सीरियस है। खाना-पीना सब बंद है बस ग्लूकोज की बोतलें ही अभी तक उन्हें जिन्दा रखे हैं जब भी होश आता तो छोटू..... छोटू..... छोटू.. की रट लगाये रहते हैं। मैं समन्दर के किनारे कई बार आकर गया मगर तुम मिले ही नहीं”

“कहाँ हैं अभी वो”

“एक बात बोलूँ” अंकल ने फिर छोटू के कंधे पर हाथ रखा।

“तुम उनके कौन लगते हो जो अपने बेटे से ज्यादा वो तुम्हारा नाम बार-बार ले रहे थे”

“एक दोस्त, एक हमदर्द से ज्यादा कुछ नहीं” छोटू ने सहमे हुए कहा।” ये दिल का रिश्ता है दुनिया नहीं समझ पाती..... क्योंकि अपने पैदा नहीं होते अपने, अपनाने से बनते हैं.... उन्हीं ने सिखाया था”

थोड़ी दूर से खानाबदोसियों की झोपड़ पट्टी शुरू हो गई। बस्ती में अंकल और छोटू घुसते ही जा रहे थे। थोड़ी ही दूर एक बिजली के खंभे के नीचे बनी झोपड़ी में घुस गए। छोटू ने देखा ऐंजल अंकल एक टूटी सी खाट पर लेटे थे।

“अंकल क्या जरूरत थी बिजली के खम्मे पर चढ़ने की” छोटू दौड़कर उनके पास आया। “कुछ रुपयों की जरूरत” चंदू अंकल बोले। उनका नाम चंदू था जो छोटू को अपने साथ लेकर आये थे।

छोटू ने परी का नंबर मिलाया। लाइन बिजी आ रही थी। उसने कई बार ट्राई किया मगर कुछ फायदा नहीं हुआ। उसने एक मेसेज टाइप किया और परी को उस पते के साथ भेज दिया। छोटू खड़ा-खड़ा टेंसन में मर रहा था। लेकिन उसके पास कोई चारा भी नहीं था। बस नंबर घुमाये जा रहा था।

चंदू अंकल उसे घूरे जा रहे थे। “आपको किस नाम से बुलाऊँ मैं” छोटू ने पूछा।

“चंदशेखर.... उर्फ चंदू” उनके चेहरे पर हल्की सी मुस्कुराहट थी।

“चन्दू अंकल ये कब की बात है” छोटू ने पूछा।

“यही कोई 10-12 दिन पहले की”

छोटू वहीं उस खटिये के पास बैठ गया। ऐंजल अंकल की आंख खुलने का इंतजार करने लगा। जब अंकल की आँखे खुली तो सामने छोटू बैठा था। “छोटू”

“हाँ... अंकल मैं आ गया” छोटू ने उनका हाथ थामा।

“देख चंदू..... सुनते हो मेरा श्याम आ गया... मेरा श्याम आ गया...” अंकल ने उसके हाथों को चूम लिया। उनके मुँह से बस यही निकल रहा था “मेरा श्याम आ गया.... मेरा बेटा आ गया”

छोटू झोपड़ी से निकलकर बाहर आ गया क्योंकि अंकल की नींद लग गई थी। “चाय पीओगे” चंदू अंकल ने पूछा।

“हाँ” दोनों झोपड़ी के पीछे बनी टपरी पर चाय पीने लगे।

“क्या सोच रहे हो” चंदु अंकल बोले।

“यही कि ये श्याम कौन है अंकल ने तो कभी नहीं बताया”

“अंकल ने तो तुम्हें ये भी नहीं बताया होगा कि वो कौन हैं”

“नहीं बताया” छोटू ने हामी भरी। “उनका एकलौता पोता”

सोमिल जैन “सोमू” | 103

छोटू ने चाय का गिलास बेंच पर रखा। “कुछ हुआ था उनके बीच”

“तुम्हारे अंकल चौरसिया ब्रदर्स कम्पनी के सीईओ कम, बेवड़े ज्यादा थे। शराब की लत ने उन्हें जिन्दा होते हुए भी मार डाला था। उनके बेटे और बहू की हत्या की गई थी मगर सिमंस एंड संस कंपनी के वकील ने कानूनी तौर पर ये साबित कर दिया था कि ये हत्या नहीं, सुसाइड है। धोखे से सिमंस कंपनी ने चौरसिया कंपनी के सारे शेयर्स हड़प लिये। उनका पोता श्याम अपने दादा से नफरत करने लगा था। कई सालों से उसने अपने दादा से बात तो दूर उनकी सकल भी नहीं देखी। कभी-कभी दादी से मिलने आता था मगर दादी के जाने के बाद उसके एड्रेस के अलावा उसका कुछ नहीं पता। सुनने में आया था कि उसने शादी कर ली। उसकी एक बच्ची भी है”

छोटू खुली आंखों से सब सुन रहा था। सच्चाई उसके सामने थी। चंदू चाचा चलने लगे। छोटू को भी अपने साथ चलने का इशारा किया।

“आंटी को क्या हुआ था” छोटू ने पूछा।

“वो इतना सब सह नहीं सकी। बीमारी उनका दूसरा नाम था। हम सब रोड पर आ गये थे। जेब में फूटी कोड़ी नहीं थी। उनका इलाज हो पाना मुमकिन नहीं था। कुछ दिनों लडती रहीं बीमारी से आखिर में मौत जीत गई और वो हार गई”

“किसी ने अंकल की हेल्प नहीं की” छोटू रुका। “अगर उनके साथ धोखा हुआ था तो इसके खिलाफ उन्हें आवाज उठानी चाहिए था”

“कैसे आवाज उठाते हम.....सिमंस कंपनी ने सबको खरीद लिया था हमारे पास वकील को देने के लिए भी एक नया पैसा नहीं था”

छोटू चुप रहा। उसके पास बोलने के लिए कुछ नहीं था।
सारी कहानी उसे साफ़ साफ़ नज़र आ रही थी।



ग़लतफ़हमी

“कब आएगी आपकी डॉक्टर.....हमेशा बिजी रहती हैं” सरकारी हॉस्पिटल में छोटू एक नर्स पर बरस रहा था।

“सर वो सुबह से ही नहीं आयीं हॉस्पिटल” नर्स बोले जा रही थी। “आज वो अपने घर से ही कहीं किसी मरीज को देखने जाने वाली थीं”

“तो फोन क्यों बन्द है उनका” छोटू का गुस्सा बढ़ रहा था। वो किसी का गुस्सा किसी पर निकाल रहा था।” कॉल करो तो फ़ोन बंद है। हॉस्पिटल में मिलती नहीं हैं। फिर जाती कहाँ हैं ये तुम्हारी मेडम”

छोटू की आवाज तेज़ थी। ये बातें सुनकर वहाँ खड़े लोग भी उसके करीब आने लगे। जिसकी जितनी भड़ास थी सब बरसने लगे। सबकी नज़रें छोटू पर थीं। जैसे सबको अपनी बात कहने के लिए एक मसीहा मिल गया हो। लोग तो हॉस्पिटल से नाराज़ थे ही और फिर आवाज़ उठाने वाला भी मिल गया तो अब सोने पे सुहागा हो गया।

“सही कह रहे हैं भैया आप” भीड़ से अलग एक लड़के की आवाज़ आई।

छोटू का हौसला बढ़ने लगा। “लोगों को बेवकूफ़ बनाने में माहिर हैं ये डॉक्टर लोग” एक कदकाठी से छोटे मगर उम्र में पिता समान आदमी ने कहा।

“हाँ.....हाँ...ऐसे ही करते हैं ये लोग.. सरकार से तनख्वाह टाइम पर चाहिए मगर हमारा इलाज करने लिए इनके पास टाइम नहीं है” एक बूढ़े मगर समझदार अंकल बोले।

“सो टका सत्य बात है भैया यहाँ हम जैसों की कोई नहीं सुनता... चार दिन से यहीं जमीन पर पड़े हैं हम.... कोई सुनने वाला भी नहीं है हमारी” जमीन पर लेटा आदमी फूट-फूट कर रोने लगा।

छोटू के चारों तरफ लोग ही लोग थे। उसका उत्साह दूना बढ़ने लगा। तभी उसके फ्रोन पर किसी ने दस्तक दी।

“कहाँ हो तुम” ये परी की आवाज थी।

“डॉक्टर आयरा को बुलाओ” भीड़ से आवाज आने लगी। छोटू भीड़ से दूर आकर बोला। “ये सवाल मुझे तुमसे करना चाहिए तुम कहाँ हो”

“क्या बक रहे हो तुम” परी ने गुस्से से कहा। “याद है कल तुमने मेसेज करके जो एड्रेस दिया था मैं वहीं हूँ”

“क्या” छोटू बीच में बोल पड़ा। “मैं वहीं आ रहा हूँ”

“ये इतनी आवाज क्यों आ रही है कोई लड़ाई झगड़ा हो गया क्या”

“नहीं कुछ नहीं.....मिलकर बताता हूँ” छोटू ने तयोरियां चढ़ाई। “यहाँ से निकल लेने में ही भलाई है” ये सोचकर वो भीड़ से बच के हॉस्पिटल के पीछे वाले रास्ते से निकल गया। “कहाँ फस गए यार” उसने मन में सोचा।

“मैं भी लोगों के बारे में कितना गलत सोचता हूँ। मजबूरी समझे बिना राई का पहाड़ बना देता हूँ। गलतफ़हमी भी बड़ा सियाप्पा है। परी तो मेरे कहने पर ही ऐंजल अंकल के ट्रीटमेंट के लिए गई थी। “तुम्हारा दिमाग कहाँ है छोटू” उसने अपने आप से कहा। “मैं भी कितना बड़ा वाला बेवकूफ हूँ”

सोमिल जैन “सोमू” | 107



“तुम्हें यहाँ आये कितनी देर हो गई” छोटू ने झोपड़ी के बाहर खड़ी आयरा से पूछा।

“करीब एक घंटा हो गया है” परी ने गुस्से भरी निगाहों से देखा।

“मुझे कॉल तो कर सकती थी” छोटू ने अपने बचाव में कहा।

“कब से तुम्हें कॉल कर रही हूँ कल भी किया था” आयरा का गुस्सा बढ़ रहा था। “ये क्या हुलिया बनाया है किसी से पिट कर आये हो”

“नहीं” छोटू की नज़रे नीचे थीं।

“झूठ”

“हाँ”

“कैसे लगी ये चोट”

छोटू चुप रहा। “मैं कुछ पूछ रही हूँ ये चोट कैसे लगी”

“कहाँ... कहाँ लगी चोट”

“ये सिर पर बेंडेज शौक के लिए लगाई है”

छोटू के पास अब कोई चारा नहीं था। बेचारे छोटू ने कल से अभी तक का सारा किस्सा कह सुनाया। हॉस्पिटल में जो पहाड़ छोटू खड़ा करके आया है वो अभी बताना बाकी था।

“क्या जरूरत थी हीरो बनने की, तुम्हें जरा भी पता है वो कितने ताकतवर लोग हैं उनका सामना तुम अकेले नहीं कर सकते”

“एक दिन अकेला ही उन्हें धूल चटाऊंगा” छोटू फुसफुसाया।

“कुछ कहा तुमने”

“नहीं तो”

“मैंने ये दवाइयां लिख दी हैं पास में मेडिकल स्टोर से ले आना” आयरा ने पर्चा उसे थमाया। “ध्यान से समय समय पर उन्हें ये दवायाईयाँ दे देना”

आयरा ने अपना हेंड बेग टांगा और तेज़ी से उस बस्ती से बाहर निकल गई।



अगले दिन

छोटू ने बहुत देर बाद अपना मोबाइल ऑन किया। तेईस मिस्ड कॉल.....ये परी थी जो कल रात से ही छोटू को कॉल का रही थी। उसने कॉल बेक किया।

“कौनसी दुनिया में जीते हो सर आप” परी का पहला तीर निशाने पर लगा था। “मैं कब से तुम्हे कॉल कर रही हूँ....”

“सॉरी.....मोबाइल बंद था”

“क्या सॉरी....ये तो ठीक है मगर जो बखेड़ा तुम हॉस्पिटल में खड़ा करके गए हो उसका क्या”

“उसका भी सॉरी परी मैंने सोचा कि.....”

“तुमने क्या सोचा.....” परी का गुस्सा बढ़ रहा था। “डॉक्टर आयरा दूसरे कामों में बहुत बिजी रहती हैं उन्हें हॉस्पिटल आने का तो टाइम ही नहीं है..... एक तो किसी की मदद करो फिर वही आदमी आकर मुझे ही चार सुनाकर चला जाये..... अच्छा नतीजा मिला मुझे मेरी नेकी का”

“परी ऐसा नहीं है मुझे पता नहीं था”

“तो पता नही होना भी तो एक गलती है”

छोटू कुछ नहीं बोल पाया। उस तरफ से भी कोई आवाज नहीं आयी। उसने देखा तो मोबाइल की बैटरी डिस हो गई। उसने अपना माथा ठोका।

हमारे साथ भी कई बार ऐसा होता है जब हम सामने वाले को अच्छे से सुन रहे होते हैं मगर कुछ टेक्निकल प्रॉब्लम के कारण हम दोषी हो जाते हैं और सामने वाला गलतफहमी पाल लेता है। छोटू भी इसी का उदाहरण है। बात तो करना चाहता था मगर बैटरी डिस हो गई और उधर आयरा ने मन में सोचा कि छोटू ने मोबाइल स्विच ऑफ कर लिया। आज वो हो गया जिसका अंदाज़ा छोटू को बिल्कुल नहीं था।



“हेलो.....डॉक्टर आयरा स्पीकिंग....” आयरा ने फ़ोन उठाया।

“मैं गुड़िया बोल रही हूँ” उस तरफ से आवाज आई।

“हाँ बोलो गुड़िया क्या हुआ”

“परी आपके साथ छोटू भैया हैं क्या.....उनका फ़ोन नहीं लग रहा” गुड़िया की आवाज से लग रहा था जैसे वो घबराई हुई है।

“नहीं... अभी थोड़ी देर पहले उसी से बात कर रही थी मगर..... अपने आप कॉल डिसकनेक्ट हो गया।

संस्कृति रोने लगी। उसके रोने की आवाज परी को साफ़ सुनाई दे रही थी। “गुड़िया.....तुम रो क्यों रही हो....क्या हुआ मुझे तो बताओ” परी ने जोर लगाया।

“द,, दद,, दादा की तबियत बिगड़ रही है” उसने हकलाते हुए कहा। “भैया भी कल से घर पर नहीं आये और उनका फ़ोन भी नहीं लग रहा” वो रोने लगी।

“ओके.....तुम रोना बंद करो मैं पांच मिनिट में तुम्हारे घर पहुँचती हूँ”

“ठीक है”

परी तुरंत अपने केविन से बाहर आई। “नर्स...डॉक्टर माथुर आएंगे तो कहना मैं उनसे आकर मिलती हूँ”

“वो तो जाने वाले हैं मेम”

“तुम कैसे भी करके उन्हें रोक कर रखना” कहकर परी तेजी से हॉस्पिटल से बाहर निकल गई।



एंजल अंकल

छोटू एंजल अंकल के पास बैठा उनसे बातें कर रहा था। धीरे-धीरे उनकी तबियत में सुधार नज़र आ रहा था। मगर छोटू आने वाली असली मुसीबत से अनजान था।

“अंकल एक चम्मच और.....खाएंगे नहीं तो एनर्जी कहाँ से आएगी” छोटू उन्हें सूप पिला रहा था। “डॉक्टर ने कहा है आपको खून की कमी है”

“कौन से डॉक्टर ने कहा” अंकल खाँसे। “उनसे कहना मैंने हँस-हँस के इतना खून बढ़ा लिया है की मेरे मरने तक खून की कमी नहीं हो सकती”

छोटू मुस्कुराने लगा। “पता है आज मैं क्या महसूस कर रहा हूँ”

“क्या”

“मैं दुनिया का सबसे बड़ा आदमी हूँ”

“क्यों.....कैसे....”

“क्योंकि... मेरा लीवर खराब हो चुका है फिर भी जिन्दा रहने की उम्मीद कर रहा हूँ कम लोगों को नसीब होती है ऐसी खुशी” ऐंजल अंकल कहते-कहते रुक गए। “अब मैं मरने वाला हूँ” कहकर जोर-जोर से हँसने लगे।

“ऐसा क्यों बोल रहे हैं आप”

“तो क्या करूँ बेटा” उन्होंने छोटू का हाथ थामा। “एक काम करोगे मेरा”

“बोलो अंकल”

“मेरे श्याम को वापिस ले आना” उनकी आंखें भर आयी।

“हाँ... अंकल” छोटू इतना ही कह पाया।

“बाहर कोई तुमसे मिलने आया है” चन्दू अंकल अन्दर आये।

“मुझसे” छोटू झोपड़ी के बाहर आया। सामने मेरी बाइक खड़ी थी।

“तुम..... तुम यहाँ क्या कर रहे हो असाटी” छोटू बोला।

“यही सवाल मैं तुमसे करूँ” मैंने उसे घूरकर देखा।” वहाँ तुम्हारे दादा की तबियत खराब हो रही है और तुम उन्हें छोड़कर यहाँ बैठे हो। तुम्हारा मोबाइल भी बंद आ रहा है। वो तो अच्छा हुआ जो परी ने मुझे यहाँ का एड्रेस दे दिया नहीं तो कहाँ ढूढ़ता मैं तुम्हें”

“मुझे चलना चाहिए”

“इसीलिए तो मैं आया हूँ.....चलो”

दोनों बाइक पर बैठे और हॉस्पिटल की तरफ निकल गए।
“एक बार ऐंजल अंकल से मिल लेता उन्हें बता देता कि अभी मैं
जा रहा हूँ” छोटू ने मन में सोचा।



एक नया मोड़

शनिवार का दिन था। हॉस्पिटल मरीजों से भरा पड़ा था। शहर के पास वाली नदी में बाढ़ आ जाने से बाढ़ में घायल लोगों का इलाज वहाँ चल रहा था।

“तीसरे फ्लोर पर” मैंने मोबाइल में देखकर कहा। तीसरे फ्लोर पर हम दोनों पहुँचे। बाहर गुडिया और रक्षा, दादी के साथ खड़ी थीं।

“भैया.....” गुडिया ने भैया को देखा और उसके सीने से जा लगी। “क्या हुआ दादा को” छोटू ने पूछा। “पता नहीं” गुडिया और जोर से रोने लगी।

सामने से अब्दुल चाचा दवाई लिए दौड़े चले आ रहे थे। छोटू ने रूम के बाहर लगे काँच से देखा दादा पलंग पर अचेत पड़े थे। ऑक्सीजन नली उनके मुँह को घेरे थी।

मैं फ़ोन पर बिजी था। “रक्षा इसे सम्हालो” छोटू बोला। रक्षा, गुडिया को दूर ले गई।

छोटू रूम के सामने बेंच पर बैठ गया। उसने अपना मोबाइल चालू किया मगर बैटरी बिल्कुल भी नहीं बची थी। नर्स आई सी यू से बाहर आई। “सिस्टर यहाँ चार्जर की व्यवस्था हो सकती है क्या”

“नहीं”

“मेरे केविन में चले जाओ” परी रूम से बाहर आई।



“घबराओ नहीं तुम्हारे दादा को कुछ नहीं होगा” परी छोटू के पास आकर बैठ गई।

छोटू हाथ बांधे बेंच पर बैठा था। उसने नज़रे उठाकर परी को देखा। इस समय उसे परी की बहुत जरूरत थी।

“आसिफ चाचा मैंने जो दवाई लिखी थी वो ले आये आप”

“हाँ बिटिया नर्स को दे दी हैं” आसिफ चाचा बोले।

छोटू बेंच पर बैठा नीचे फर्श को घूरे जा रहा था।
“ऑपरेशन करना होगा छोटू” परी ने नजदीक आकर कहा।

“कब करना है”

“जल्द से जल्द..... सुबह 10 बजे के आस-पास”

“क्यों..... आज नहीं हो सकता क्या”

“नहीं”

“क्यों”

“डॉक्टर नेनो कल हॉस्पिटल आएंगे”

“अरे यार”

“क्यों क्या हुआ” परी ने उसका हाथ थामा। “खर्चे की चिंता मत करो वो सब एडजस्ट हो जाएगा”

“नहीं वो बात नहीं है”

“तो फिर”

“जब मैंने मोबाइल ऑन किया तब एक नए नंबर से कुछ मिसड कॉल पड़ी थीं। मैंने जब कॉल बेक किया तो पता चला कि ये सिमंस कंपनी से कॉल था। मैंनेजर ने मुझे कल 9 बजे कंपनी आने के लिए कहा है”

“तो”

“मुझे समझ नहीं आया कि उन्होंने मुझे ही क्यों चुना है। मैंने अपना ईमेल चेक किया। कारण पता चला कि जिसका सोमिल जैन “सोमू”। 115

सिलेक्शन पहले हुआ था उसे अब जॉब नहीं करना इसलिए वो जगह मुझे मिली है”

“तो इसमें रोने वाली क्या बात है” परी ने छोटू की आँखें देखकर कहा।

“अगर कल मैं वहाँ चला गया तो यहाँ कौन रहेगा”

“उसकी चिंता तुम मत करो छोटू.....यहाँ रोहित है, दादी हैं, गुड़िया है, रक्षा है, आसिफ चाचा हैं.....और मैं हूँ.....”

छोटू न जाने कहाँ खो गया। उसे अपने सामने कुछ तस्वीरें स्पष्ट दिख रही थी।

“क्या सोच रहे हो अब” परी ने उसके कंधे पर हाथ रखा। “तुम यहाँ की चिंता छोड़ो... कल तुम्हें हर हाल में कंपनी जाना है..... छोटू बहुत दिन बाद ये मौका मिला है इसे खोना मत” परी की आवाज में एक विनती थी।

“मगर दादा को छोड़कर कैसे जाऊँ” छोटू फिर बोला।

“उनका ख्याल रखने के लिए हम सब हैं न” परी ने विश्वास जताया।

“तुम्हें याद है तुमने अपने आप से क्या वादा किया था कि तुम्हें उड़ान भरनी है बहुत ऊँची उड़ान” परी ने छोटू की आँखों से आंसू पोंछे।

“मगर”

“मुझ पर विश्वास है” दोनों की आँखें टकराई।

“बहुत ज्यादा” छोटू आगे कुछ नहीं बोल पाया। गहरे सन्नाटे के बाद “तुम्हारा अहसान में जिन्दगी भर नहीं भूलूँगा परी”

“अहसान बताकर पराया कर दिया”

“एक बात पूछूँ”

“पूछो”

“साथ रहोगी मेरे”

“हाँ” परी का जबाब बिना किसी फ़िल्टर के था।

“हमेशा.... जिंदगी भर”

परी खड़ी हुई। “हमेशा...जिंदगी भर” उसने जाते-जाते छोटू के आंसू पोंछते हुए कहा। “मैं उस वक्त ही तुम्हारे साथ नहीं रहूंगी जब सारी दुनिया तुम्हारे साथ होगी, मैं तब भी तुम्हारे साथ रहूंगी जब तुम्हारे साथ कोई नहीं होगा”

रात का समय था। ठंड बढ़ने लगी थी। छोटू खिड़की के पास खड़ा, चाँद को निहार रहा था। उसके मन में विचारों का टकराव चल रहा था।

“एक तरफ एंजल अंकल, जिन्हें मैं ऐसी हालत में छोड़कर आ गया.....

“एक तरफ दादा, जिन्हें मैं एक पल भी छोड़कर जाना नहीं चाहता.....

“एक तरफ नौकरी जो बड़ी मुश्किल से मिली है...

तमाम सवाल भीड़ में खड़े अपने अपने जबाब के इंतजार में थे। तीनों सवाल में से करने के लिए कोई एक चुनना था।

धीरे-धीरे समय बीत रहा था। उसे नींद के झटके भी आने लगे थे। चाँद दिखना बंद हो गया। चारों तरफ अंधेरा छा गया। नीचे देखने पर रास्ते में बनी स्ट्रीट लाइट ही चमक रही थी। कुछ ओस की बूंदें किनारे पर लगे पेड़ों पर जमा हो गयीं थीं। कुछ बूंदें छोटू की आँखों को भी सहला रही थीं मगर अफ़सोस ये ओस की बूंद नहीं थी। ये उसके आंसू थे।

अंधेरा बढ़ रहा था। छोटू की आँखें अब कुछ नहीं देख पा रही थीं। अंधेरा.....सिर्फ अंधेरा....घना अंधेरा.. कुत्तों के भोकने

की आवाज आज दूर दूर तक दिखाई सुनाई नहीं दे रही थी।
अंधेरा..... अंधेरे का कालापन.....

प्रेजेंट डे

अवनी ने डायरी के पन्नों को पलटा मगर आगे कोरे पन्नों के अलावा कुछ नहीं था। रात के चार बज गये थे। उसने डायरी बंद कर दी। उसके कमरे में उजाला अभी भी फैला था। उसने मुझे मेसेज किया- “छोटू ने फिर क्या चुना”



गलती

“फिर क्या हुआ रोहित..... छोटू ने क्या चुना” दुबई की अटलांटिस होटल के कॉफ़ी शॉप में बैठी अवनी ने मुझसे पूछा।

“मेरी इजाजत के बिना तुम मेरी डायरी कैसे पढ़ सकती हो” मुझे गुस्सा आ रहा था। मैंने डायरी उसके हाथों से छीन ली।

“Sorry”

“What sorry”

“गलती हो गई”

“अवनी, गलती तुमसे आज नहीं बहुत पहले हो गई थी” मैंने गुस्सा कंट्रोल किया।

“शायद”

“Its ok....and sorry”

“सॉरी” अवनी की आँखें बता रहीं थी कि उसने बहुत बड़ी गलती कर दी। एक फेमस पब्लिकेशन की एडिटर होते हुए भी उसने ये गलती कर दी।

“मुझे दुबई दर्शन तो करा दो” मैंने बात बदलनी चाही और मैं कामयाब रहा।

“हाँ क्यों नहीं” अवनी बोली। “अच्छा लिखते हो तुम” उसकी इस बात ने मेरा दिल छू लिया।

“कॉलेज टाइम में भी मैं बहुत अच्छा लिखता था मगर तुम्हें लगा कि मैं तुम्हारा इस्तेमाल अपनी बुक पब्लिश कराने के लिए कर रहा हूँ क्योंकि तुम्हारे पापा बड़े पब्लिशर थे “मैंने बीती

बातें अवनी को गौर कराई।” आज तुम ही बोल रही हो कि मैं अच्छा लिखता हूँ”

“उस टाइम मुझे जो लगा मैंने किया और मानती हूँ मैं गलत थी”

“गलत लगने और गलत होने में फर्क होता है मेडम”

“6 साल पहले वाली अवनी को ये बात पता नहीं थी रोहित”

“चलो देर से सही तुम्हें ये अहसास तो हुआ कि मैं गलत नहीं था तुम्हारी गलतफहमी का शिकार बना था”

अवनी कुछ नहीं बोली। कुछ सेकेंडों में उसका मन 6 साल पहले वाले ज़माने में घूम आया।

“तो.....बताओ कुछ अपने बारे में”

“Nothing special”

“हिंदी किताब पढ़ने का शौक है तुम्हें”

“हां बहुत ज्यादा”

“अच्छी बात है” मैंने माहोल बदलने की कोशिश की।
“तुम यहाँ कितने साल से हो”

“यही कोई चार साल से”

“पढ़ाई के लिए”

“हाँ..... कुछ दिनों में पढ़ाई कम्पलीट होने वाली है”

“अच्छा..... फिर इसके बाद”

“उसके बाद क्या” अवनी ने भौहें सिकोड़ी।

“भारत वापिस जाओगी या यहीं दुबई में सेटल होने का इरादा है”

“भारत वापिस जाना नामुमकिन है यहीं रहूँगी जॉब भी मिल रही है सेट है सब”

“अच्छी बात है”

“और तुम्हारा”

“फुल टाइम राइटिंग करूंगा”

“Very good” अवनी मुस्कुराई। “अभी क्या करते हो”

“लाईब्रेरी सम्हालता हूँ”

“Good..... सच बताऊ तो इस डायरी की कहानी बहुत अच्छी है”

“थैंक्स लेकिन अवनी कहानी, कहानी होती है उसे अच्छा बुरा तो हम कहते हैं”

“जैसे”

“जैसे तुम उस कहानी के हीरो छोटू से कनेक्ट हो गई हो आखिर तुम्हारा भी दोस्त था छोटू”

“दोस्त नहीं विपक्षी दल का नेता”

“हाँ..... बहुत बेईज्जती करायी थी उसकी तुमने” मैंने याद करते हुए कहा।

“मिलाया भी तो मैंने ही था दोनों को”

“ऐसा भी क्या मिलाना अवनी” मैं थोड़ा रुका। “तुमने परी के हाथ में एक लिफाफा जो असल में “लव लेटर” था ये कहकर उससे कॉलेज की प्रिंसिपल को भेजा था कि ये सरकारी आदेश वाला लेटर है”

“वो “लव लेटर” मैंने ही लिखा था छोटू के नाम से”

“बेचारा कालेज प्रसीडेंट भी नहीं बन पाया था उस “लव लेटर” की वजह से”

“प्रसीडेंट तो नहीं बना लेकिन परी और छोटू भैया की तो जम गई” अवनी हंसने लगी।

“वेटर..... वन कोल्ड कॉफी और तुम्हें अवनी”

“Cold coffee” उसने भी वेटर को इशारा किया।

“राइटर तो तुम पहले से थे अच्छे फिलॉसफर भी बन सकते हो तुम”

“जरूर” मैंने हामी भरी। मेरी नज़रे अब उस कॉफ़ी कैफे में आते जाते कपड़ों से रईस लग रहे लोगों पर थी। हमारी कोल्ड कॉफ़ी हमारे टेबिल पर थी। मैंने कोल्ड कॉफ़ी की एक बड़ी सी सिप ली।

“पूरा कब करोगे ये कहानी” अवनी ने कॉफ़ी का मजा लेते हुए पूछा।

“कुछ दिनों में पूरा करूंगा” मैंने जबाब दिया।

“कितने दिन में”

“एक हफ़्ता”

“यहीं दुबई में पूरा करोगे ये कहानी”

“नहीं.... अपने देश में” मेरा सीधा जबाब था। “मैं यहाँ सिर्फ़ एक इवेंट अटेंड करने सिर्फ़ तीन दिन के लिए आया हूँ”

“कब जा रहे हो इंडिया” उसने मुस्कुराहट के साथ पूछा।

“कल”

“इतनी जल्दी”

“हाँ” मैंने कहा। “जितना घूमना है दुबई दो दिन में घूम लेंगे”

“अच्छा एक सवाल पूछू तुमसे” उसने अपने चेहरे पर बिखरी लटों को एक तरफ़ किया।

“पूछो” मैं पिघल गया। “मगर बस एक ही सवाल मुझे देर हो रही है”

“फिर क्या हुआ छोटू का... उसकी उड़ान का..... भरी उसने उड़ान” अवनी का एक और सवाल मासूमियत से भरा था।

“हाँ” मैंने कहा। “उड़ान भरना उसका सपना था मगर वो इस बात से बेखबर था कि इस उड़ान में उसका सब कुछ दाव पर

लग जायेगा... उसका सब कुछ चला जायेगा, फिर वो होगा जिसकी उम्मीद न मुझे थी न उसे मगर इस बात का उसे कोई गम नहीं था। वो अकेला हो गया बहुत अकेला” मेरी आवाज थम सी गई।

“सबकुछ मतलब” अवनी की आँखों में मैंने उत्सुकता का सैलाब देखा।

“शायद..... सब कुछ”

“शायद.... या पक्का सब कुछ...” फिर एक और सवाल उसने पूछ लिया।

“अभी नहीं अवनी” मैं खड़ा हो गया। “मैं लेट हो रहा हूँ वीरे का कॉल भी आ रहा है”

“फिर कब मिले”

“शाम को” मैंने अपना ब्लेज़र पहना।

“कल मेरे एग्जाम खत्म हो रहे हैं तो कल मिल सकते हैं” उसने पूछा और बेसब्री से मेरे जबाब का इंतज़ार करने लगी।

“देखते हैं”

“कॉल करूँगी”

“ओके”

मैं उस कॉफ़ी शॉप से निकल गया। बाहर मेरा दोस्त मेरा इंतज़ार कर रहा था।



अधूरी कहानी

“कौन है” गेट पर नोक करने पर मैंने पूछा।

“सर आपकी हॉट कॉफी” उस तरफ से आवाज आई।

मैं खुश हो गया। यहाँ की ठंड में हॉट कॉफी काढ़े का काम करती है। मैंने गेट खोला। वेटर मुस्कुराया। अंदर आके उसने टेबिल पर कॉफी रखी।

“गुड नाईट सर” उसने चेहरे पर स्माइल वाला एक्सप्रेसन देकर कहा।

“गुड नाईट” सेम एक्सप्रेसन के साथ मैंने उसे विदा किया।

मुझे सोचते सोचते एक घंटा हो गया था। कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि क्या लिखूं। बस एक कहानी दिमाग में घूम रही थी जिसे मैं अपनी डायरी के कोरे पन्नों पर उतार देना चाहता था।

मैंने कॉफी की पहली सिप ली और फिर सोचने लगा। मैंने फिर कप को होंठो से लगाया और एक लंबा घूट भर लिया। मेरे दिमाग की नसों ने काम करना शुरू किया। धीरे-धीरे कागज मेरे पैन की स्याही को सोख रहे थे.....

यह एक घटना, एक अध्याय था, जो समाप्त हो
गया.....
विरासत में रह गई थी तो बस उसकी यादें..... यादें....
यादें.....

तीन साल बाद.....

एक अधुरा सा जो था

1 फ़रवरी 2019

इन 3 सालों में सब कुछ बदल गया। अच्छे दिनों का तूफान अब खत्म हो गया था। मध्यप्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में नई सरकार आई थी। लोगों ने एक बार फिर नई सरकार पर भरोसा किया था। प्रधानमंत्री के चुनाव का साल भी यही था। देश की इकॉनमी भी काफी हद तक बड़ चुकी थी। इस साल आईपीएल क्रिकेट भी चुनावी दौर के कारण भारत में न होकर दक्षिण अफ्रीका या दुबई में होने की सम्भावना थी। पिछली साल फ्लू की तरह फैला “मीटू” केम्पेन के तहत बॉलीवुड इंडस्ट्री के कई नामचीन लोग इसके शिकार हुए। जनवरी में आई दिव्य प्रकाश दुबे के नावेल ने लाखों लोगों का दिल छू लिया था। अखबारों में चुनाव के मुद्दे को छोड़कर “साहिल सोनी” के चर्चों ने दिनों-दिन आग पकड़ ली थी। हर अखबार उसकी सफलता की स्टोरी बताने के लिए उसके करीबी लोगों से बातचीत कर रहे थे। मीडिया में भी साहिल सोनी का नाम सुर्खियों में था। जिसको अब तक कोई नहीं जानता था आज उसके नाम पर फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर आदि तमाम सोशल नेटवर्क साइट्स पर “साहिल सोनी” के नाम से फेक अकाउंट बन चुके थे। हर कोई जानना चाहता था “आखिर ये साहिल सोनी है कौन” जो इंडिया की टॉपमोस्ट कंपनी “सिमंस एंड संस” को टक्कर दे गया।

टक्कर ही नहीं दे रहा बल्कि इंडिया की टॉप टेन कंपनियों में भी टॉप पर खड़ा है। मीडिया ने ये जानकारी भी अपने दर्शकों तक पहुंचाई कि साहिल सोनी ने 6 महीने पहले ही सिमंस कंपनी छोड़ी थी।

आज सिमंस के शेयर दिनों-दिन गिरते जा रहे हैं। आखिर क्या वजह है जो साहिल सोनी ने अपनी कंपनी “उड़ान” को मार्केट में लॉन्च कर दिया। खबरों का सिलसिला जारी रहेगा बड़ी खबरों के लिए देखते रहिये हमारा चैनल “खबर दिनभर”



छोटू उर्फ साहिल सोनी.....

साहिल अपनी कंपनी के टॉप फ्लोर की खिड़की से उन रास्तों को देख रहा था जो अब उसके रहगुजर थे। जिस दुनिया को देखने के लिए वो वर्षों तरसा आज वही सबकी दुनिया बन चुका था। कंपनी का सीईओ होना कोई छोटी बात नहीं है। इस साल के “बिजनेस मेन ऑफ द ईयर” अवार्ड में भी उसका नाम नोमिनेटेड है।

हमारी लाइफ दो तरह की है। एक वो, जो दुनिया देख रही है और दूसरी वो जो हम देख रहे हैं या महसूस कर रहे हैं। दोनों की अहमियत अपनी-अपनी जगह सही है मगर जरूरी वो है जो लाइफ हम जी रहे हैं।

“क्या देख रहे हो सर”

“कुछ नहीं अंकल”

“सॉरी मैं बिना गेट नोक किये अन्दर आ गया” ये चंद्रशेखर उर्फ चंदू अंकल थे। कंपनी के एमडी और साहिल के पर्सनल एडवाइजर।

“पहले तो मुझे सर बुलाना बंद करो क्योंकि जिनके लिए दिल के दरवाजे हमेशा खुले रहते हैं उन्हें नोक करने की जरूरत नहीं रहती”

“तुम इस कंपनी के सीईओ हो और हमारे बॉस भी..... रेस्पेक्ट देना हमारा फर्ज है” चन्दू अंकल मुस्कुराये।

“ठीक है” छोटू बोला। “आपसे बातों में जीत पाना मुश्किल है अंकल”

“जी जनाब आखिर तुम हमारे बेटे की उम्र के हो” चन्दू अंकल जाने लगे। “10 मिनट”

“याद है मुझे मीटिंग है”

चंदू अंकल केविन से चले गये। छोटू कुर्सी पर बैठ गया। मीटिंग के दौरान क्या बात करनी है वो सोचने लगा।



“Well done साथियों! आज हमारे लिए एन्जॉय का दिन है” साहिल ने मीटिंग रूम में बैठे कम्पनी के सभी सदस्यों से कहा। “कुछ ही महीनों में हमारी कंपनी ने दुनिया भर में पहचान बना ली है। हमारी उड़ान को एक नयी ऊंचाई मिली है। कीमती प्रोडक्ट को सस्ते दामों में बेचकर भी हमारा अपना मार्केट टॉप पर है। इससे हमने लोगों का भरोसा भी जीता है। हमने जो विज़न बनाया था जो सपना देखा था। वो हम पूरा कर चुके हैं। जिस सिमंस कंपनी ने हमसे कहा था कि हमारी कोई ग्रोथ नहीं है आज उसे भी चक्कर आ रहे हैं। मेहनत और किस्मत दोनों ने हमारा साथ दिया। एक बार जोरदार क्लेपिंग आप अपने लिए कर सकते हैं”

सबके चेहरे खिले गये थे। सब खुश थे। सबकी आँखों में कम्पनी के सपने, उसका विजन क्लीयर था।

“बधाई हो सर” मिश्रा जी स्माइल देते हुए बोले।

“थैंक्स मिश्रा जी”। “हम अपने कस्टमर को बेस्ट से बेस्ट क्या दे सकते हैं इसके लिए आइडियाज सोचने होंगे। अपने सपनों को हमें पूरा करना ही है। सालों की मेहनत के बाद कंपनी ने जो ये मुकाम पाया है उसे और ऊँचाई देनी है”

मोबाइल बार-बार साहिल का ध्यान खींच रहा था। स्क्रीन पर मेरा नाम चमक रहा था।

“सर हम सब आपको एक सरप्राइज देना चाहते हैं तोहफा कुबूल करें” मिसेज चंचलानी कुर्सी से उठीं।

“कैसा सरप्राइज”

मीटिंग हॉल में बैठे कंपनी के सभी सदस्य, एमडी से लेकर स्वीपर सब खड़े हो गए।

“कंपनी के सीईओ, हमारे बॉस,” बिजनेस मेन ऑफ द ईयर” अवार्ड के लिए जिनका नाम नोमिनेट हुआ है ऐसे मिस्टर साहिल सोनी की हम सब की तरफ से छोटा सा तोहफा” तालियों की गड़गड़ाहट से रूम गूँज उठा।

“ये मेरे लिए सबसे बड़ा तोहफा है क्योंकि ये मेरे अपने लोगों ने मुझे दिया है मैं इसका बहुत शुक्रगुजार हूँ”

“सर आपसे मिलने के लिए रोहित सर आये हैं” पियोन ने साहिल के करीब आकर कहा।

“रोहित.....एक काम करो उन्हें मेरे केविन में ले जाओ मैं मीटिंग खत्म करके आता हूँ”

“जी सर” पियोन जाने लगा। “बोल रहे थे बहुत जरूरी बात करनी है” उसने जाते जाते कहा।

एक घंटे बाद मीटिंग खत्म हुयी। पाँच मिनिट के चालीस मिनिट हो गए मगर उसे अभी भी कुछ याद नहीं आया।

केविन के बाहर खड़े पियोन से साहिल ने पूछा। “रोहित सर कहाँ गए”

“वो तो चले गए साब बहुत देर से बैठे थे”

“ओके” छोटू अपने केविन में आ गया। “थोड़ा रुक भी नहीं सकता असाटी खुद को मेरा भाई कहता है और जब भाई बनने का मौका मिलता है तो भाग जाता है”

छोटू ने रोहित का नंबर मिलाया। “थोड़ा रुक नहीं सकता था असाटी” साहिल बोला।

“बहुत देर हो गई छोटू... अब मेरे रुकने से कुछ नहीं होने वाला... जो बचा था वो भी बिखर गया” मेरी उदासी मेरी बातों में साफ़ दिखी।

“क्या बोल रहे हो असाटी तुम” चेयर पर बैठते हुए साहिल ने कहा। “क्या देर हो गई, क्या बिखर गया, तू कहना क्या चाहता है असाटी”

“परी”

“हाँ परी.....तो”

“परी गई”

“मतलब....असाटी तू है कहाँ....जहाँ भी है समंदर के पास वाले कैफेटेरिया में मिल”

“जल्दी आना” मैंने फ़ोन रख दिया।



तेरी उड़ान ने दम तोड़ दिया

उस रोज उसने नोकरी पर जाना पसंद किया था। उस रोज उसने परी की बात मानी थी। फिर कभी वो एंजल अंकल से नहीं मिला। खबर आई थी कि वो अब दुनिया में नहीं रहे। उस रोज वो अपने दादा को भी नहीं बचा पाया। उस रोज छोटू ने दादा की डेथ का सारा इल्जाम परी और गुडिया पर थोप दिया। उस रोज बहुत कुछ घट गया।

“इतना उदास क्यों है असाटी” साहिल ने मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

“कुछ नहीं” मेरे हाथ समन्दर के किनारे पड़ी गीली रेत से सने थे।

“चलो कॉफी शॉप में चलकर बात करते हैं” उसने मुझसे कहा।

“कुछ लोग भूल जाते हैं कि वो इसी मिट्टी पर बैठकर ही अपने सपने पूरे कर पाए हैं” मैंने कठोरता से कहा।

“मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा असाटी तू क्या कह रहा है”

“कैसे समझ आएगा तुझे तू तो अब समझाने वाला बन गया है”

“अच्छा सुन.... मुझे शुरू से बता हुआ क्या है तुझे असाटी”

“एक घंटे से तुम्हारा इंतज़ार ही कर रहा था” मैंने गुस्से से कहा। “मैं ही सबसे बड़ा पागल हूँ मैं क्यों करूँ तुम्हारा इंतज़ार,

हर कोई तुम्हारा ही इंतज़ार करता रहे और तुम उसे इंतज़ार कराते रहो... ऐसा क्या बन गए हो छोटू तुम जो तुम्हें इतना गुरुर आ गया है”

“खुलकर बताएगा असादी”

“कुछ और भी लोग थे जो तुम्हारा इंतज़ार सालों से कर रहे थे मगर अब वो भी गए....

“कौन लोग”

“परी” मैंने अपने आँसू पोछे। “बहुत देर कर दी तुमने छोटू”

“कहां गई परी”

“चली गई वो हमेशा के लिए”

“रोहित मैंने तुमसे पहले ही कहा है कि मेरे सामने उसका नाम मत लिया करो उसने विश्वास तोड़ा था उसने मेरे दादा को मुझसे छीना था”

“कौन-सा विश्वास छोटू....यही कि उसने तुमसे ये वादा किया था कि वो तुम्हारे दादा को बचा लेगी मगर वो उन्हें नहीं बचा पाई इसी वजह से तुम उससे रुख्सत हो गए”

“इतना काफी नहीं था” उसने कहा।

“अच्छा..... माना वो तुम्हारे दादा को नहीं बचा पायी ये उसकी गलती थी मगर मानलो उस जगह पर अगर तुम होते तो उन्हें बचा सकते थे?बोलो छोटू इसका जबाब है तुम्हारे पास?

“शायद.....”

“ये शायद क्या होता है....या तो बचा सकते थे या नहीं” मेरा गुस्सा बढ़ रहा था। “होनी को कौन टाल सकता है और उसने तो पूरी कोशिश की थी दादा को बचाने की... मगर किस्मत को कुछ और मंजूर था। उसकी क्या गलती थी। उस वक्त मैं भी तो वहाँ मौजूद था मैं भी कुछ नहीं कर पाया तो क्या तुम

मुझसे भी दूरियां बना लोगे.... बोलो छोटू जबाब दो... सॉरी ग्रेट बिज़नेस मेन मिस्टर साहिल सोनी.....”

“तुझसे जुदा होने की मैं सोच भी नहीं सकता असाठी” उसकी आँखें चमकने लगी थीं।

“सबके पास सीमित समय होता है और सबका समय कीमती होता है.....”

“माफ़ कर दे असाठी” उसने रो दिया। “अगर मेरे करने से कुछ होता तो मैं एंजल अंकल को भी बचा सकता था”

“अब रोने से क्या होगा छोटू तू हमेशा देर कर देता है परी जितनी केयर तेरे परिवार की करती थी, जितना प्यार वो तेरे परिवार से करती थी, उतना शायद वो अपने परिवार से भी प्यार नहीं करती होगी हर वक्त उसने तेरा साथ दिया चाहे वो तेरे अंकल हों या फिर दादा... मगर तूने उसे क्या दिया तीन साल का इंतज़ार और अब भी तुझे नहीं लग रहा कि इसमें तेरी कोई गलती है” मैं उस पर भड़क रहा था।

छोटू नीचे पड़ी रेत को गौर से देख रहा था उसके आँसू भी उसमें घुल रहे थे।

“अब तो बहुत खुश होंगे न तुम..... टॉप बिज़नेस मेन बनकर.... मिस्टर साहिल सोनी

“बिज़नेस मेन ऑफ द ईयर” जो कहता था मुझे सब मिल गया वो आज यहाँ संमंदर के किनारे बैठा रो रहा है..... मोस्ट बिज़नेस मेन.....” मेरा गुस्सा बढ़ता जा रहा था। “कब तक छोटू इस बनावटी मुस्कान से दूसरों को बेवकूफ बनाता रहेगा.....वो बेवकूफ बन भी जाये मगर मुझसे कैसे छुपायेंगे अपने आँसू, अपना दर्द जो तेरी उसी हँसी के पीछे छुपा है जो हंसी तू लोगों को दिखाता फिरता है। बुलंदी ने तुम्हारे कान बंद कर दिए हैं। तुम उन्हें भी भूल गए जो उस वक्त तुम्हारे साथ थे जब तुम कुछ

भी नहीं थे। वो जो सिर्फ तुम्हारा भला चाहते थे। तुम्हें कामयाब बनते देखना उनका सपना था। कब तक खुद से कहता रहेगा कि तू सबके बिना खुश है, कब तक तू खुद को धोखा देता रहेगा... कब तक छोटू.....” मैं आज फुल फॉर्म में था। उसके पास कोई जवाब नहीं था। वो उन बातों को याद कर रहा था जो शोहरत के शोर में उसे सुनाई नहीं दी।

“बोलो छोटू.....” मैंने फिर जोर लगाया।

“हाँ मैं खुश हूँ” उसकी आंखें लाल थीं चेहरे पर गुस्सा था।” मैं बहुत खुश हूँ सबके बिना.. इतनी ऊँचाई पाने के बाद तुम्हें लगता है कि मैं खुश नहीं रहूँगा.... मेरा सपना यही था और अब वो पूरा भी हो गया”

“सही है मगर एक सपना ये भी था कि तू हर सपने को अपनों के साथ एन्जॉय करेगा। आज तू खुश है अपने सपनों के साथ अपनों से जुदा होकर...तू बहुत ऊँचाई पर पहुँच गया है मेरे दोस्त मगर अंदर से खोखला हो गया है.... ऊँचाई पर तेरी उड़ान ने दम तोड़ दिया.. तुझे खुद पता नहीं चला कि अपनों की कदर करने वाला अब क्या बन गया है उन सपनों की क्या कीमत छोटू जो अपनों से दूर कर दें”

उसने मेरा हाथ पकड़ा। “इस वक्त मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा असाठी मैं क्या करूँ...मेरे भाई तू बता मैं क्या करूँ” वो मेरे गले लग गया और बच्चे की तरह फूट-फूट कर रोने लगा। थोड़ी देर तक हम दोनों कुछ नहीं बोले।

“पता है आज मैं तेरे पास किसे लेकर आया था”

“किसे” उसने आँसू पोछे।

“वही जो तुझे तेरी उड़ान भरने के लिए कहती थी.....हर वक्त तेरे साथ खड़ी रहती थी”

“परी” उसका जवाब था।

“तीन साल में तूने एक भी बार उससे बात नहीं की। जो चला गया, जो बीत गया वो लौटकर वापिस नहीं आएगा मगर जो पास है उसे क्यों खो रहे हो.... इतना ईगो किस काम का छोटू”

“क्या चाहती थी वो” उसने आँसू भरी आंखों से मुझे देखा जैसे वो मुझसे अभी पूछेगा कि कहां है वो.....”

“बताना चाहती थी कि उस दिन उसकी कोई गलती नहीं थी बल्कि वो उस दिन उस ऑपरेशन रूम में थी ही नहीं”

“वो एक बार मुझे बता नहीं सकती थी ये बात”

“बताना चाहती थी मगर तुमने उसे मौका कब दिया, उसकी मजबूरी समझे बिना अपना गुस्सा उस मासूम पर थोपते गए तुम्हारी मजबूरी तुम्हें समझ आती हैं दूसरों की मजबूरी तुम्हें नज़र भी नहीं आती”

“मुझसे बहुत बड़ी गलती हो गई” उसने कहा।

“इसी वजह से गुड़िया भी तुमसे दूर चली गई, उसे भी तुमने खो दिया। अपने दादा की मौत का जिम्मेदार भी तुमने गुड़िया को ठहराया था। असल बात ये थी कि उस समय गुड़िया वहाँ थी ही नहीं और तुमने बिना सुने बिना समझे उसे अपने से दूर कर दिया... जल्दबाजी में उसकी शादी भी करा दी”

“मैं क्या करता उस वक्त मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा था”

“अब समझ में आ रही है जब तुझे नींद लाने के लिए नींद की गोली खानी पड़ रही है किस काम की ऐसी उड़ान..... एक बार खुद से पूछते तो कि ये सही है या गलत..... सोचते अगर मैं उस जगह होता तो क्या उन्हें बचा पाता.... क्या अवश्यम्भावी चीज को रोक पाता... इसमें उन दो मासूमों का क्या दोष था” मैंने अपनी पूरी भड़ास निकाल ली।

“बस यार असाटी”

“अब तू मुझे भी भूल जा, रह अपने सपनों के साथ, उन सपनों की क्या कीमत जो तुम्हें अपनों से दूर कर दे” मैं जाने लगा। “अकेलापन ही तेरी किस्मत है”

“तू मुझे छोड़कर कहाँ जा रहा है असाटी” उसने मेरा हाथ कसके पकड़ लिया। “मुझे बता अब मैं क्या करूँ... पहले अपने मेरे पास थे मगर मैं सपनों के पीछे भाग रहा था अब सपने पूरे हो गए मगर अपनों के लिए तरस रहा हूँ अब समझ आ रहा है कि वहीं तो खड़ा हूँ जहाँ से शुरू किया था”

मैंने उसे गले लगा लिया। मेरी भी आँखें भर आईं। दो मिनिट तक हम दोनों शांत रहे। “तेरी उड़ान के लिए आसमान छोटा पड़ गया यार”

“अभी वो कहाँ है” उसने कहा।

“अब तो शायद वो चली गई होगी”

“कहाँ”

“ये उसने नहीं बताया”

छोटू ने मोबाइल पर नंबर मिलाया जो तीन साल से मोबाइल में सिर्फ पड़ा था।

“कॉल क्यों नहीं अटेंड कर रही है ये” उसने कहा।

“अच्छा मैं चलता हूँ पापा की तबियत खराब है बुआ को लेने मुझे ही जाना पड़ेगा” मैंने जाने की इजाजत माँगी।

“ये बाते मुझे क्यों समझ नहीं आयीं असाटी”

“कोई बात नहीं छोटू ये दिल की बातें हैं दिमाग से समझ नहीं आती”

“फिर कब मिलेगा असाटी”

“कॉल करके बताऊंगा” मैंने कहा। “छोटू जाते-जाते यही कहना चाहता हूँ अगर गलती तूने की थी तो सुधरेगा भी तू सोमिल जैन “सोमू”। 137

ही..... उड़ान अभी बाकी है मेरे दोस्त... सपनों की तो भरली उड़ान मगर अपनों के साथ..... उड़ान अभी बाकी है...उसे वापिस ले आना वो तुम्हें बहुत चाहती थी” मैं वहाँ से चला गया।

मैंने उसकी नज़रों से दूर पहुंचकर मोबाइल पर एक मेसेज टाइप किया और छोटू को भेज दिया।

“मत रुलाओ उन्हें जो तुमसे प्यार करते हैं

टूट के चाहने वाले अब बड़ी मुश्किल से मिलते हैं”

छोटू हाथ में मोबाइल पकड़े रो रहा था। “सब तेरी ही गलती है” उसके मन में चल रहे युद्ध से आवाज आई। “क्या किया तूने... कुछ अपनों ने तेरा साथ छोड़ा, कुछ का तूने साथ छोड़ दिया.... हो गयी तसल्ली.. भर ली उड़ान” वो अन्दर ही अन्दर खुद को गालियाँ दिए जा रहा था।

“तू तो परी को भी भूल गया छोटू” उसने अपने आप से फिर कहा। “तेरी हर जरूरत में तेरे साथ थी और जब तेरी बारी आई तो तू उसे किसके भरोसे छोड़ आया.... अब तो तुझे तेरे साथे से भी धिन आने लगी होगी.....”

आज छोटू की सारी गलतफहमी दूर हो रहीं थी। “मर गए तेरे सारे सपने” उसकी आँखें भीग गई। “वो तेरे सपने नहीं लालच थी जिन्होंने आज दम तोड़ दिया अरे सपने तो वो होते हैं जो पूरे होने के बाद संतुष्टि दें, दुख नहीं, डर नहीं, आँसू नहीं इसलिए शायद तू अकेला रह गया.....तू अकेला ही ठीक है.... अकेला... उसने कानों पर हाथ रख लिए, जोर जोर से चीखने लगा....नहीं....नहीं.....”

छोटू पूरी तरह से टूट चुका था। “उठ जा छोटू” उसके अंदर से एक आवाज आई। “अभी भी समय है ज्यादा कुछ नहीं

बिगड़ा, घुटने टेक देना अपनो के सामने उन्हें घर ले आना.. क्या कर रहा है छोटू उठ.. खड़ा हो... उसे रोक ले... परी को रोक ले”

उसने मोबाइल निकाला। गुड़िया का नंबर मिलाया।

“हेलो भैया....” गुड़िया की आवाज में खुशी थी।

“कैसी है तू” छोटू की जबान लड़खड़ा रही थी। उसने आँसू पोछे।

“अच्छी हूँ... मस्त”

“भूल तो नहीं गई अपने भाई को”

“ऐसी बातें क्यों कर रहे हो भैया.... आपको क्यों भूलूँगी” उसने स्पष्ट जवाब दिया। “रो क्यों रहे हो आप”

“माफ़ कर दे अपने भाई को”

“आप भी क्या लेकर बैठ गए.....” गुड़िया ने समझदारी दिखाई। “आपकी मजबूरी मैं समझ सकती हूँ आप ही तो कहते थे कि जब हम मजबूरियों को समझने लगेंगे तो गलतफहमियां खड़ी ही नहीं होंगी”

“मेरी गुड़िया अपने भैया से भी समझदार हो गई है” उसने अपने आँसू पोछे।

“ये क्या भैया आप चुप नहीं हो रहे हो” उसने डाँटना शुरू किया। “देखो परी आपके मामा रोते हैं”

“परी..... कौन”

“आपकी भांजी भैया” परी बोली।

“अच्छा.... मिलने आ सकती है अपने भाई से”

“क्यों नहीं.... परी भी बहुत परेशान करती है थोड़ा अपने मामा को परेशान कर लेगी”

“तू आज मैं तैयार हूँ परेशान होने के लिए”

“भैया परी से बात की” उसने धीरे से कहा।

“नहीं”

“अभी भी उससे नाराज हो”

“नहीं... गलती मेरी थी उसे समझने में मैंने बहुत देर कर दी”

“उसे मना लेना भैया.... वो सबसे ज्यादा आपकी केअर करती थी”

“हाँ गुड़िया.... चल अभी रखता हूँ बाद में बात करता हूँ”
छोटू ने काल डिसकनेक्ट किया।

उसका सिर हल्का हो गया। “अगर आप साथ होते तो आपका बच्चा खुद को अकेला महसूस नहीं करता.... खाली-खाली सा लग रहा है अब...” छोटू ने एंजल अंकल को याद किया।

“एंजल अंकल.....” उसके आखिरी शब्द थे।



रूठे लोगों को मना लेंगे

ऑडी कार का दरवाजा खुला। छोटू कार से बाहर आया। सामने मिठाई की दुकान पर मिठाइयाँ सजी हुई थी। दो बूढ़ी आंखों ने उसे देखा और उसकी ओर बढ़ने लगी।

“सलाम आसिफ चाचा” छोटू पैर छूने के लिए नीचे झुका।

“आज फुर्सत मिली है साहब जादे को हमारे हालचाल पूछने की” चाचा ने छोटू के कंधे पर हाथ रखा और उसे दुकान में ले गए।

“चाचा बस आज रुक जाओ..... कुछ अपने रूठ गए हैं उन्हें भी मनाने जाना है”

चाचा ने कंधे से हाथ हटा लिया। शायद वो जानते थे उस दिन क्या हुआ था।

“परी को वापिस ले आना” उन्हें समझने में देरी नहीं लगी।



“गांधी चौक” छोटू ने फ़ोन रखा। कार घुमाई और गांधी चौक की तरफ मोड़ ली। उसके मन में क्या चल रहा था किसी को कुछ नहीं पता था बस कॉल पर चंदू चाचा के अंतिम शब्द “उसे वापिस ले आना” उसके कानों में गूँज रहे थे।

बीस मिनट बाद कार गांधी चौक पर रुकी। छोटू कार से उतरा।

“अरे भैया ये श्याम कंप्यूटर्स कहाँ है” छोटू ने एक दुकानदार से पूछा।

“भैया इस गली से जाकर राइट ले लीजिए सामने श्याम कंप्यूटर्स का बोर्ड दिख जाएगा”

छोटू ने गाड़ी गली में ली। “श्याम कंप्यूटर्स” नाम तो बड़ा सा लग रहा था मगर उसमें एक कंप्यूटर ही दिखाई दे रहा था।

“अरे भैया श्याम भैया कब तक आएंगे” छोटू ने उस कंप्यूटर चला रहे साठ साल के बुजुर्ग से पूछा।

उसने कोई जवाब नहीं दिया। छोटू के दुबारा पूछने पर उसका जवाब आया। “बाहर नंबर लटका है कॉल कर लो”

छोटू ने यहाँ वहाँ देखा। “आपको पापा चाहिए” छोटू ने पीछे मुड़कर देखा तो एक तीन साल की बच्ची स्कूल ड्रेस पहने हाथ में पानी की बॉटल लिए चहरे पर बच्चों वाली स्माइल पहनें खड़ी थी।

“श्याम आपके पापा हैं बेटा” छोटू नीचे झुक गया।

“हाँ” उस छोटू सी बच्ची ने कहा।

“आपका नाम क्या है”

“अंशी” वो मुस्कुराई। “आपको प्यास लगी होगी दूर से आये हो न... लो पानी पी लो” उसने अपनी छोटी से बॉटल छोटू को दे दी।

छोटू ने दो घूंट से गला गीला किया। “अच्छा पापा कहाँ है आपके अंशी” छोटू ने उसे गोद में ले लिया।

“पहले आइसक्रीम” उस बच्ची की आँखे खरगोश की तरह छोटी सी थीं।

“टॉफी या आइसक्रीम खाने चलें” छोटू भी बच्चों जैसी हरकते करने लगा।

“आपका नाम”

“छोटू चाचू”

“मोटू चाचू” वो हंसने लगी। वो बच्ची छोटू को देखे ही जा रही रही।

“चाचू.....पापा” उसने आइसक्रीम खाते हुए कहा।

सामने से करीब पैंतीस साल का आदमी उनकी और बढ़ रहा था।” आप कौन हैं जनाब और ये मेरी बेटी है”

“आपकी बेटी होगी मगर मैं इसका चाचू हूँ” छोटू ने मुस्कराते हुए कहा।

“मैं समझा नहीं” श्याम ने शक भरी निगाह से देखा।

“समझाता हूँ” छोटू ने अंशी को गोद से उतारा। “बेटा अभी तुम खेलो चाचू आपके पापा से बातें कर लें”

अंशी खेलने चली गई।

“I am sahil soni CEO OF UDAAN COMPANY”

“अच्छा वही जिसके चर्चों से अखबार मैगजीन भरे पड़े हैं”

“हां सही सुना”

“मुझसे क्या काम”

“मेरे साथ काम करोगे”

“मैंने वो सब काम छोड़ दिया है”

“ये आर्डर नहीं, ऑफर है” छोटू बोला। “सोचकर बताना तुम कुछ जिम्मेदारी और भरोसे तुम पर टिके हैं”

“मैं न कहूँ तो”

“एंजल अंकल ने मरते वक्त मुझसे कहा था कि मैं उसके पोते को वापिस ले आऊँ। उनकी वजह से तुम्हें दर-दर की ठोकें खानी पड़ी। जिसने सिमन्स कंपनी के लिए अपनी चौरसिया कंपनी को बेच दिया। मैं उनका बेटा नहीं हूँ मगर उन्होंने मुझे जीना सिखाया था” छोटू ने एक बार में सब कह डाला।

सोमिल जैन “सोमू” | 143

श्याम सोच में पड़ गया। “दादा जी कहाँ है”
 “तीन साल पहले तुम्हें याद करते-करते दुनिया छोड़ गये”
 “मेरी हालत देख कर मुझ पर तरस खा रहे हो”
 “नहीं कुछ अपने रूठ गये थे उन्हें मना रहा हूँ किसी को
 वादा किया था उसी वादे को निभा रहा हूँ”
 “मैं अब वापिस नहीं आ पाऊँगा”
 “अच्छे से सोचकर बताना”
 “पापा स्कूल बस का टाइम हो गया है” छोटू ने अंशी को
 बाहों में उठा लिया।
 “सोचना...आप अपने लिए नहीं तो इस मासूम के लिए”
 श्याम ने अंशी को देखा। श्याम असमंजस में पड़ गया।
 अपना ईगो देखे या फिर अंशी का भविष्य उसे कुछ समझ नहीं
 आ रहा था।
 “आज चाचू की कार से स्कूल चलोगी” अंशी खुश हो
 गई। उसने पापा की तरफ देखा। श्याम का जबाब हाँ था।
 अंशी बहुत खुश हो गई। “थैंक यू चाचू” वो छोटू के गले
 लग गई।
 “चाचू के घर चलोगी” छोटू ने उससे पूछा।
 अंशी ने फिर पापा की तरफ देखा। “हाँ.... पहले स्कूल
 उसके बाद” वो मुस्कुराई क्योंकि आज पहली बार कार में बैठ
 रही थी।
 “चाचू जल्दी चलो.... टीचर डाँटेगी”
 “डाँटेगी तो डाँटने दो हम टीचर बदल लेंगे” छोटू ने कार
 का गेट खोला।

अंशी कार में बैठ गई। छोटू ने गाड़ी दौड़ा ली। श्याम
चुपचाप वहीं खड़ा था।



चलो आज चलते हैं हम

अंशी को स्कूल छोड़ छोटू ने गाड़ी घुमाई। गाड़ी की स्पीड बहुत तेज थी। बड़ी बड़ी इमारतों को पीछे छोड़, कार बेकाबू सी हो रही थी। छोटू का ध्यान कहीं और था। उसने फिर गेयर बदला।

“मेरी गलती की सजा वो क्यों भुगते काश उस दिन मेरा गुस्सा काबू में रहा होता, काश उस दिन मैं समझ पाता कि वो सही है मैं गलत हूँ” सोचते सोचते वो दूसरे हो ख्यालों में खो गया। फ्लैश बेक का सीन चलने लगा।

“ऐंजल अंकल भी मुझे छोड़ कर चले गए... और तुम मेरी दादा को भी नहीं बचा पायीं” हाथ में लिए फ़ाइल मैंने फर्श पर दे मारी।

“मेरी बात तो सुनो छोटू... ऐसा कुछ नहीं हुआ मैं तो.....”

“क्या सुनूँ” मेरा गुस्सा बढ़ता जा रहा था। “मैं कुछ कर बैटूँ इससे पहले तुम यहाँ से चली जाओ.....गेट आउट इन माय लाइफ” मैं चिल्लाया था।

वो कुछ नहीं बोली। शायद वो मुझे अब समझाना ही नहीं चाहती थी क्योंकि वो समझ गई थी कि मैं कुछ और समझ गया हूँ। उस दिन मुझे ये बात समझ नहीं आयी। मगर आज समझ में आती है कि या तो किसी के बारे में कुछ मत समझो और अगर समझो तो सही समझो गलत मत समझो क्योंकि ये गलत फहमियाँ दूरियाँ बढ़ा देती हैं।

प्लैश बेक खत्म हुआ। छोटू की गाड़ी स्लो हो गई। छोटू ने गाड़ी मोड़ी और एक कॉलोनी में ले ली। जानी पहचानी कॉलोनी और जहां वो कार रुकी वो घर भी जाना पहचाना था।

छोटू ने परी को फिर कॉल किया। मगर “आउट ऑफ कवरेज” छोटू ने मोबाइल कार के अंदर डाल दिया।

छोटू परी के घर की तरफ बढ़ा। पास पहुंचकर वेल बजाई।

“कौन हो तुम, क्या चाहिए.....” एक मोटी लेडी ने पूछा।

“आंटी परी से मिलना है” छोटू ने शांति से कहा।

“लो एक और आ गए परी को ढूढ़ते हुए” कहकर आंटी अंदर चली गई।

“छोटू तुम ही हो” उनके मिस्टर सामने आए।

“हाँ”

“उसने बताया था”

“किसने”

“परी ने”

“कहाँ है वो अंकल प्लीज एक बार उससे मिला दो.....
प्लीज.... उसे सॉरी बोलकर चला जाऊंगा”

“बहुत देर कर दी तुमने आने में” अंकल बोले।

“क्यों”

“वो तो चले गए..... यहाँ से बहुत दूर.....”

“कहाँ”

“बैंकोक” अंकल बोले। उसे पहले तो ऐसे लगा जैसे वो झूठ बोल रहे हो उनकी नज़रे झुक गई।

“जाओ बैंकोक....ढूढ़ लो उसे.....” अंदर से आंटी की आवाज आई।

“ढूढ़ लूंगा” कहकर छोटू वहाँ से जाने लगा।

“आज की फ्लाइट थी शायद अभी उसने उड़ान नहीं भरी होगी हो सके तो रोक लो उसे” कहकर अंकल ने दरवाजे बन्द कर लिए। उसने कार से मोबाइल निकाला।

छोटू ने हॉस्पिटल कॉल किया मगर कुछ पता नहीं चला। उसने चन्दू अंकल को कॉल किया। “इस टाइम पर बैंकोक जाने के लिए कोई भी फ्लाइट नहीं है” चंदू अंकल ने कहा।..... “मगर शाम पाँच बजे थी.....” चन्दू अंकल ने फिर से चेक करके बताया।

“ओके” छोटू ने फोन काट दिया। फेसबुक के इनबॉक्स में अवनी का मैसेज पड़ा था। जिसे भेजने के बाद अवनी ने अपनी आईडी डीएक्टिवेट कर दी थी।

Hi sahil

सॉरी.....हर उस गलती के लिए जो मैंने की। मैंने तुम्हारा बहुत दिल दुखाया है। तुम्हारा इंतजार बहुत किया मगर तुम नहीं आये। इसलिए तुमसे दूर जा रही हूँ। तेरे मेरे साथ का सफर यही तक था। मैंने बहुत कोशिश की तुम्हारी उड़ान में साथ रहूँ मगर किस्मत कुछ और चाहती थी। तुम्हारी मजबूरी तुम्हारी खामोशी में मुझे प्यार नहीं दिखा इसलिए तुमसे दूर जा रही हूँ। तुम्हारी अपनी मंजिल थी तुम्हारा अपना रास्ता था। तुम्हारा साथ छोड़ रही हूँ क्योंकि तुम अपनी ऊँची उड़ान के साथ जीना चाहते थे और मैं तुम्हारे साथ जीना चाहती थी। तुम्हारी मंजिल ही मेरी मंजिल थी तुम्हारी उड़ान ही मेरी उड़ान थी। एक लगाव सा हो गया था तुमसे, तुम्हें भुला भी नहीं पा रही थी और तुमसे दूर भी नहीं जा पा रही थी। मैं तुम्हारा इंतजार करती रही, उन तमाम राहों पर जो कभी तुम्हारी रहगुजर रहीं हैं। अब भी तुम्हारा इंतजार रहेगा बस देर मत करना।

तुम्हें तुम्हारी उड़ान मुबारक!

छोटू ने कार के गेट खोले। गाड़ी घुमाई और निकल पड़ा
एक ऐसी ड्राइव पर जिसमें उसका हमसफर उसके साथ न था...

“उसने मेरा तीन साल इंतज़ार किया और मैंने” वो खुद को
अकेला बेबस और लाचार महसूस कर रहा था। आंखों में भरे
आँसू और जुबान पर एक ही नाम.... “बैकॉक.....”



सस्पेंस

7 फ़रवरी 2020

“बैकॉक.....” अवनी ने डायरी के पन्ने पलटे मगर आगे कुछ नहीं लिखा था।

“यहां कमी रह जाती है इन लेखकों में” अवनी ने डायरी बन्द की। “सस्पेंस तो इनका जिगरी यार लगता है” अवनी कॉफ़ी शॉप में बैठी रोहित का इंतजार कर रही थी।

“हाय” मैंने आकर कहा।

“हाय” उसने कहा।

“अच्छी स्टोरी लिखते हो तुम”

“शुक्रिया”

“कहाँ से लाते हो ये स्टोरीज”

“आस-पास से”

“मतलब”

“एक स्टोरी हर किसी के पास होती है जो कह देते हैं वो हिस्ट्री बन जाती है और जो नहीं कह पाते उनकी यहीं हिस्ट्री होती है” मैंने राइटर पंच मारा।

“इस स्टोरी का एंड क्या है”

“कुछ कहानियों का अधूरा होना ही उनका एंड होता है” मैं डायलोग पे डायलोग चेंप रहा था। “अच्छा लिसिन.....मुझे अभी जाना होगा”

“मुझे भी”

“आज शाम की फ्लाइट से इंडिया वापिस जा रहा हूँ सी
ऑफ कहने आओगी एयरपोर्ट पर”

“मुश्किल है”

“कोई बात नहीं.....किस्मत में होगा तो हम फिर मिलेंगे”
मैं कॉफ़ी शॉप से जाने लगा।

“किस्मत तो हम खुद लिखते हैं न”

“बचपन से सुने थे की हम अपनी किस्मत खुद लिखते हैं
फिर पिताश्री ने हमें समझाते हुए कहा था कि सबकी किस्मत
ऊपरवाला लिखता है मगर तजुर्बे से हमें पता चला कि ये
किस्मत तो पहले से लिखी है हम तो बस उसे फॉलो करते हैं”
मैंने लम्बा चौड़ा प्रवचन दिया।

“मैं नहीं मानती”

“आजमा लेना” मैंने कहा। “हम एक दूसरे से मिलना भी
नहीं चाहते थे मगर मिल गये न”

“ये सब अचानक हुआ है”

“तो अचानक होने वाली चीजें निश्चित नहीं होती क्या”

उसने कुछ नहीं कहा। मैंने जाना उचित समझा।



7 फ़रवरी 2020

“Happy journey bro”

“सुनो बे....बिहारी में समझा रहे हैं ब्रो तो बोलियों न भाई
में ज्यादा अपनापन लगता है” मैंने उसे कोहनी मारी।

“Ok bro”

“बुजरो के.....सुधरोगे नहीं”

सोमिल जैन “सोमू” | 151

“सुधरने का ठेका लिए हैं का हम” उसने भी ठीक-ठाक बिहारी बजाई।

मैंने उसके साथ याद की प्यारी सी झप्पी ली। मैं थोड़ा टेंसन में था। मेरी नज़र बार-बार किसी को देखने की कोशिश कर रही थी। फ्लाइट का अनाउंसमेंट हो चुका था।

“क्या हुआ अब तुझे.....” वीर ने पूछा।

“मेरी डायरी अवनी के पास रह गई है” मेरा जबाब स्पष्ट था। अवनी मुझे दिखी। वो मेरे ही पास अपना लगेज लिए आ रही थी। उसके साथ वही आंटी थी। “कमलादास झुनझुनवाला”

वीर ने मुझे बाय कहा। मैं समझ गया ये उसी चाल थी।

“तुम्हें विश्वास नहीं हो रहा होगा” उसने हँसकर कहा।

“असम्भव कुछ भी नहीं है” मैंने कहा।

“तुम तो बिजी थीं आज” इसे इत्तेफाक कहो या पहले से प्लान किया हुआ की मेरी और अवनी की शीट अगल बगल में थीं।

“हाँ”

“तुमने बताया नहीं मेरी डायरी तुम्हारे पास कैसे आई”

“सस्पेंस पसंद है न तुम्हें”

“तुम मेरे साथ हो मेरे बगल में” मुझे लग रहा था जैसे मैं कोई सपना देख रहा हूँ क्योंकि कभी अपने देश का नाम नहीं लेने वाली छोरी आज मेरी वजह से अपने घर वापिस जा रही है...शायद मेरी वजह से” मैंने मन में सोचा।

“कुछ कहा तुमने” उसने अपनी जुल्फें सँवारी।

“नहीं” मैं कन्फ्यूज्ड था क्या बोलूँ।

“मुझे पता है”

“क्या”

“तुम क्या सोच रहे हो”

“क्या”

“यही कि मैं तुम्हारे साथ हूँ”

“ये मन भी पड़ लेती है क्या” मैंने फिर मन मे सोचा। “ऐसा कुछ नहीं है” मैं शरमाया।

“मेरी डायरी मुझे वापिस दे दो” मैंने हाथ आगे बढ़ाया।

“दे दूँगी....” उसने नज़रे फेर ली। “मगर तब जब तुम मुझे इसका एंड बताओगे” छोटू और परी मिले क्या?

“जबरदस्ती है क्या” मैंने उसे घूरा।

“परी और छोटू मिले या नहीं” उसने फिर वही सवाल किया। “बैंकॉक गया था छोटू.... क्या उसे परी मिली?”

“मुझे नहीं पता” मैंने मुँह फेर लिया।

“मेरी बात का जबाब दो” उसने आवाज ऊँची की।

“ये केबीसी चल रहा है क्या?” मैंने उसे गुस्से से देखा।

“मत दो फिर.... भूल जाओ डायरी” घनघोर बेईज्जती हो गई यार ।

“अवनी” मैं भड़का। आस पास बैठे लोगों की नज़र मुझ पर थी। एक ने तो चुप रहने का इशारा भी किया।

“पति पत्नी के झगड़े सुलझायें मिनटों में जगत बाबा” पीछे से आवाज आई।

“अबे चुप खुद के घर मे आग लगी है दूसरों की बुझा रहा है” गुस्सा कहीं तो निकलना था निकाल दिया। उसकी बात ऊपर से बुरी लगी मगर अंदर से तो लड्डू फूटने लगे। अच्छी इसलिए लगी क्योंकि न मुझे “जगत बाबा” समझ आया और न ही “झगड़ा” मुझे बस “पति-पत्नी” अच्छा लगा।

अवनी अपनी हँसी रोकने का पूरा प्रयास कर रही थी। “तो तुम नहीं दोगी डायरी” मैंने फिर कहा। अवनी चुप थी वो कुछ नहीं बोली।

“कभी-कभी सब कहानियां किताबों में नहीं मिलती उनको असलियत में भी खोजना चाहिए उनका रियलिटी से भी बड़ा कनेक्शन होता है थोड़ा सब्र करो” मैंने उसके कान में कहा। हम दोनों के बीच सन्नाटा छा गया। उसने इंग्लिश नॉवेल निकाला और पढ़ने लगी। हवाई जहाज ने उड़ान भरी और आसमान में कहीं खो गई।



मेरा देश

फ्लाइट लैंड हो चुकी थी। हम दोनों एयरपोर्ट से बाहर आये।

“कौन आया है तुम्हें लेने”

“माय डेड” उसने साथ कहा।

“और तुम्हें”

“साहिल सोनी” मैंने इशारा करके बताया।

“उसके बगल में परी खड़ी है”

“समझदार हो” मैंने कहा।

“आखिरकार मिल गए वो दोनों” उसके चेहरे पर मुस्कराहट थी। “मतलब छोटू बैंकॉक गया था हो गई कहानी की हैप्पी एंडिंग”

मैं मुस्कुराया। हम दोनों छोटू के करीब आ गए।

“ये कौन है बे असाटी” छोटू ने मुझसे पूछा।

“अवनी..... पब्लिशर की बेटी”

“अच्छा.... मैंने बहुत कुछ सोच लिया था”

“इतना मत सोचा कर”

“तुम्हारे पापा नहीं आये” मैंने अवनी से पूछा।

“पता नहीं कॉल भी नहीं लगा रहा उनका” अवनी ने फिर मोबाइल देखा।

“अरे तो हमारे साथ चलो पापा को वहीं बुला लेना” छोटू बोला।

“मगर बुआ” झुनझुनवाला जी इनकी बुआ हमको अभी मालूम चला।

“अगर मगर कुछ नहीं” छोटू ने सख्ती से कहा। “बुआ क्या एरोप्लेन हैं जो हमारी गाड़ी में नहीं आएगी”

हमने सारा सामान लिया और गाड़ी में बैठ गए।



“हेलो....कौन” मैंने नींद में कहा।

“मुझे एक बात पूछनी थी” ये अवनी की आवाज थी।

“रात के दो बज रहे हैं” मैंने घड़ी देखी। “ये कौनसा समय है सवाल पूछने का”

“सारी मगर तुम्हीं ने तो कहा था अगर दिल मे कोई बात हो तो कह देना चाहिए समय नहीं देखते हैं कह देते हैं”

“मैंने कब कहा” मैं उसे कहना चाहता था मगर नहीं कहा। “हाँ....पूँछों” मुझे भी नहीं पता ये बात मैंने कब कहीं थी मगर अच्छी लगी।

“इस कहानी का हीरो कौन है” उसने पूछा।

मैं कुछ नहीं बोला क्योंकि मेरे लिए भी ये सवाल अनजाना था। “अपनी-अपनी लाइफ में हर कोई हीरो होता है सब अपनी लाइफ में हीरो हैं अब इसका कौन हीरो है ये सबके पर्सनल जबाब होंगे। कुछ कहानियाँ, कुछ लोग पर्दे पर नहीं आ पाते मगर वो रियल हीरो होते हैं” मैंने नींद में ही उसे ज्ञान दिया।

“मैं भी हूँ”

“हाँ”

“मगर मैं तो हीरोइन हूँ”

“एक काम करो कॉल डिस कनेक्ट करो और सो जाओ”
मैंने फ़ोन काट दिया।

“बाय” उसने चिल्लाकर कर कहा। मेरे पास तुरंत उसका
व्हाट्सएप मेसेज आया।

“कल मिलते हैं”

“मैं बिजी हूँ”

“फिर मैं क्यों इंडिया आई हूँ” उसने रोता हुआ इमोजी
बनाकर मेसेज भेजा।

“कल सुबह..... अपना कैफे में मिलते हैं” “मैं पिघल
गया” मुझे इस वक्त जाकिर खान नहीं शाहरुख खान याद आ
रहा था।

“बाय” चंद हंसती हुयी इमोजी के साथ।



फिर उड़ान

8 फ़रवरी, 2020

“अपना कैफ़े”। मेरे दोस्त का कैफ़े। किसी रेस में दोड़ना तो हमे पसंद नहीं था इसलिए कैफ़े के सेकेंड फ़्लोर पर हमने अपना फ़ुल टाइम आसरा जमाया। मेरा सपना “माई लाईब्रेरी”

लोग मेरे आसरे में आने लगे। कुछ लोग किताबें सिर्फ पढ़ते। कुछ किताबें पढ़कर किताबें लिखने का अदना साहस करते। नये से पुराने लेखको की किताबों का एक लम्बा कलेक्शन मैंने जोड़ लिया।

मैंने अपनी लाईब्रेरी के बाहर संतोष आनंद का लिखा फेमस सॉंग की कुछ लाइन्स लिखवाई थी।

“एक प्यार का नगमा है, मौजों की रवानी है
जिन्दगी और कुछ भी नहीं, तेरी मेरी कहानी है”



“छोटू और परी कैसे मिले” कैफ़े में आते ही अवनी का पहला सवाल मेरे सामने आया। कैफ़े में रौशनी बिखरी पड़ी थी। वहाँ बैठे लोग अपनों को अपनी आप बीती सुना रहे थे।

“इसके लिए मिलना था मुझसे”

“नहीं”

“तो”

“मिले हो तो पूछ लिया”

“मेरी डायरी कहां है”

“मेरे पापा के पास”

“व्हाट.....”

“मिल जाएगी.....ठण्ड रखो”

मैं चुप रहा। मैंने नज़रें फेर ली

“इस स्टोरी के तुम ही हीरो हो”

“नहीं.....मैं साइड एक्टर हूँ जो हीरो नहीं होता”

“साइड एक्टर के बिना हीरो भी कुछ नहीं होता” उसने तपाक से कहा।

“ये सस्पेंस कब खत्म होगा”

“भरेंगे न “फिर उड़ान” मैंने एक हल्की सी हंसी के साथ कहा।

हम दोनों मेरी लाइब्रेरी की किताबें देख रहे थे। वो बार-बार मुझे देखकर मुस्कुरा रही थी।

“हम दोनों का इंटरेस्ट सेम है” उसने कहा।

“असम्भव..... हो ही नहीं सकता”

“क्यों” उसने मुझे घूरकर देखा।

“तुम इंग्लिश मीडियम टाइप हो और मैं ठहरा हिन्दीभक्त”

“तो क्या हुआ” उसने बड़े आत्मविश्वास से कहा।

“आजकल हिंग्लिश ज्यादा चल रही है”

ये उसका आखिरी जबाब था। वो चुप रही। बिना कहे हमारी कुछ बातें कुछ ही लोग समझ पाते हैं और इन कुछ लोगों में कुछ ही लोग आते हैं। हम दोनों के बीच एक गहरा सन्नाटा बिछ गया। लोग कैफे में आ रहे थे जा रहे थे। हम दोनों कहीं और

खोये थे। शायद किसी दूसरी कहानी में..... जिसमे
सिर्फ हम दोनों हों।

